MODERN INDIAN HISTORY

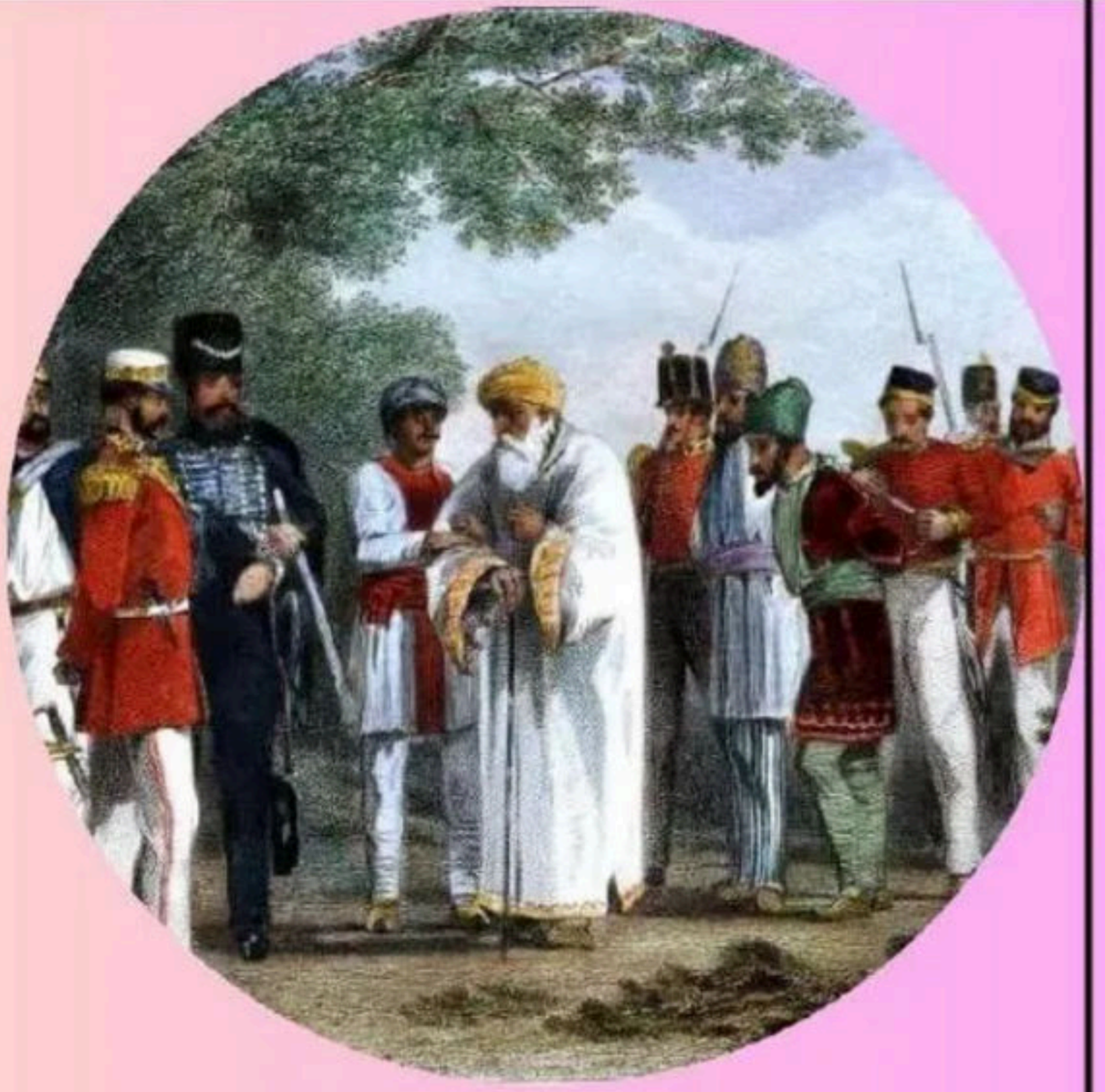
1857 REVOLUTION

PART I

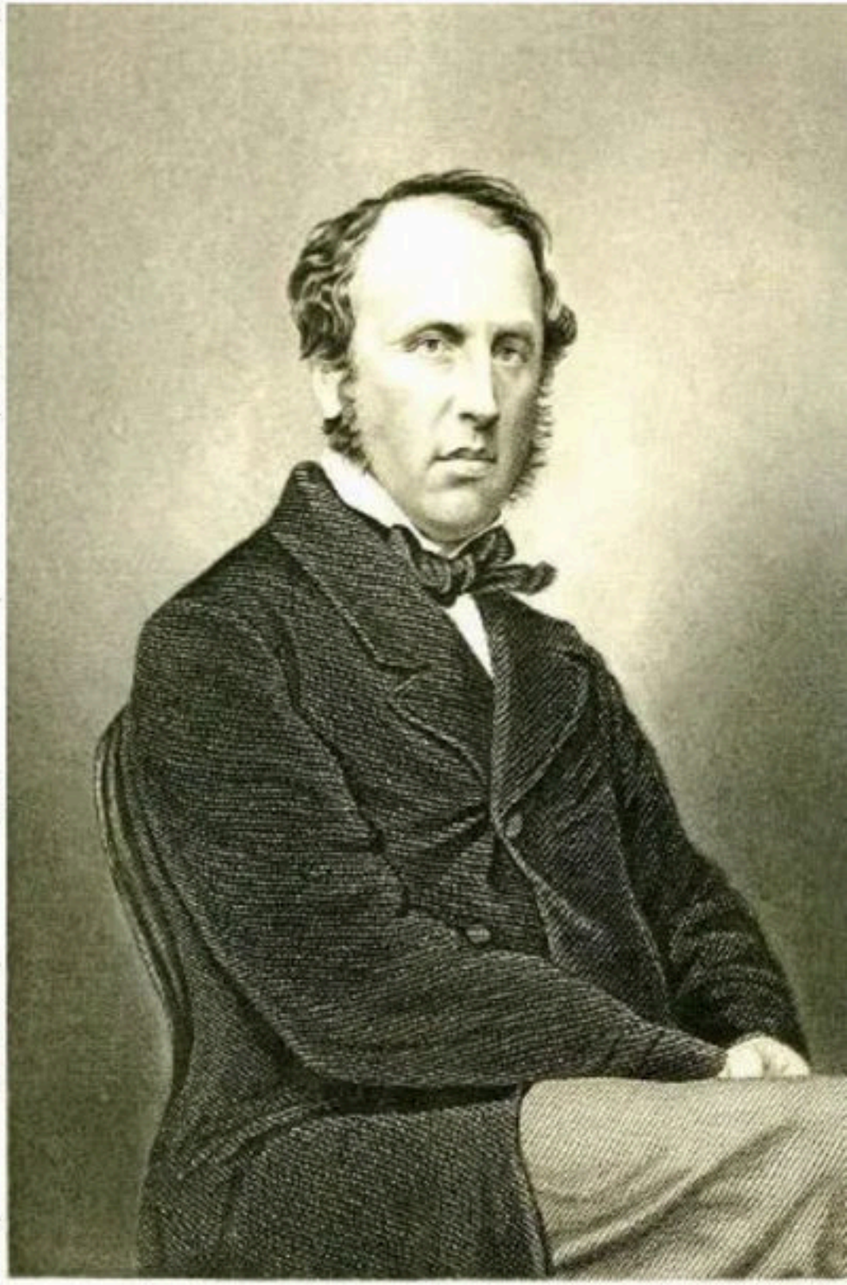


Dr. Amit Kumar Singh

MA,M.PHIL,UGC-NET,PHD (JNU, NEW DELHI)



- 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की **सर्वाधिक महत्वपूर्ण** घटनाओं में से एक है।
- यह गौरवपूर्ण घटना अचानक नहीं घटी बल्कि **असंतोष** का बीज तो ब्रिटिश शासन के 100 वर्ष पूरे होने से पूर्व ब्रिटिश नीतियों के तहत रोपा जा चुका था जिसका अंकुरण सर्वप्रथम **1764** में बक्सर के युद्ध में दिखा और फिर **1806** में **वेल्लौर म**ठ में भारतीय सैनिकों द्वारा विद्रोह किया गया।
- 1857 तक आते-आते न जाने कितने छोटे-छोटे विद्रोहों का सामना ब्रिटिश कम्पनी को करना पड़ा।
- परंतु सब्र का बांध तो 1857 के देशव्यापी विद्रोह में ही फूटा जिसने अंग्रेजी सेना व हुक्मरानों को **झकझोर** कर रख दिया।
- जिस समय यह गौरवमयी गाथा रची गयी उस समय इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री **पामर्टन** था तथा भारत का गर्वनर जनरल लार्ड **कैनिंग**, जिसने भारत आने से पूर्व ही इस असंतोष की आशंका व्यक्त की थी।
- इस विद्रोह का आरंभ यद्यपि सैनिक विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुआ किन्तु शीघ्र ही इसने समूचे भारत की जनता, कृषकों, मजदूरों, जनजातियों, शिल्पकारों व राजवाड़ों को भी अपने में **समाहित** कर

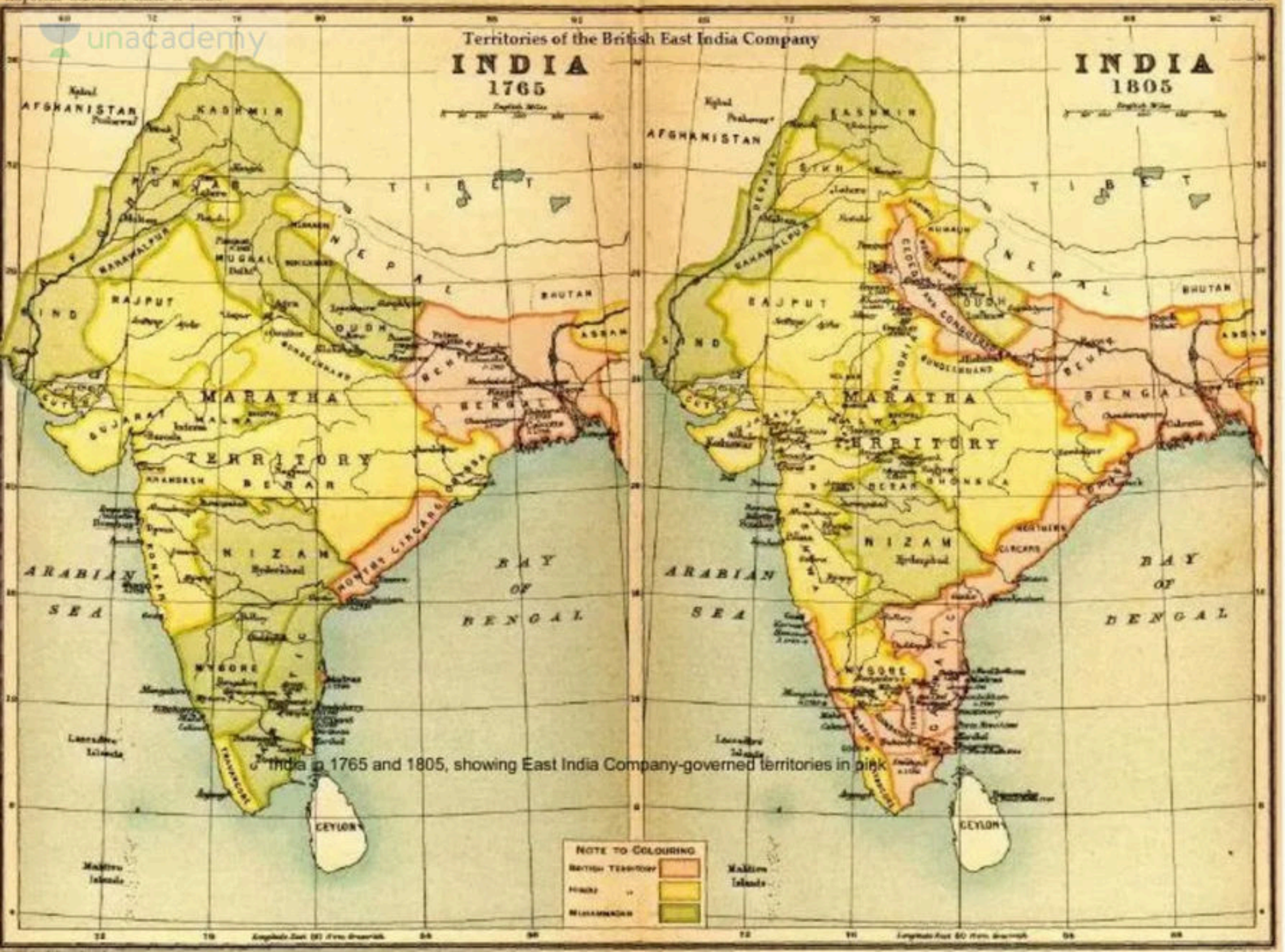


1857 के विद्रोह पर प्रमुख पुस्तकें

लेखक	चर्चित पुस्तकें
आर सी मजूमदार	द सिपोय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट ऑफ 1857
एस एन् सेन	1857 (अठारह सौ सत्तावन)
एस बी चौधरी	थ्योरीज आफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857 तथा सिविल रिवेलियन इन द इंडियन प्यूटिनीज 1857-59
एरिक स्टॉक्स	पीजेन्ट एण्ड द राज
पीसी जोशी	रिबेलियन 1857
विडी सावरकर	फर्स्ट यार ऑफ इण्डियन इंडिपेण्डेंस
टी आर होम्स	हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी
जी बी मालसेन	इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857
अशोक मेहता	द ग्रेट रिबेलियन
जे डब्ल्यू के	ए हिस्ट्री ऑफ द सिपाय वार इन इंडिया
ए पी चट्टोपाध्याय	द सिपॉय म्यूटिनी ऑफ 1857; ए सोशल स्टडी एण्ड एनेलिसिस
के के सेनगुप्त	रीसेन्ट राइटिंग्स ऑन द रिवोल्ट ऑफ 1857
सैय्यद अहमद खां	असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द (भारतीय भाषा में विद्रोह की प्रथम पुस्तक) व द कॉजेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट

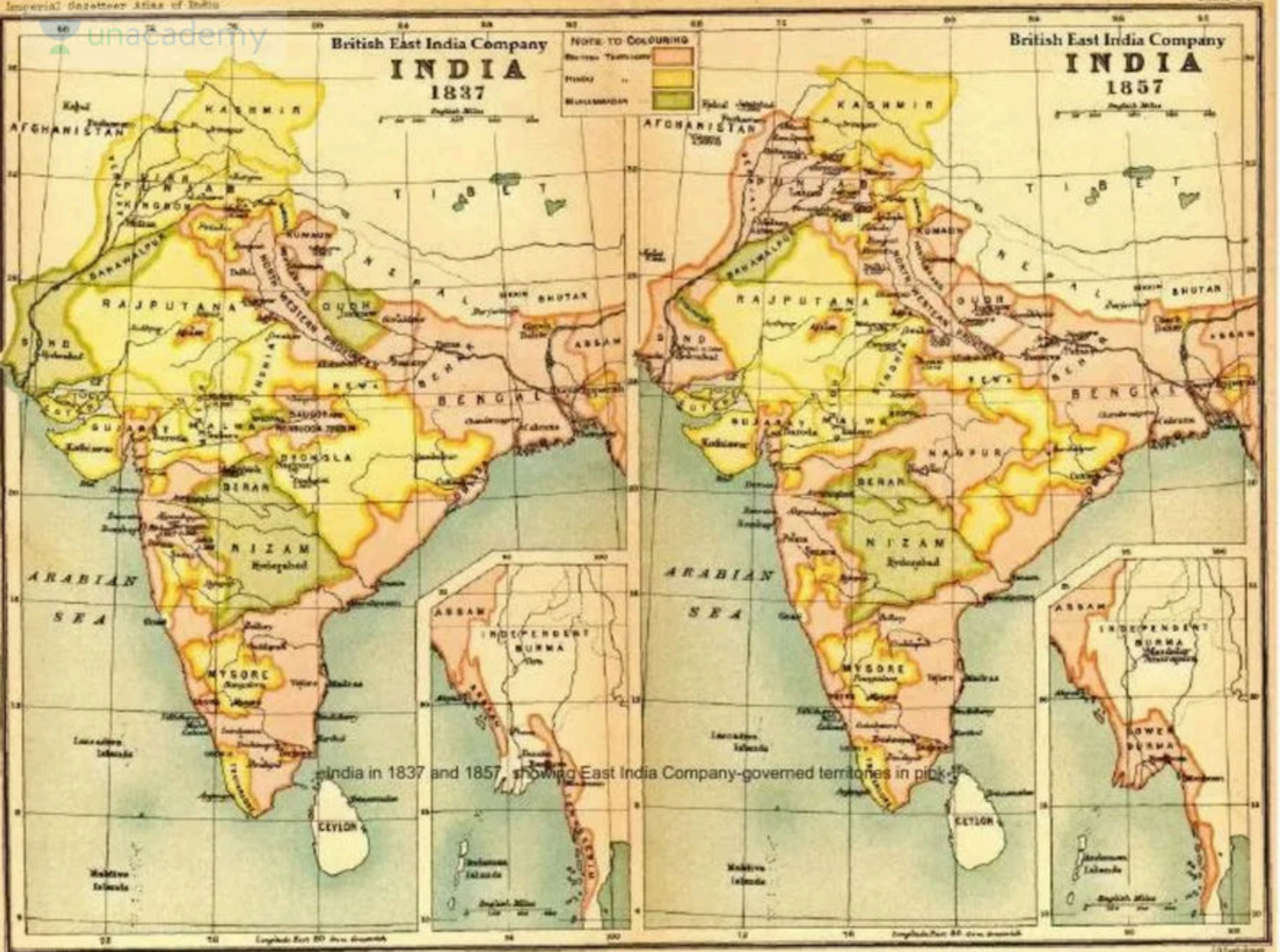
unacademy

Territories of the British East India Company



India in 1765 and 1805, showing East India Company-governed territories in pink

unacademy



India in 1837 and 1857, showing East India Company-governed territories in pink.

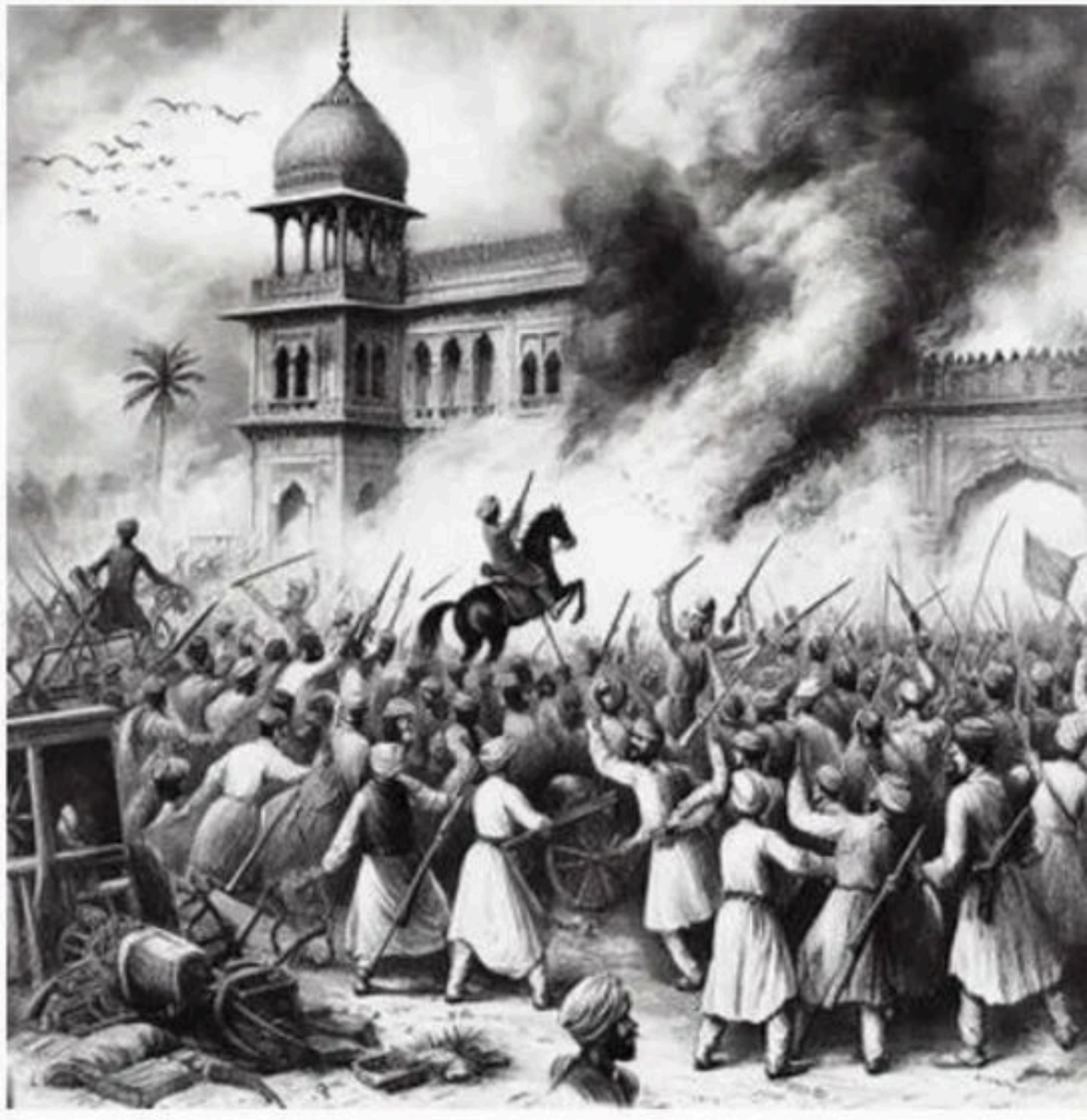
1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था?

A. लॉर्ड डलहौजी

B. लॉर्ड मिंटो

C. लॉर्ड कैनिंग

D. लॉर्ड बैंटिक



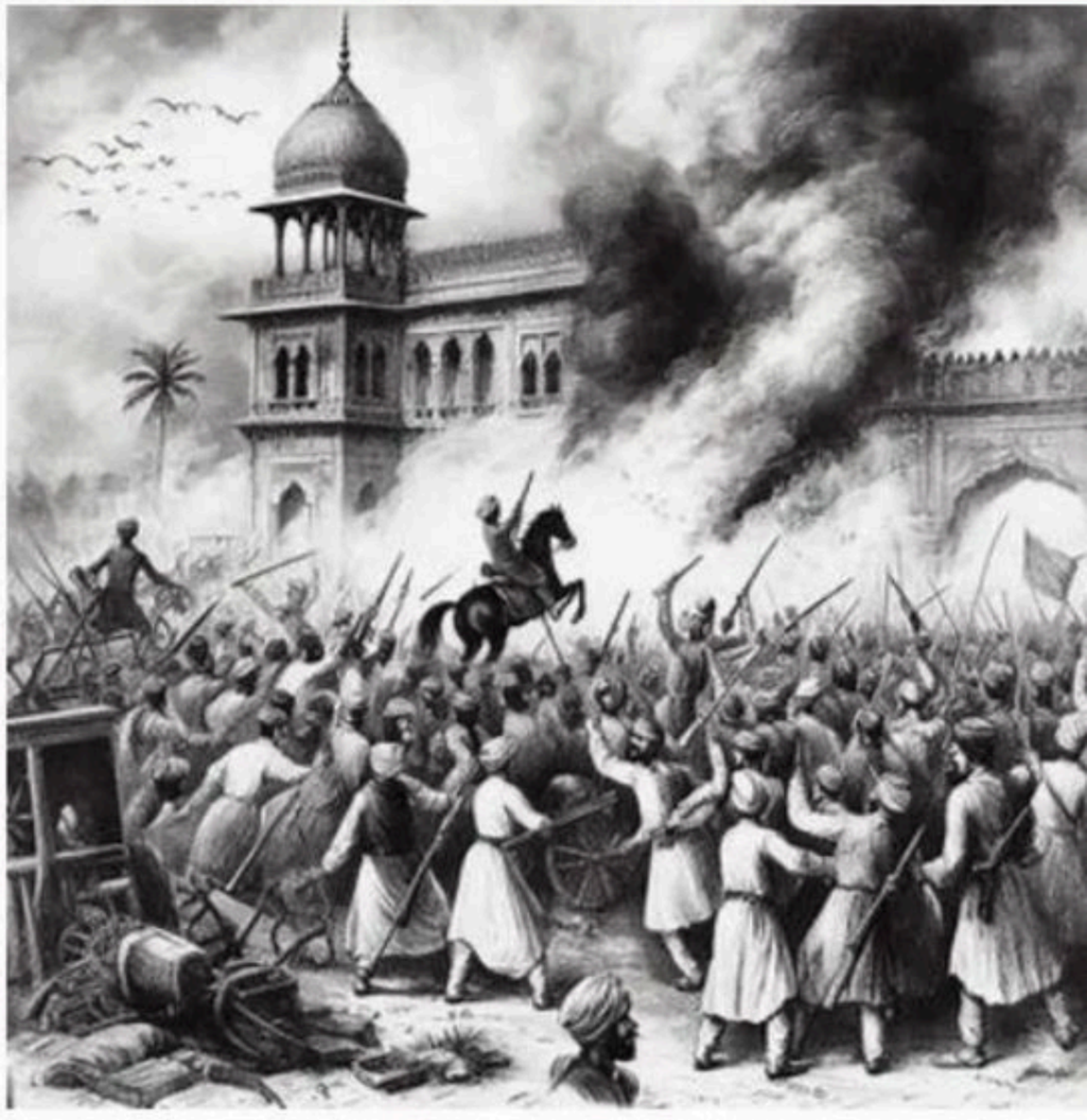
1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था?

A. लॉर्ड डलहौजी

B. लॉर्ड मिंटो

C. लॉर्ड कैनिंग

D. लॉर्ड बैंटिक



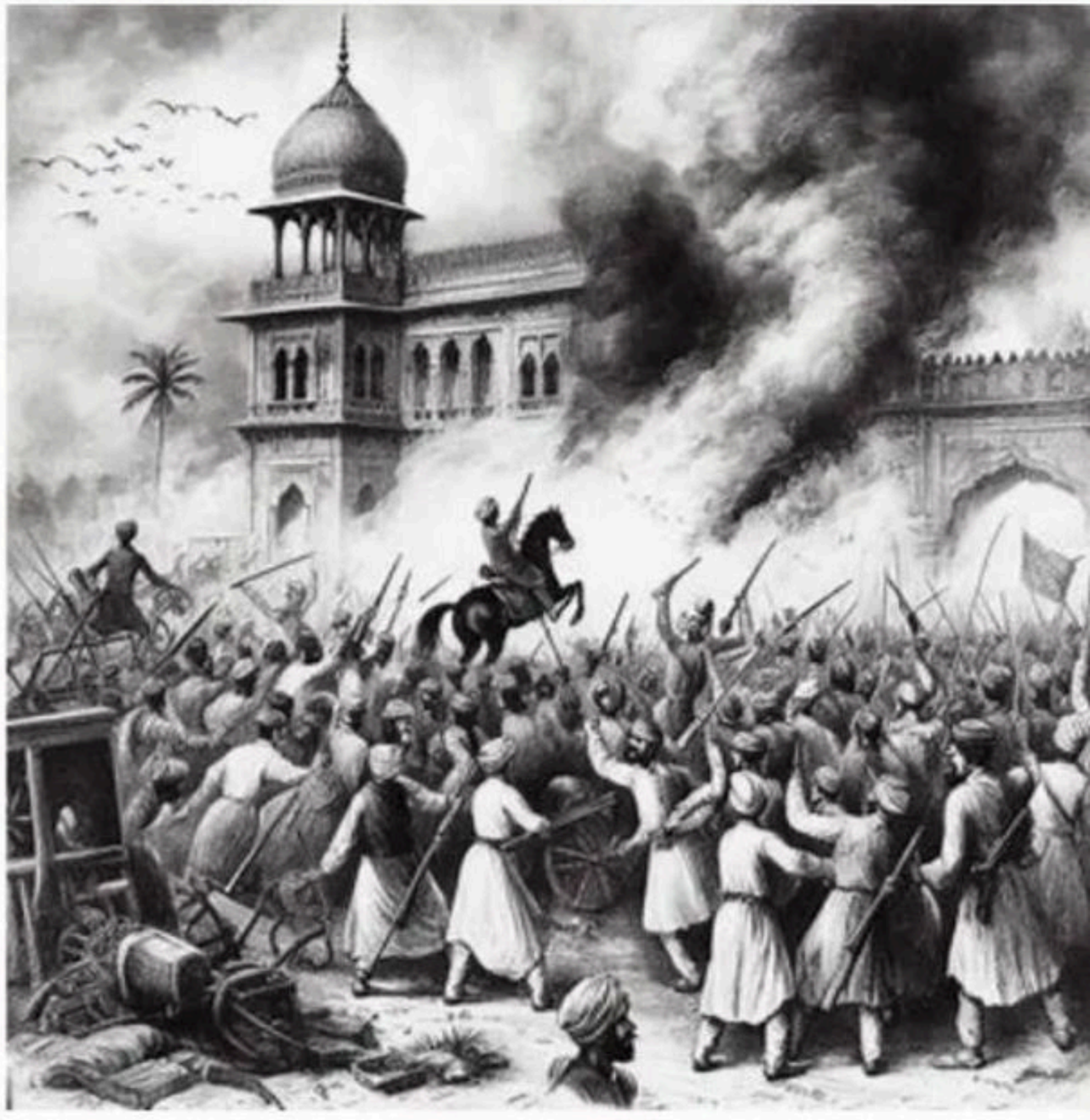
1857 के स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक था-

A. कमल और रोटी

B. बाज

C. रुमाल

D. दो तलवारें



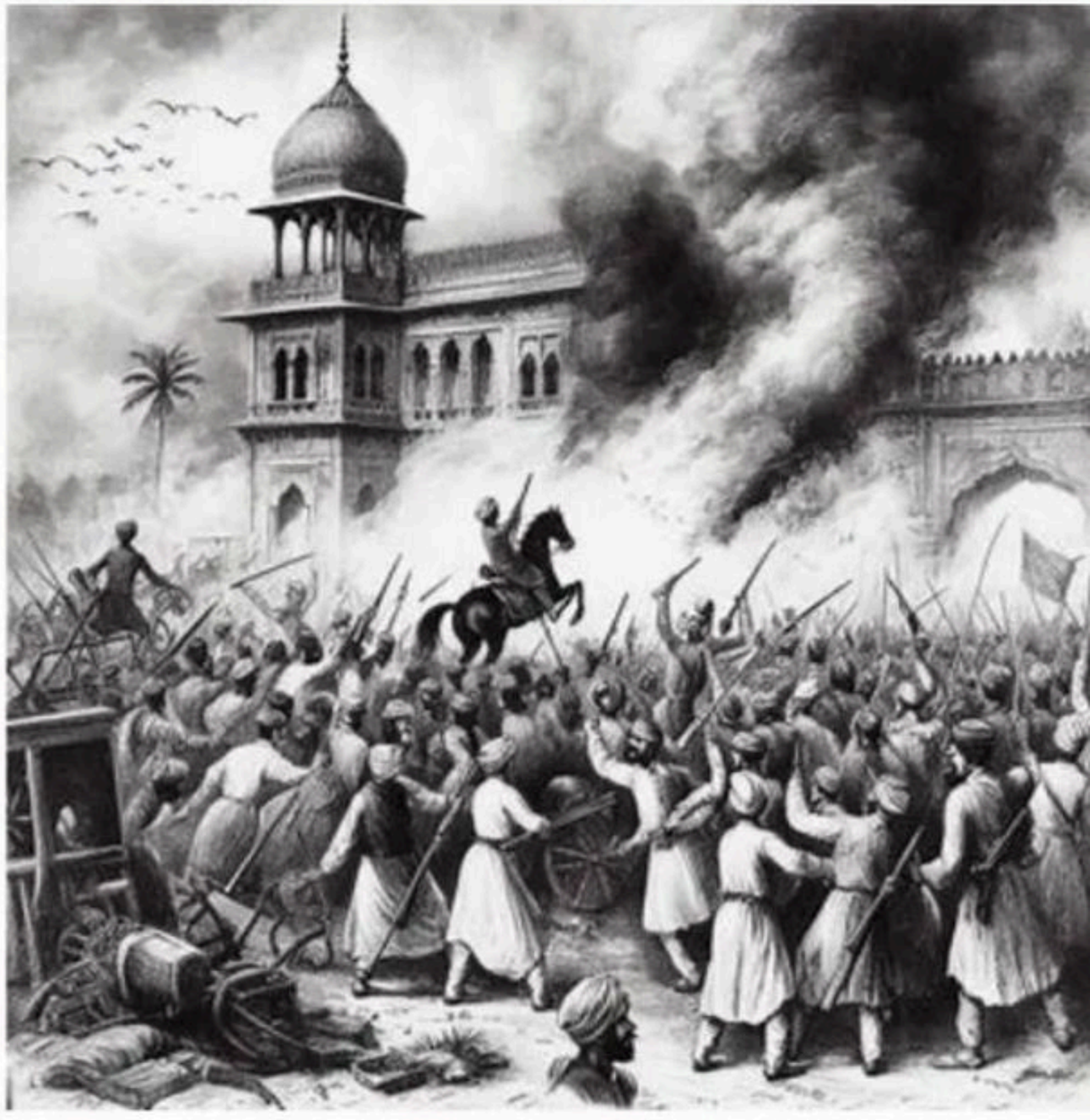
1857 के स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक था-

A.कमल और रोटी

B. बाज

C.रुमाल

D.दो तलवारें



विद्रोह का स्वरूप (The Nature of Revolt)

unacademy

- 1857 के विद्रोह का स्वरूप क्या था? इस पर इतिहासकारों व विद्वानों ने अपनी **अलग-अलग राय** प्रस्तुत की है।
- इस मत भिन्नता का कारण यह था कि अधिकांश **विद्रोहियों** ने गुप्त **संगठन** के रूप में कार्य किया था। अतः पकड़े जाने के भय से उन्होंने **दस्तावेजों** को नष्ट कर दिया। यही कारण है कि विभिन्न इतिहासकारों ने इसे भिन्न-भिन्न स्वरूपों से **जोड़कर** देखा।
- **यथा-सीले** तथा **जान लारेंस, ट्रेविलियन, के. मालसेन** आदि जो अंग्रेजी इतिहासकार हैं, इन्होंने 1857 के विद्रोह को केवल एक "**सैनिक विद्रोह**" माना है जो केवल सैनिकों तक ही सीमित था एवं साधारण जनता का समर्थन **नहीं** प्राप्त कर सका।
- इसके अतिरिक्त अन्य विद्वान **जैसे-चार्ल्स रेक्स** की पुस्तक **'नोट्स ऑन द रिवोल्ट इन द नार्थ-वैस्टर्न प्रोविंसिस ऑफ इंडिया'** जो 1858 में प्रकाशित हुई, में इसे एक **'सैनिक विद्रोह'** माना गया है जिसने कुछ क्षेत्रों में **'जन विद्रोह'** का रूप ले लिया था।



- कुछ समकालीन भारतीय विचारकों ने भी इस मत का समर्थन किया था जिनमें **किशोरी चंद्र मित्रा, मुंशी जीवन लाल, शंभु चन्द्र मुखोपाध्याय, मुईनुद्दीन, दुर्गादास बंदोपाध्याय, हरीश चन्द्र मुखर्जी और सर सैय्यद अहमद खाँ** (जो उस समय 1857 में बिजनौर के सदर अमीन थे) प्रमुख थे।

- सर सैय्यद अहमद खाँ ने अपनी पुस्तक **"the Cause of the Indian Revolt : 1857"** में इस विद्रोह को 'सैनिक विद्रोह' माना है। लेकिन अधिकांश इतिहासकारों ने **लॉरेन्स** और **सीले** के विचारों को नकार दिया। उनका तर्क था कि यह भारतीय सैनिकों द्वारा विद्रोह शुरू किया गया था किन्तु सभी भारतीय सैनिक विद्रोह में **शामिल** नहीं थे।

- बहुत सारे सैनिक ब्रिटिश **सरकार** की ओर से भी लड़ रहे थे। इस प्रकार, इस विद्रोह के प्रति ब्रिटिश सरकार के **संकीर्ण** नजरिए का खण्डन भी होता रहा है।उस समय के कुछ अंग्रेजों ने इसे **मुसलमानों** का कृत्य बतलाया है।

- राबर्ट्स और श्रीमती **कूपलैण्ड** ने इसे **'मुस्लिम विद्रोह'** कहा। जी0बी0 मालेसन, टेलर और सर जेम्स आउट्रम भी इससे सहमत होते हुए कहा कि यह दो समुदायों-हिंदुओं और मुसलमानों का संयुक्त प्रयास या षड्यन्त्र का परिणाम था।



- इसके अतिरिक्त कुछ इतिहासकार जैसे- **एल0 ई0 आर0 रीज** ने इसे धर्मांधों का "**ईसाइयों के विरूद्ध युद्ध**" कहा है तो कंपनी के राजनीतिक **गुप्त विभाग** के सचिव सर जे0 केयी ने इसे "**श्वेतों के विरूद्ध काले लोगों का संघर्ष**" कहा।
- इसी भाँति टी0 आर. होम्स **ने "बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध"** कहा और **टेलबोएस व्हीलर** ने इस विद्रोह **को "एशियाई स्वभाव का परिचायक"**।
- लेकिन अब कई **शोध-पत्र** प्रकाशित हो चुके हैं जो उक्त अवधारणाओं को झूठा और मनगढंत साबित कर रहे हैं।
- कैंब्रिज के प्रसिद्ध इतिहासकार **पर्सिवल** स्पीयर ने इसे 'प्राचीन पुरातनवाद भारत का अंतिम प्रयास' बतलाया है। परन्तु जॉन **ब्रस नॉर्टन** (टॉपिक्स फॉर इंडियन स्टेट्समैन) डफ, मालसेन, केपी और **चार्ल्स बरले** आदि ने इसे '**जन विद्रोह**' माना है।
- इसी मत का जोरदार समर्थन इंग्लैण्ड में रूढ़िवादी दल के नेता **बेन्जामिन डिजरेली** (Benjamin Disralei), जो बाद में ब्रिटिश प्रधानमंत्री बने, ने 27 जुलाई 1857 को **हाउस ऑफ कामन्स** में बहस किया और कहा कि यह एक "**राष्ट्रीय विद्रोह**" था न कि सिपाही विद्रोह।
- भारतीय इतिहासकार **अशोक मेहता** ने भी अपनी पुस्तक '**दि ग्रेट रिवेलियन**' में 1857 के विद्रोह को '**राष्ट्रीय विद्रोह**' सिद्ध करने का प्रयास किया है।

- अधिकांश भारतीय विचारक व इतिहासकार इसे **'राष्ट्रीय विद्रोह'** मानते हैं परंतु दामोदर विनायक सावरकर ने तो इसे सुनियोजित **"भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम'** माना है।

- इसकी व्याख्या उन्होंने अपनी पुस्तक **'The Indian war of Independence 1857'** में विस्तार से किया है। **पट्टाभि सीतारमैया** ने भी इसे पहला स्वतंत्रता संग्राम माना है।

- आधुनिक इतिहासकारों में **डॉ. सुरेन्द्र नाथ सेन**, डा. रमेश चन्द्र मजूमदार, शशि भूषण चौधरी तथा पूरन चंद्र जोशी आदि ने भी अपनी महत्वपूर्ण **व्याख्यायें** प्रस्तुत की हैं।डा. एस. एन. सेन ने अपनी पुस्तक **'एट्टीन फिफ्टी सेवन' (1857)** में यह तर्क दिया है कि "जो कुछ धर्म की लड़ाई के रूप में शुरू हुआ वह स्वतंत्रता संग्राम के रूप में समाप्त हुआ।"

- यद्यपि इसे राष्ट्रीय संग्राम नहीं कहा जा सकता क्योंकि उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राष्ट्रीयता **भ्रूणावस्था** में थी **'भारत'** केवल एक भौगोलक कथन था किंतु इसे केवल सैनिक विद्रोह तक **सीमित भी नहीं किया जा सकता।**



1857 की क्रांन्ति का प्रमुख कारण क्या था?

A. जन आक्रोश

B. सैनिक असंतोष

C. ईसाई मिशनरी का प्रबंध

D. ब्रिटिश साम्राज्य की नीति



1857 की क्रांन्ति का प्रमुख कारण क्या था?

A. जन आक्रोश

B. सैनिक असंतोष

C. ईसाई मिशनरी का प्रबंध

D. ब्रिटिश साम्राज्य की नीति



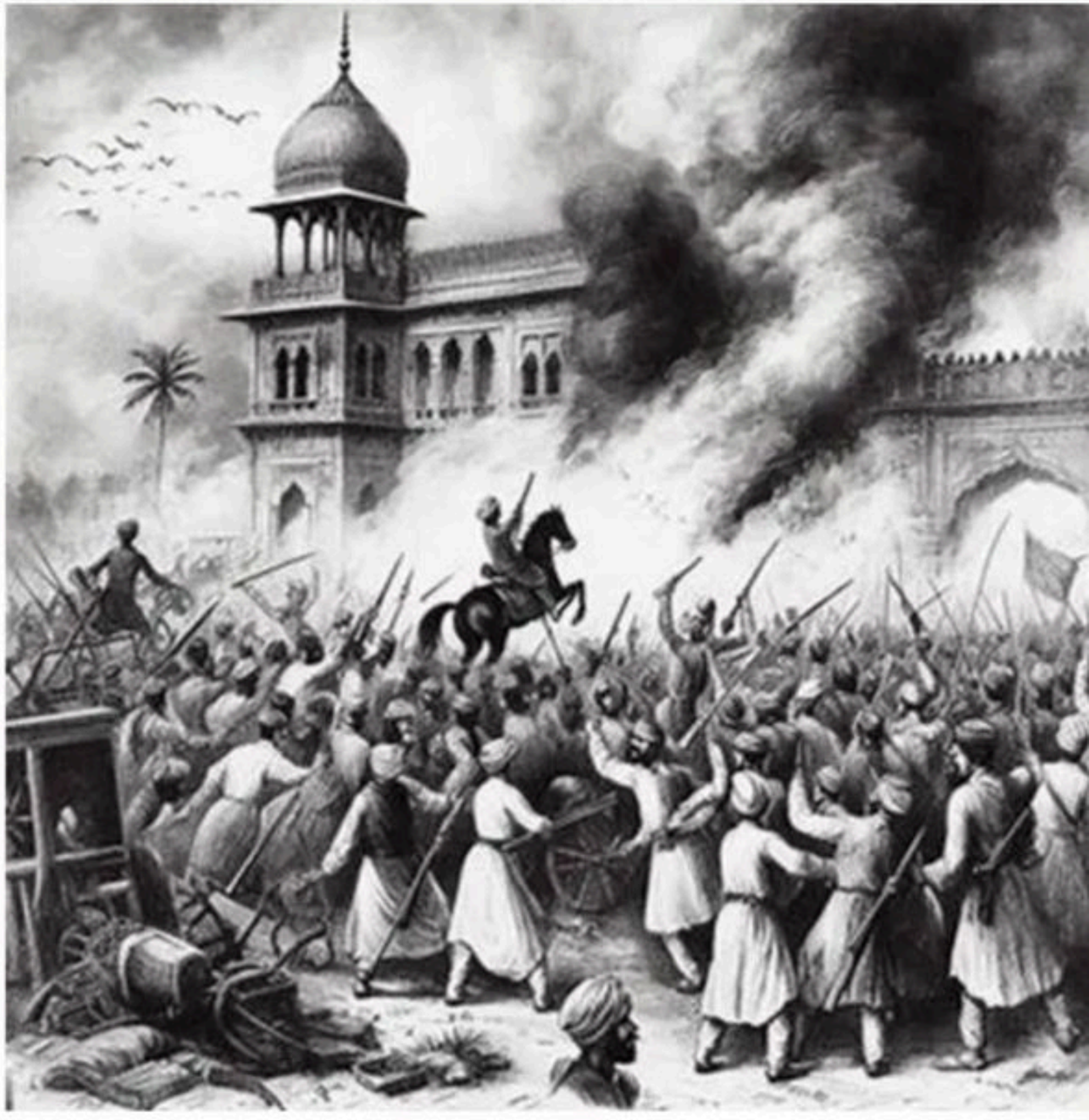
1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री कौन था?

A. चर्चिल

B. पामर्टन

C. एटली

D. ग्लेडस्टोन



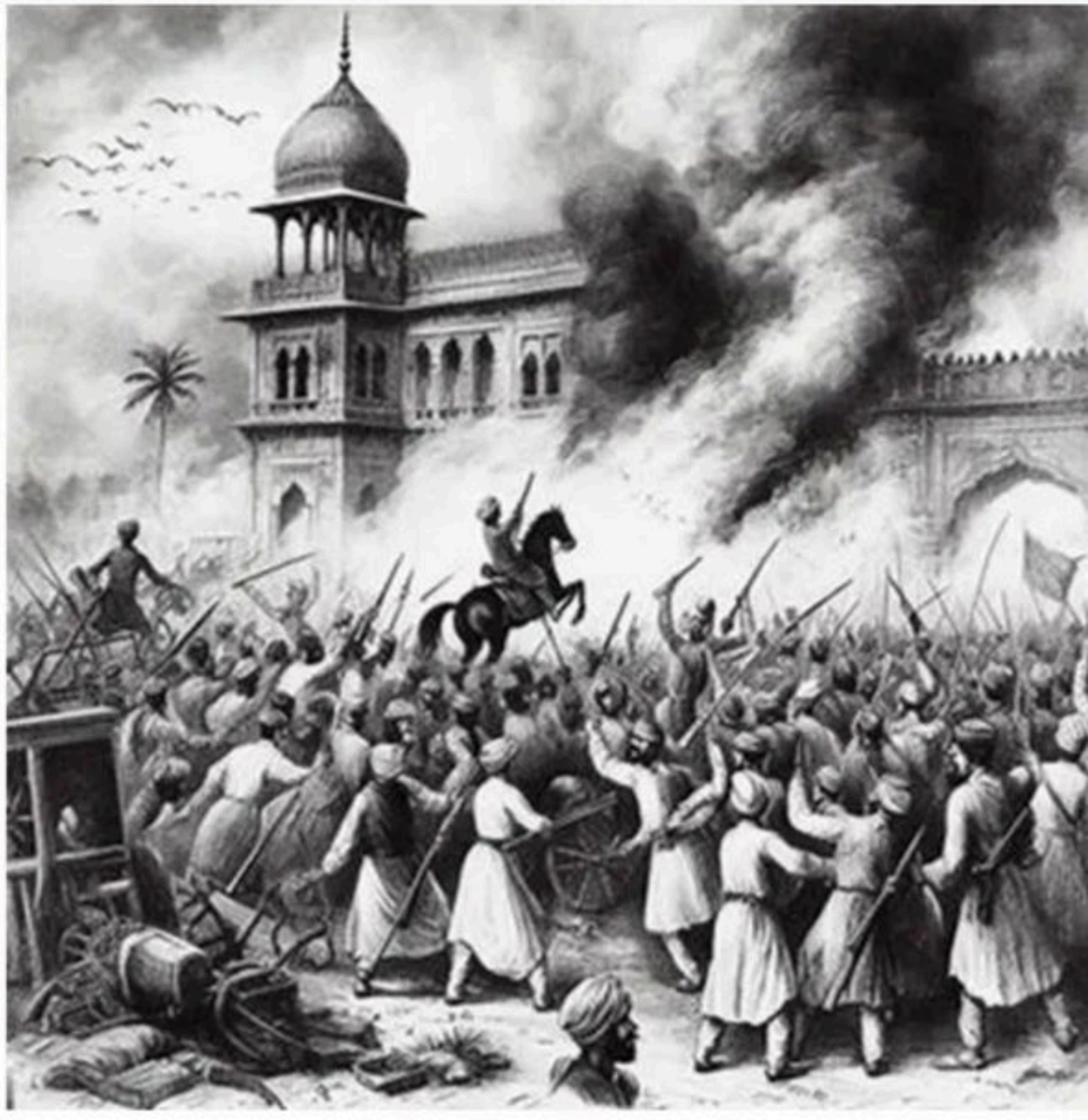
1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री कौन था?

A. चर्चिल

B. पामर्टन

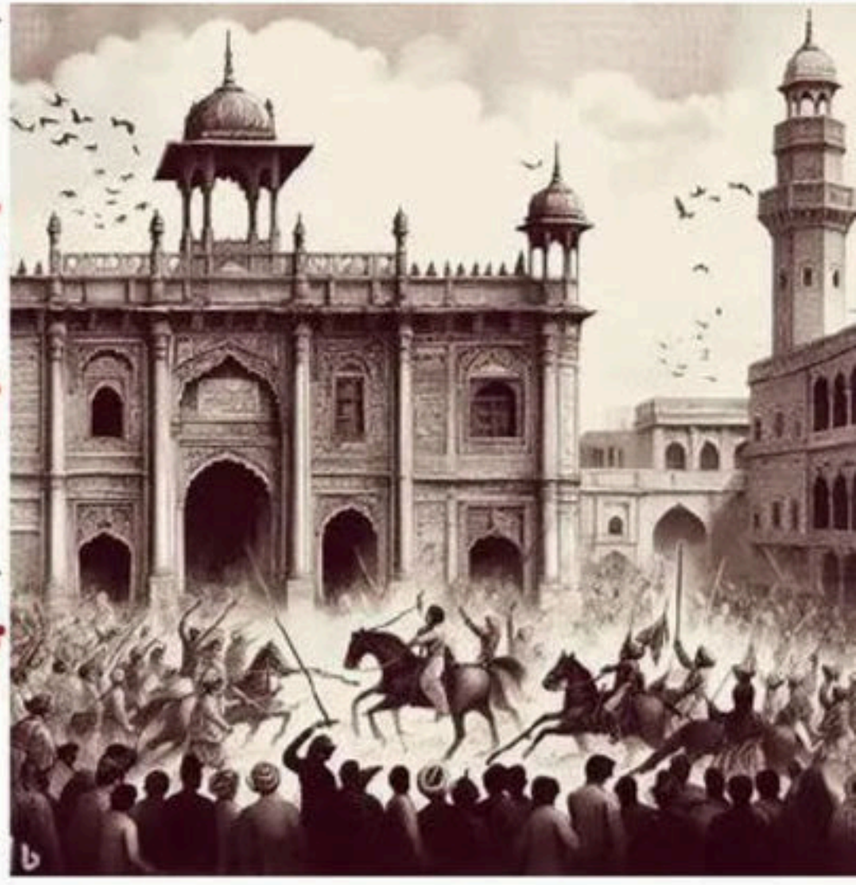
C. एटली

D. ग्लेडस्टोन



- सेन के विचारों से असहमति जताते हुए **आर. सी. मजूमदार** ने कहा कि "यह तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम, **न ही** राष्ट्रीय तथा न ही स्वतंत्रता संग्राम था।
- सेन की भाँति मजूमदार को भी भारत सरकार ने इतिहास लिखने के लिए नियुक्त किया था
- परंतु सरकारी समिति से अनबन के कारण इन्होंने बाद में अपनी पुस्तक **'The Sepoy muting and the Rbellion of 1857'** को **1957** ई0 में स्वतंत्र रूप से प्रकाशित किया
- साथ ही उन्होंने अपने तर्कों को विस्तृत रूप से भारतीय विद्याभवन की पुस्तक **British paramouncy and the Indian Renaissance, Vol. IX** के लेख में स्पष्ट किया है।
- उनके अनुसार यह विद्रोह, अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूप में रहा।
- जैसे- पंजाब और मध्य प्रदेश यह सैनिक विद्रोह था तो उत्तर प्रदेश तथा बिहार के पश्चिमी भागों में इसने **जनांदोलन** का रूप धारण कर लिया था,
- और कुछ भाग जैसे कि **राजस्थान** और महाराष्ट्र ऐसे क्षेत्र थे जहाँ पर जनता को विद्रोहियों से सहानुभूति तो थी परन्तु उन्होंने कानून की सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया।

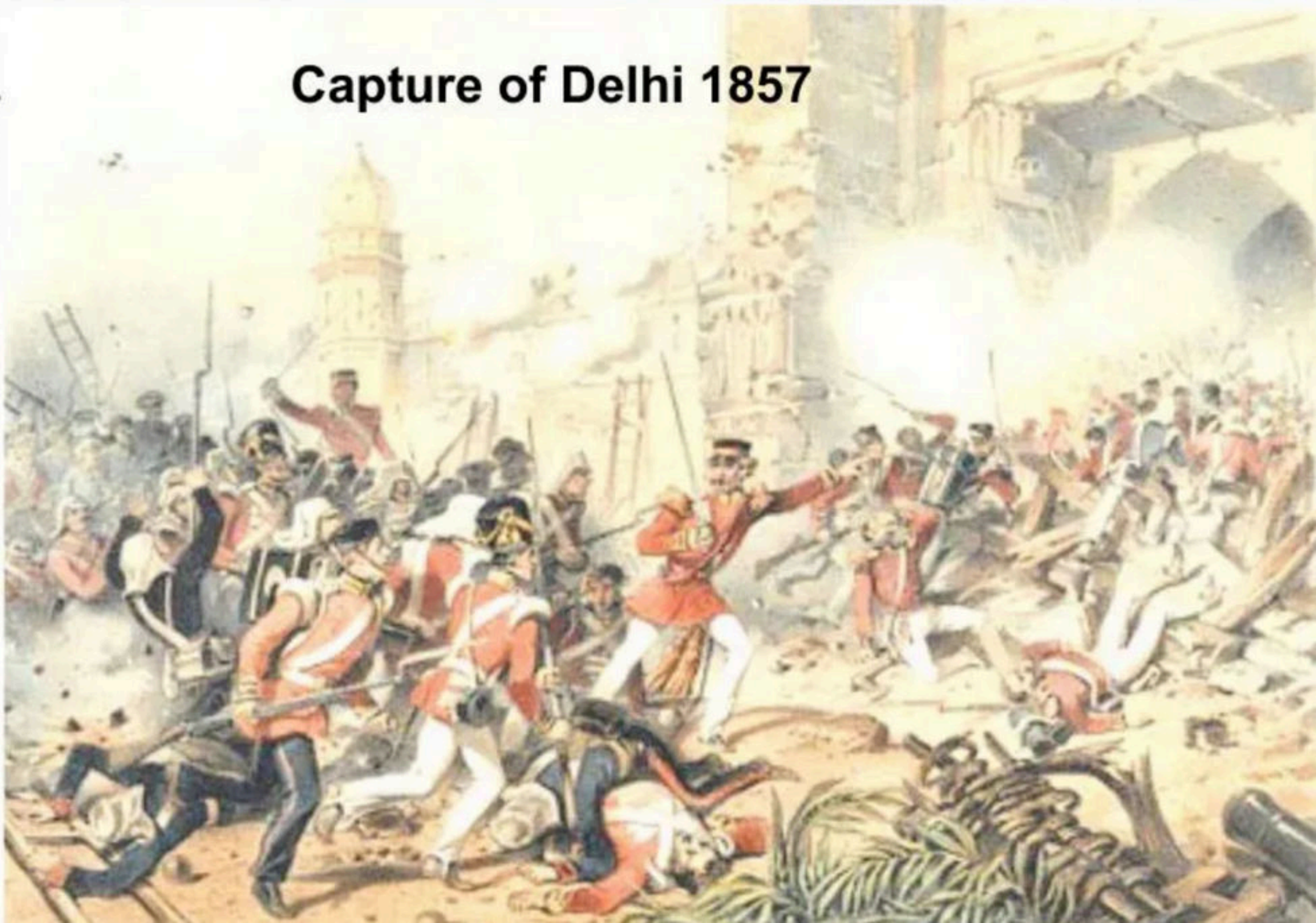
- इसके अतिरिक्त मजूमदार एक और तर्क देते हैं कि इस विद्रोह का राष्ट्रीय महत्व **अप्रत्यक्ष और उत्तरकालिक** था।
- उनके अनुसार जिस तरह यह कहा जाता है कि "**जीवित जूलियस** सीजर के स्थान पर **मरा हुआ सीजर** अधिक शक्तिशाली था।"
- उसी तरह 1857 का विद्रोह भी बाद में अंग्रेजी सत्ता के लिए **चुनौती** का एक **प्रतीक** बन गया।
- उपरोक्त विद्वानों के अतिरिक्त **डॉ. एस.बी. चौधरी** जिन्होंने अपनी पुस्तक **Civil Rebellion in the Indian Mutinies, 1857-59 में 1857** के विद्रोह को सैनिक व असैनिक दो विद्रोहों के रूप में देखा है।
- उनके अनुसार दोनों स्वतंत्र कारणों से आरंभ हुए और मुख्यतः भारतीय लोग अपनी **संस्कृति** व **परम्परा** की सुरक्षा का प्रयत्न कर रहे थे।
- एक अन्य विद्वान पूरन चन्द्र जोशी ने **मार्क्सवादी** दृष्टि से इस विद्रोह की व्याख्या की है उन्होंने अपनी पुस्तक **"Rebellion : 1857 A Sysposium"** में इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'यह विद्रोह राष्ट्रीय और सामान्य जनता तक फैला हुआ **विप्लव** था।'



- बहादुरशाह द्वारा **25 अगस्त 1857** को प्रकाशित इस्तहार प्रमुख था, जिसमें कहा गया था कि "यह सबको विदित है कि इस युग में हिन्दुस्तान के लोग चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, सभी **विधर्मी** और **विश्वासघाती** अंग्रेजों के जुल्म से बर्बाद हो रहे हैं।"
- नाना साहब ने भी फ्रांस के समाट को लिखे गये पत्र में **बहादुरशाह** का समर्थन किया था।
- इसके अतिरिक्त अवध के **नवाब बिरजिस कादिर** ने भी एक घोषणा पत्र अंग्रेजों के विरोध में तथा विद्रोह के समर्थन में जारी किया था।
- अतः सिर्फ सेना ही नहीं बल्कि **रजवाड़े** व उच्च वर्ग भी इस आन्दोलन में शामिल थे।
- यह विद्रोह एक **राष्ट्रीय विद्रोह** था, क्योंकि इसमें सैनिकों के साथ-साथ आम लोगों ने भी शिरकत की थी।
- प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार डॉ. (प्रो.) **विपिनचन्द्र** के शब्दों में "1857 का विद्रोह विदेशी सत्ता को पुराने ढंग से हटाने की आखिरी लड़ाई थी, इसे विद्रोह भी कह सकते हैं और आजादी की लड़ाई भी, खास बात यह है कि इसमें हार मिली, इससे बुद्धिजीवी वर्ग ने सबक ली वे समझ गए कि यह पुराने किस्म का विदेशी शासक नहीं है, इसलिए उसके खिलाफ लड़ाई दूसरे **ढंग** से लड़ी जाए।



- 1857 के विद्रोह के बाद भारत की आजादी की लड़ाई में इसने बहुत योगदान दिया, विद्रोहियों की बहादुरी की गाथाएँ जनता को प्रेरित करती रहीं।"



असत्य कथन का चयन करें -

A. भारतीय इतिहासकार अशोक मेहता ने भी अपनी पुस्तक 'दि ग्रेट रिवेलियन' में 1857 के विद्रोह को 'राष्ट्रीय विद्रोह' सिद्ध करने का प्रयास किया है।

B. अधिकांश भारतीय विचारक व इतिहासकार इसे 'राष्ट्रीय विद्रोह' मानते हैं परंतु दामोदर विनायक सावरकर ने तो इसे सुनियोजित "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' माना है।

C. इसकी व्याख्या उन्होंने अपनी पुस्तक 'The Indian war of Independence 1857' में विस्तार से किया है।

D. पट्टाभि सीतारमैया ने इसे पहला स्वतंत्रता संग्राम नहीं माना है।

असत्य कथन का चयन करें -

A. भारतीय इतिहासकार अशोक मेहता ने भी अपनी पुस्तक 'दि ग्रेट रिवेलियन' में 1857 के विद्रोह को 'राष्ट्रीय विद्रोह' सिद्ध करने का प्रयास किया है।

B. अधिकांश भारतीय विचारक व इतिहासकार इसे 'राष्ट्रीय विद्रोह' मानते हैं परंतु दामोदर विनायक सावरकर ने तो इसे सुनियोजित "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' माना है।

C. इसकी व्याख्या उन्होंने अपनी पुस्तक 'The Indian war of Independence 1857' में विस्तार से किया है।

D. पट्टाभि सीतारमैया ने भी इसे पहला स्वतंत्रता संग्राम माना है।

1857 के विद्रोह का स्वरूप : एक दृष्टि मे

इतिहासकार	विद्रोह का स्वरूप
के. मालेसन, देबिलियन, सर जान लारेंस व सीले, सर सैयद अहमद खाँ	यह पूर्णतिया सिपाही विद्रोह था
डॉ. ईश्वरी प्रसाद	यह स्वतंत्रता संग्राम था।
मिस्टर के, एस.बी. चौधरी	एक सामंतवादी प्रतिक्रिया थी
डा. रामविलास शर्मा, डफ, मालेसन	जनक्रांति थी
बेन्जामिन डिजरेली, अशोक मेहता	यह 'राष्ट्रीय विद्रोह' था
जेम्स आउट्रम, डब्लू टेलर	अंग्रेजों के विरुद्ध, 'हिंदू-मुस्लिम षड्यंत्र' था
एल. आर. रीस	'ईसाईयों के विरुद्ध धर्मयुद्ध' था।
सर जे. केवी	'श्वेतों के विरुद्ध काले लोगों का संघर्ष' कहा।
राईट्स एवं श्रीमती कूपलैण्ड	'मुस्लिम विद्रोह' कहा

1857 के विद्रोह का स्वरूप : एक दृष्टि मे

इतिहासकार	विद्रोह का स्वरूप
पर्सिवल स्पीयर	'प्राचीन पुरातनवाद भारत का अंतिम प्रयास'
टी. आर. होम्स	'सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष' था।
वीर सावरकर, पट्टाभि सीता रमैया	यह 'सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम था।
कार्ल मार्क्स	1857 को एक 'राष्ट्रीय क्रान्ति' कहा।
आर. सी. मजूमदार	"तथाकथित प्रथम स्वतंत्रता संग्राम न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था।"
पी. राबर्ट्स	1857 का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह था जिसका तत्कालिक कारण चर्बीयुक्त कारतूस था
डा. एस. एन सेन	यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।

निम्नलिखित में से क्या सुमेलित नहीं है ?

लेखक	चर्चित पुस्तकें
A.आर सी मजूमदार	द सिपोय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट ऑफ 1857
B. एस एन् सेन	द ग्रेट रिबेलियन
C. एस बी चौधरी	थ्योरीज आफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857 तथा सिविल रिवेलियन इन द इंडियन प्यूटिनीज 1857-59
D. एरिक स्टॉक्स	पीजेन्ट एण्ड द राज

निम्नलिखित में से क्या सुमेलित नहीं है ?

लेखक	चर्चित पुस्तकें
A.आर सी मजूमदार	द सिपोय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट ऑफ 1857
B. एस एन् सेन	**द ग्रेट रिबेलियन**
C. एस बी चौधरी	थ्योरीज आफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857 तथा सिविल रिवेलियन इन द इंडियन प्यूटिनीज 1857-59
D. एरिक स्टॉक्स	पीजेन्ट एण्ड द राज

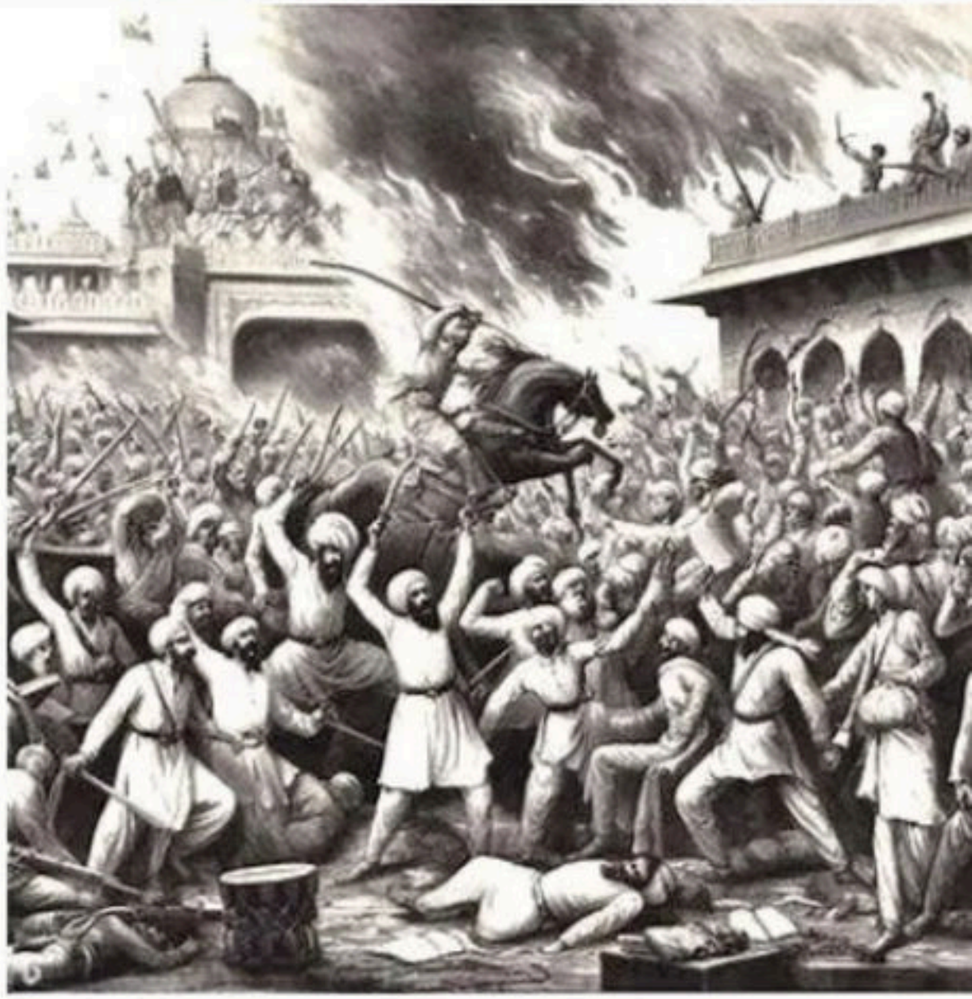
विद्रोह का आरंभ और विस्तार (Beginning and spread of The Revolt)

unacademy

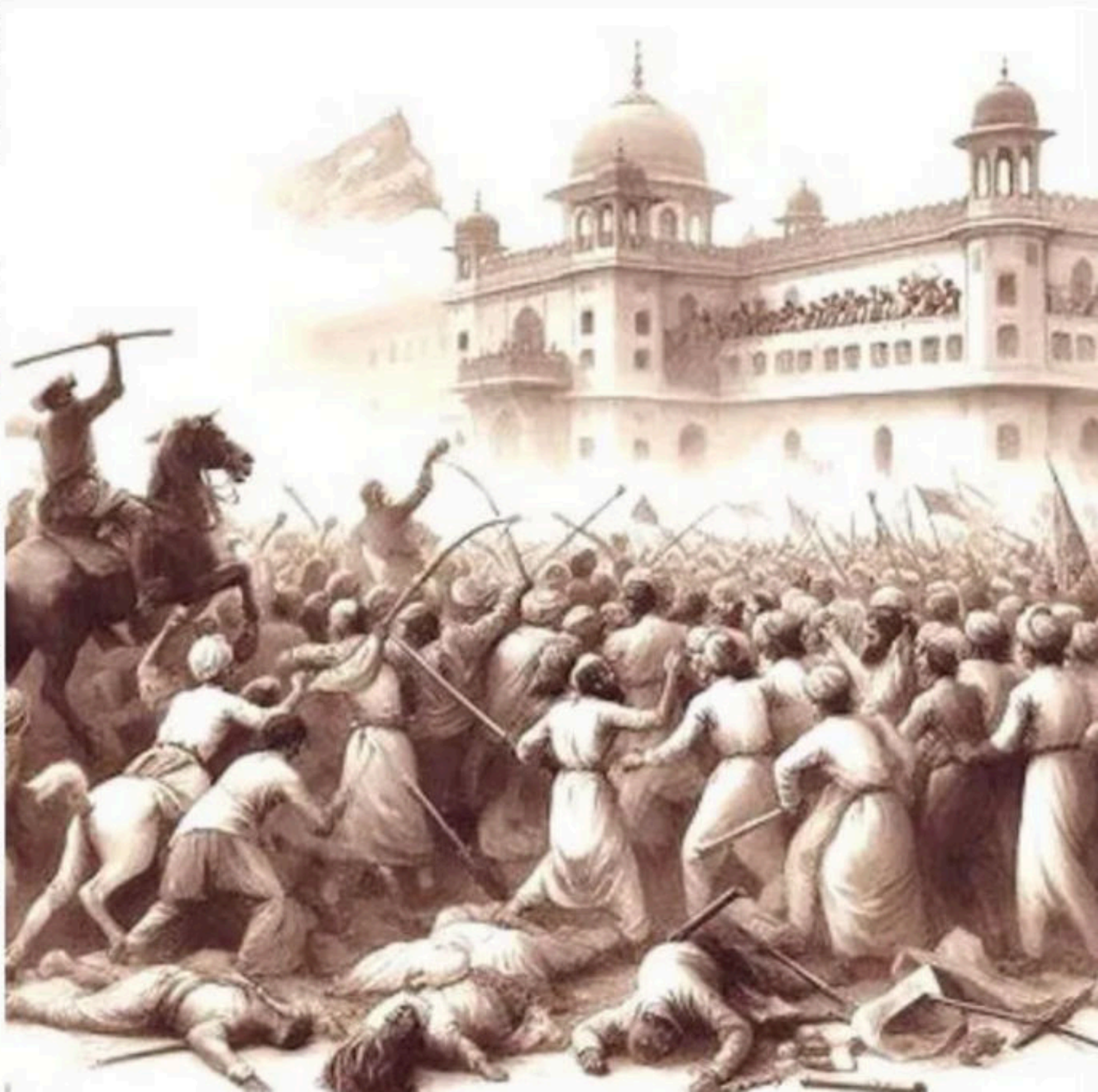


- चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग को लेकर **सैनिकों में अशांति** उत्पन्न हो गई थी।
- 23 जनवरी 1857 को दमदम के सैनिकों ने **कारतूसों** को प्रयोग में लाने से इन्कार कर दिया तो 26 फरवरी 1857 को बहरामपुर, जो कलकत्ता से 120 मील दूर स्थित था की 19वीं एन0 आई0 ने कारतूस के **प्रयोग** से मना कर दिया और विद्रोह कर दिया।
- 29 मार्च 1857 को **बैरकपुर छावनी** (मुर्शिदाबाद के समीप) के 34वीं एन0आई0 रेजीमेन्ट के सैनिक **मंगल पाण्डे ने चर्बीयुक्त कारतूसों** का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया
- और अपने साथियों से इसके विरोध में विद्रोह का **आह्वान** किया तथा अंग्रेज अधिकारी सारजेण्ट थ्रसन तथा **लेफ्टीनेन्ट** बाग को गोली मार दी, परन्तु **घरसन** बच गया।
- 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे को **फांसी** दे दी गई और **34वीं रेजीमेंट** को भंग कर दिया गया।
- मंगल पाण्डे तत्कालीन **गाजीपुर** (अब बलिया, उ0प्र0) जिला के **निवासी** थे।
- चर्बी वाले कारतूस के विरोध में विद्रोह की खबर शीघ्र ही **मेरठ** पहुंच गई।

- 24 अप्रैल 1857 को मेरठ में देशी घुड़सवार सेना के 85 सिपाहियों ने चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से मना कर दिया।
- अतः उन्हें लम्बी सजा दी गई।
- 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में तैनात सैनिकों ने खुला विद्रोह कर दिया और अपने सैनिक **अधिकारियों पर गोली चलाई।**
- शीघ्र ही विद्रोही **दिल्ली** की ओर कूच कर गये।
- मेरठ में तैनात अंग्रेज अधिकारी **जनरल हेबिट** के पास 2200 यूरोपीय सैनिक थे परन्तु उसने इस **तूफान** को रोकने का प्रयत्न ही नहीं किया।
- **11 मई को विद्रोही दिल्ली पहुंचे और 12 मई 1857 को उन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया** और मुगल सम्राट **बहादुरशाह द्वितीय** को पुनः भारत का सम्राट घोषित कर दिया।
- इस दौरान अंग्रेज अधिकारी **कर्नल रिपले मारा गया** और लेफ्टिनेन्ट विलोबी जो दिल्ली शस्त्रागार का कार्यवाहक था, पराजित हुआ तथा सेना की देशी **पल्टन** विद्रोहियों से जा मिली।



- दिल्ली विजय का समाचार समूचे देश में आग की भाँति फैल गया। सभी राजाओं व रजवाड़ों को सहायता के लिए पत्र लिखे गये।
- दिल्ली में 1857 के विद्रोह का वास्तविक नेता बहादुरशाह द्वितीय का सेनाप्रमुख **जनरल बख्त खान अथवा खान बहादुर खाँ था।**
- इसने बरेली में सैनिकों का नेतृत्व करते हुए उन्हें दिल्ली ले आया था।
- लार्ड कैनिंग ने इस विद्रोह को दबाने के लिए शीघ्र ही चारों ओर से **नाकेबंदी** की योजना बनाई।
- पंजाब से सेना दिल्ली बुलाई गई तथा कश्मीर, पटियाला, नाभा और जींद के राजाओं की **मदद** ली गई।



कथन (क): 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश सरकार से स्वतंत्रता प्राप्त करने में असफल रहा।

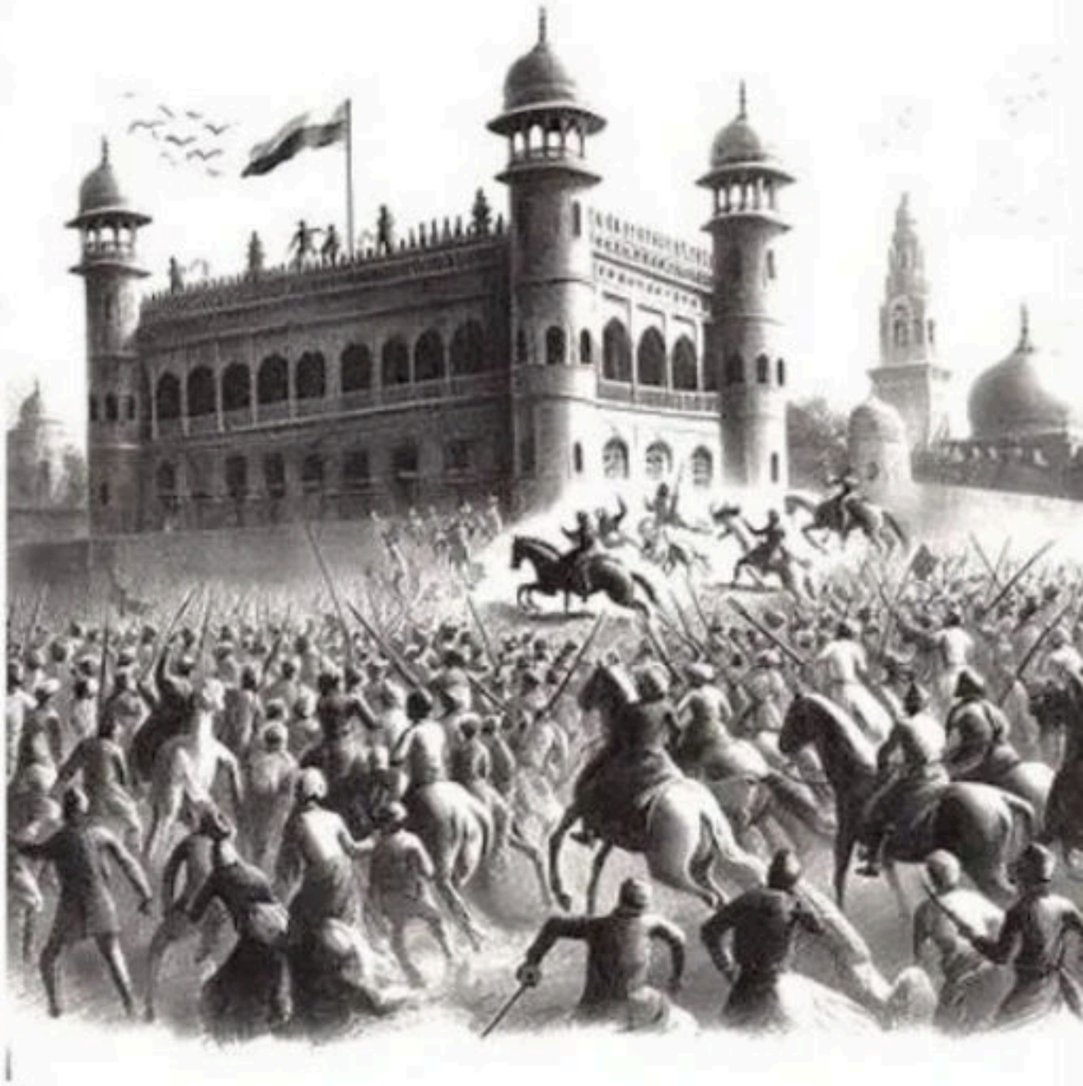
कारण (का): बहादुरशाह जफर के नेतृत्व को जनसहयोग नहीं मिला था और अधिकांश महत्वपूर्ण रियासतों के शासक उनका साथ देने में कतरा गए। नीचे दिए गए कोड में सही उत्तर चुनिए-

A. (क) और (का) दोनों सत्य हैं और (का),(क) का सही स्पष्टीकरण है।

B. (क) और (का) दोनों सत्य हैं परंतु (का),(क) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

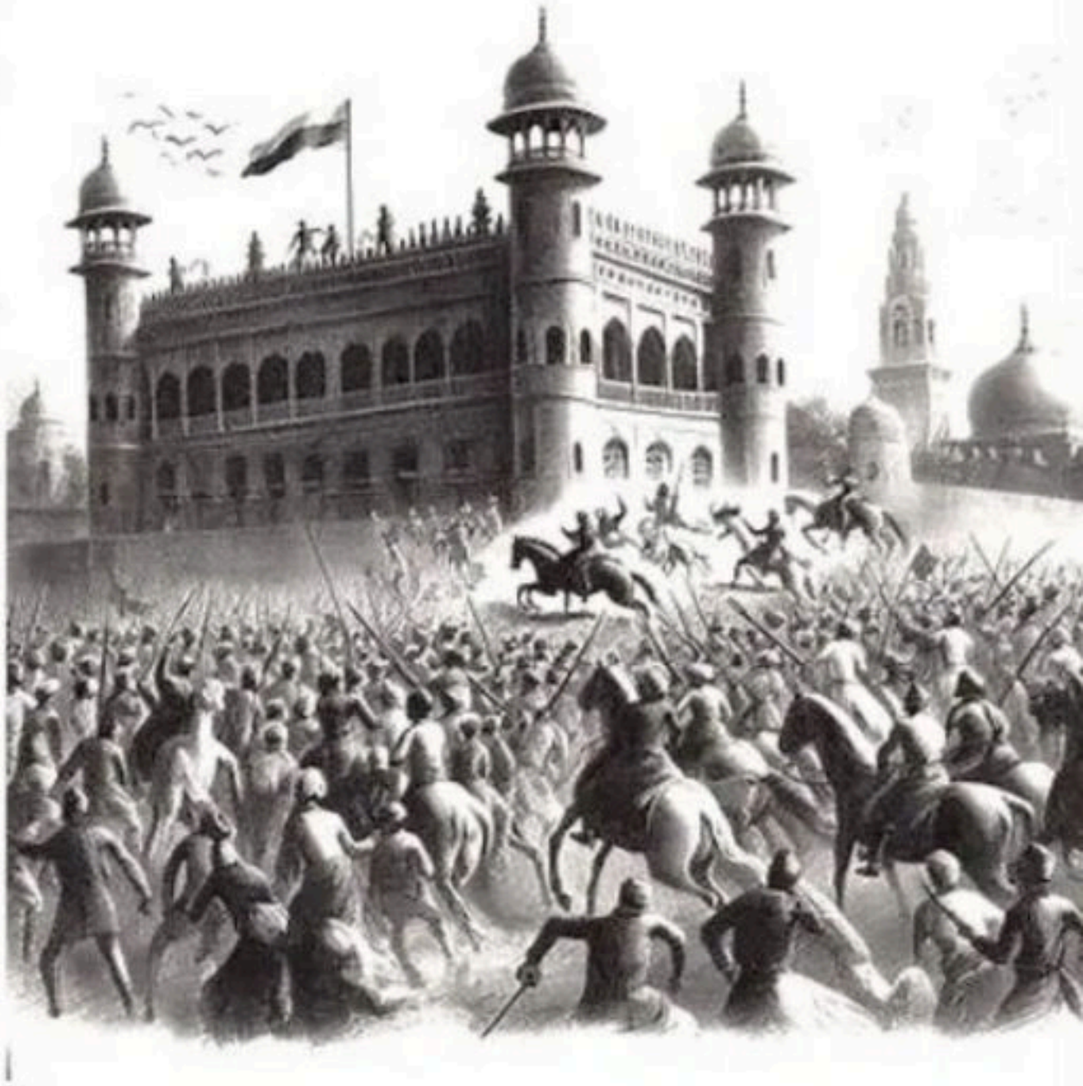
C. (क) सत्य है और (का) असत्य है।

D. (क) असत्य है, परंतु (का) सत्य है।



कथन (क): 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश सरकार से स्वतंत्रता प्राप्त करने में असफल रहा।

कारण (का): बहादुरशाह जफर के नेतृत्व को जनसहयोग नहीं मिला था और अधिकांश महत्वपूर्ण रियासतों के शासक उनका साथ देने में कतरा गए। नीचे दिए गए कोड में सही उत्तर चुनिए-



A. (क) और (का) दोनों सत्य हैं और (का),(क) का सही स्पष्टीकरण है।

B. (क) और (का) दोनों सत्य हैं परंतु (का),(क) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

C. (क) सत्य है और (का) असत्य है।

D. (क) असत्य है, परंतु (का) सत्य है।

- 14 सितंबर 1857 को अंग्रेजी सेना ने विद्रोहियों से संघर्ष प्रारंभ किया और **सर हेनरी बर्नार्ड तथा ब्रिगेडियर विल्सन** की संयुक्त सेनाओं ने दिल्ली को घेर लिया।
- **निकलसन** ने **कश्मीरी** गेट पर अधिकार कर नगर में प्रवेश किया।
- 6 दिन के संघर्ष के बाद 20 सितम्बर 1857 को दिल्ली पुनः अंग्रेजों के अधिकार में आ गई। इस संघर्ष में जॉन निकलसन की **मृत्यु** हुई। दिल्ली में भयंकर **नरसंहार** हुआ।
- तत्कालीन बंबई के गवर्नर लार्ड **एलफिंस्टन** ने लिखा कि दिल्ली पर पुनः अधिकार के बाद ब्रिटिश सेना के अपराधों का **वर्णन नहीं किया जा सकता।**
- मशहूर **शायर मिर्जा गालिब 1857** के विद्रोह के समय दिल्ली में ही थे उन्होंने लिखा है कि "यहाँ मेरे सामने रक्त का एक विशाल सागर है, केवल खुदा ही जानता है कि मुझे और क्या देखना बदा है।"दिल्ली की यह आग शीघ्र ही पूरे देश में **दावानल** की भाँति फैल गई।
- लखनऊ में 4 जून 1857 को अवध की बेगम हजरत महल ने अपने अल्पवयस्क पुत्र **विरजिस कादिर** को नवाब घोषित करते हुए विद्रोह का **नेतृत्व** किया।



- इस समय जो नरसंहार हुआ उसकी भयंकरता नादिरशाह के आक्रमण से भी अधिक थी।
- **हडसन ने बहादुरशाह के रिश्तेदार मिर्जा इलाही बख्श की मदद से सम्राट को बन्दी बना लिया और उसे निर्वासित करके उनकी बेगम जीनतमहल के साथ रंगून भेज दिया गया।**
- जहाँ 7 नवम्बर, 1862 में उसकी **मृत्यु** हो गयी।
- सम्राट के पुत्र मिर्जा मुगल और मिर्जा **ख्वाजा सुल्तान** तथा पोते मिर्जा अबू वक्र को **हडसन** ने दिल्ली के लाल किले के सामने **गोली** मार दी।
- **बख्त खां दिल्ली** से **लखनऊ** चला गया जहाँ संघर्ष करते हुए 13 मई 1859 को उसकी **मृत्यु** हो गई।



- जिसमें **अवध के किसान, जमींदार व सैनिकों** ने उनकी सहायता की।
- अवध की ब्रिटिश सेना विद्रोहियों का मुकाबला **नहीं** कर सकी।
- ब्रिटिश रेजिडेन्ट **हेनरी लॉरेन्स** ने यूरोप निवासियों और **2000** राजभक्त भारतीय सैनिकों के संग **रेजिडेन्सी** में शरण ली।
- विद्रोहियों ने रेजीडेंसी को घेरकर आग लगा दी जिसमें **हेनरी लारेंस की मृत्यु** हो गई। तत्पश्चात् ब्रिगेडियर इंग्लिस ने घेरने वालों का प्रतिरोध किया परन्तु सफल **नहीं** हुआ।
- इसके बाद जनरल **हेवलॉक** व **आउट्रम** ने लखनऊ को पुनः जीतने का प्रयास किया परन्तु उन्हें भी **असफलता** हाथ लगी।बाद में नवम्बर 1857 में नए मुख्य **सेनापति सर कालिन कैम्पबेल** भेजे गये जिन्होंने गोरखा रेजिमेंट की सहायता से पुनः लखनऊ पर **अधिकार** कर लिया।





- बेगम हजरत महल ने **आत्मसमपर्ण नहीं किया** और नेपाल चली गई।

- **मौलवी अहमद उल्ला शाह** जिन्होंने लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ **जेहाद** के लिए उत्तेजित किया था, गुरिल्ला युद्ध द्वारा संघर्ष जारी रखा परन्तु बाद में **पोवायों** के राजा जगन्नाथ सिंह ने **विश्वासघात** द्वारा उन्हें मरवा दिया।

- लखनऊ के पश्चात् 5 जून 1857 को कानपुर में विद्रोह हुआ जिसका नेतृत्व पेशवा **बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब** (धोंधू पंत) ने किया। इनकी सहायता **तात्या टोपे** और **अज़ीमुल्ला खां** ने किया। नाना साहेब को पेशवा घोषित कर दिया गया।

- छावनी के कमाण्डर **जनरल सर व्हीलर** ने आत्मसमर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज स्त्रियों व बच्चों को सुरक्षित **इलाहाबाद** पहुंचाया जा सके, परंतु जब वे नावों पर चढ़कर इलाहाबाद के लिए रवाना हुए तो **सतीचौरा** (सती चौड़ा) नामक गंगा घाट पर उन्हें **गोली** मार दिया गया। इसी समय कुछ विद्रोहियों ने **बीबीगढ़** नामक स्थान पर कैद अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों की **हत्या** कर दी। इस हत्याकांड का उत्तरदायी **नाना साहेब** को ठहराया गया। परंतु उनका कहना था कि यह घटना उनके **जानकारी** में नहीं घटी।



- इस संबंध में अंग्रेज महिला **हार्ट स्टेट** ने लिखा है कि "इस व्यक्ति के बारे में चाहे जो कहा जाये परन्तु वह इस हत्याकांड के लिए **दोषी नहीं हो सकता** क्योंकि नाना साहेब ने स्वयं इस महिला व **108** दूसरे लोगों को विद्रोहियों से बचाया था।"
- कानपुर में **हैवलाक** के अधीन एक सेना भेजी गयी तथा 20 जुलाई को जनरल **नील** भी कानपुर पहुंच गया तथा कानपुर पर अधिकार कर लिया। परन्तु 27 नवम्बर को **ग्वालियर** की सेना ने पुनः कानपुर पर अधिकार कर लिया।
- अन्ततः 6 दिसम्बर 1857 को **कैम्पबेल** ने कानपुर को अपने अधिकार मे ले लिया। नाना साहेब भाग कर **नेपाल** चले गये जहाँ से अंतिम श्वॉस तक अंग्रेजों से लड़ने रहे **तथा तात्या टोपे झांसी की रानी से जा मिले।**
- झांसी में 5 जून 1857 को **विद्रोह** हुआ। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जो **गंगाधर राव की विधवा थी,** अपने दत्तक पुत्र दामोदरराव को झांसी की गद्दी न दिये जाने से **रूष्ट** थी।



- अतः उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- **कानपुर से तात्या टोपे भी रानी से जा मिले।**
- रानी का कहना था कि "मैं अपनी झांसी किसी कीमत पर नहीं दूंगी।
- झांसी के विद्रोह का दमन करने के लिए **23 मार्च 1858** को यूरोज को भेजा गया।
- यूरोज ने झांसी को घेर लिया **8 दिनों तक** रानी ने वीरता से युद्ध किया परंतु कुछ **विश्वासघातियों** की वजह से अंग्रेज सेना अन्दर घुस गई।
- रानी सैनिक वेष में शत्रु सेना से बचकर **कालपी पहुंची** जहाँ वह **ह्यूरोज** से **पराजित** हुई।
- अंग्रेजी सेना जो स्मिथ के नेतृत्व में लड़ रही थी, उसे रानी की **वीरता** के आगे पीछे हटना पड़ा।
- परंतु **ह्यूरोज** की सेना के आ जाने के बाद भी रानी अत्यंत वीरता से लड़ी और **17 जून 1858 को ग्वालियर दुर्ग** की दीवारों के पास वीर गति को प्राप्त हुई।



- तात्याँ टोपे बच निकले और बाद में नेपाल चले गये जहाँ अप्रैल **1859 में सिंधिया** के एक सामंत मानसिंह **(मारवाड़ के राजा)** ने उन्हें अंग्रेजों को सौंप दिया और 18 अप्रैल 1859 को इन्हें **फांसी** पर लटका दिया गया।

- रानी **लक्ष्मी बाई** की मृत्यु पर **जनरल** यूरोज ने कहा कि "भारतीय **क्रांतिकारियों** में यहाँ सोयी हुई (वीर गति को प्राप्त हुई) **औरत** अकेली मर्द है।"*

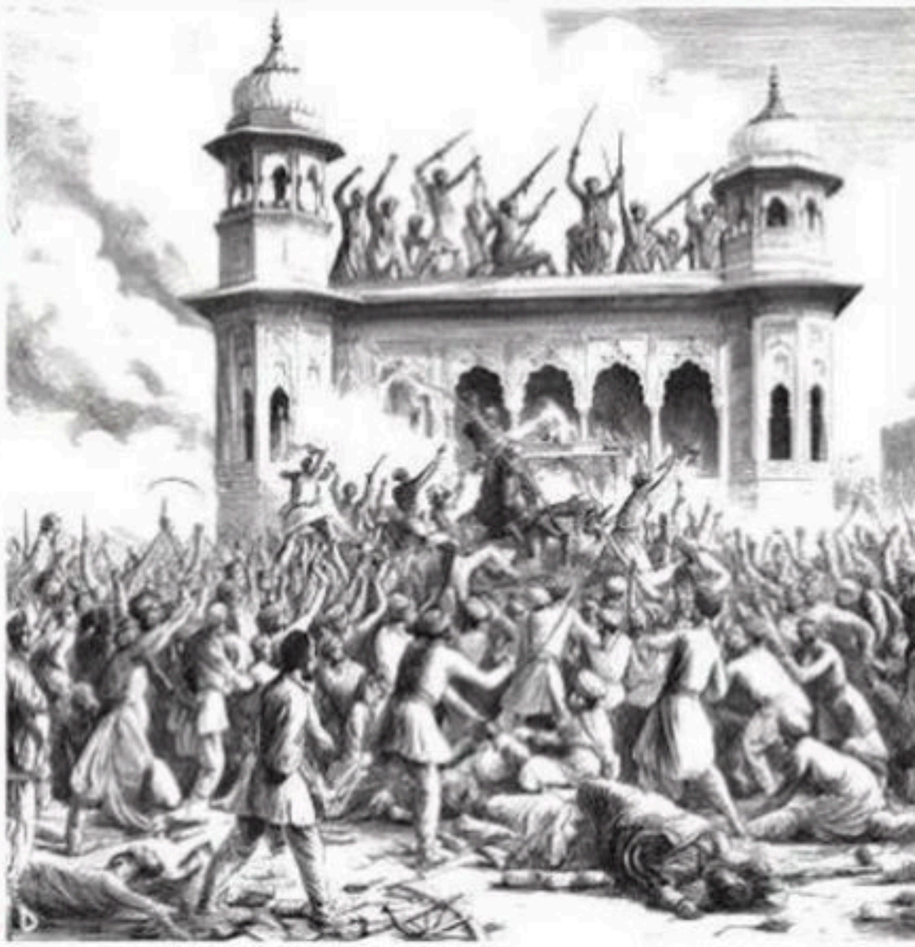


- लखनऊ और कानपुर के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में अन्य स्थानों पर भी विद्रोह का प्रसार हुआ जिसमें **इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली** के नेतृत्व में जून के प्रारम्भ में विद्रोह हुआ तथा इसी समय बनारस में भी विद्रोही सक्रिय हो गये। परन्तु **कर्नल नील** द्वारा दोनों स्थानों पर विद्रोह को दबा दिया गया।

- इसी प्रकार फैजाबाद में मौलवी **अहमद उल्ला** ने भी जून 1857 में विद्रोह की अगवानी की। उन्होंने विभिन्न **धर्मानुयायियों** को जेहाद के नाम पर एकत्रित करने का प्रयास किया।

- उन्होंने कहा कि "सारे लोग अंग्रेज काफिर के विरुद्ध खड़े हो जाओ और उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दो।" **अहमदउल्ला** की कार्यवाहियों से त्रस्त होकर अंग्रेजों ने उस पर **50,000** रु का नकद इनाम घोषित कर दिया थाफिर भी वे उसको **जीवित न पकड़ सके**। जनरल **रेनार्ड** ने 5 जून 1858 को विद्रोह को कुचल दिया और **अहमदउल्ला** को **रूहेलखण्ड** की सीमा पर **पोवायाँ** में गोली मार दी गयी।

- बरेली में **खान बहादुर खाँ ने** मोर्चा संभाला और शीघ्र ही समस्त रूहेलखण्ड विद्रोह की अग्नि में जल उठा, परन्तु **1858** में **विंसेट आयर** व **कैम्पबेल** ने इस विद्रोह को दबा दिया **और बहादुर खान को फांसी दे दी** गयी।



- मन्दसौर (म.प्र.) में मुगल घराने के शहजादे **फिरोजशाह ने विद्रोह का नेतृत्व किया** परंतु बाद में इन्हें रंगून निर्वासित कर दिया गया, जहाँ पर इनकी मृत्यु हो गई।



- उत्तरी प्रांत के साथ **बिहार** में भी 1857 के क्रांति की मशाल जल उठी और दानापुर, आरा, पटना, गया, शाहाबाद (**जगदीशपुर**) एवं मुजफ्फरपुर आदि स्थान विद्रोह के प्रमुख केन्द्र बन गये।**शाहाबाद** में जगदीशपुर के जमींदार कुंवर सिंह (80 वर्षीय) ने **विद्रोहियों** का नेतृत्व किया।
- कुंवर सिंह अंग्रेज **अधिकारियों** की सहायता से अपनी जमींदारी का प्रबंध **बोर्ड ऑफ रेवेन्यू** को सौंपना चाहते थे। परन्तु उनका यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ तथा गिरती आर्थिक स्थिति ने उन्हें **दीवालियेपन** की स्थिति में पहुंचा दिया।
- जिस कारण वह अंग्रेजों के प्रति **आक्रोश** से भर गये थे और 1857 के विद्रोह ने उन्हें सुनहरा अवसर प्रदान किया। बिहार में सर्वप्रथम दानापुर में विद्रोह हुआ। यहाँ विद्रोह के दमन किये जाने पर विद्रोही भागकर **जगदीशपुर** आ पहुंचे और कुंवर सिंह को **नेतृत्व** सौंप दिया।

- कुंवर सिंह ने **सर्वप्रथम** अपने जिला शाहाबाद को अंग्रेजी राज्य से मुक्त **करवाया** और वहाँ से आगे बढ़ते हुए **आजमगढ़** जिले (उ.प्र.) में **अतरौलिया** पहुंचे जहाँ **मिलमैन** के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को **हराया**।

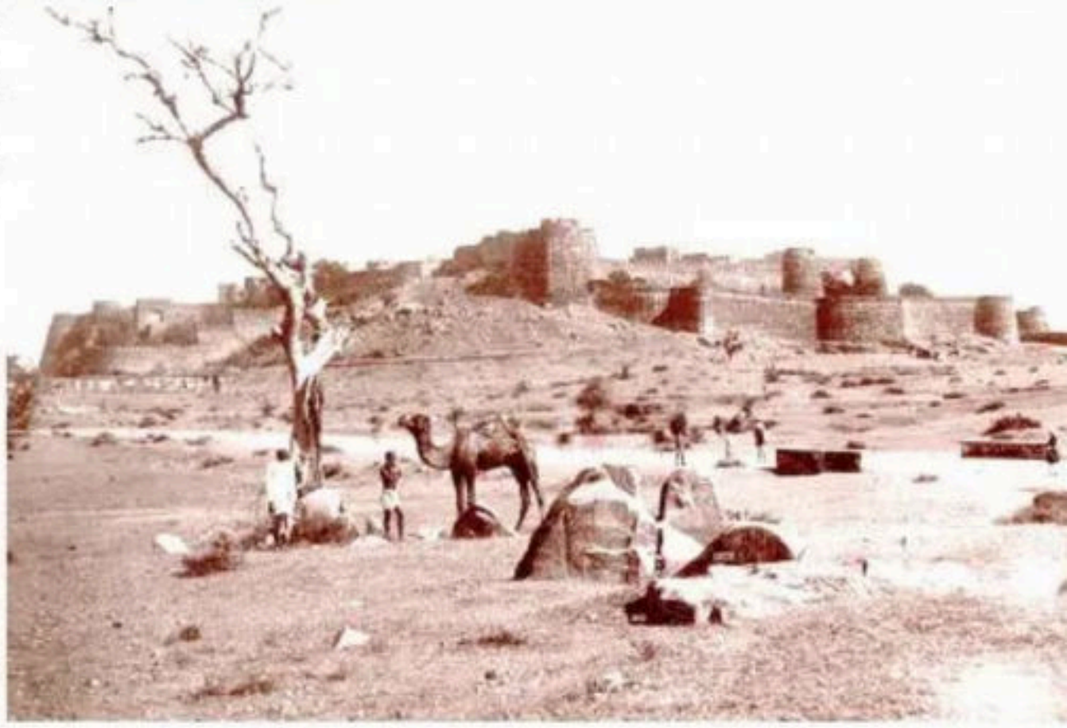


- **कुँवर सिंह** ने अपने विद्रोह का झण्डा बिहार से बाहर, मिर्जापुर, रीवा, बांदा तथा लखनऊ तक फहराया कुंवर सिंह को **पराजित** करने के लिए **मिलमैन** व डेप्स की संयुक्त सेना भेजी गयी, परंतु वह भी पराजित हुई। पुनः कैनिंग ने मार्क के नेतृत्व में सेना भेजी।

- **कुंवर सिंह** ने इसे भी धूल चटा दिया, किंतु बांह में **गोली** लगने से वह घायल हो गये, गोली का जहर शरीर में न फैले **इसलिए** अपनी बांह को काटकर गंगा में अर्पित कर दिया तथा 22 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर पहुंच गये।वहाँ पर इन्होंने **ली ग्रैण्ड** के नेतृत्व में **सिक्ख** सेना को भी **परास्त** कर दिया।

- घायल होने के कारण 26 अप्रैल 1858 ई. को **कुंवर सिंह की** मृत्यु हो गई।परंतु मृत्यु से पूर्व पूरे एक वर्ष तक इन्होंने अंग्रेजों को अनेकों बार **परास्त** किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् कुंवर सिंह के भाई अमर सिंह ने अंग्रेजों के **विरूद्ध संघर्ष जारी रखा**।

- किन्तु कुंवर सिंह की भाँति नेतृत्व कुशलता न होने के कारण उन्हें जगदीशपुर छोड़कर **भागना पड़ा** और अन्त में दिसम्बर 1858 में विलियम टेलर व विंसेट आयर ने बिहार के विद्रोह को सीमित कर दिया।



- बिहार के साथ ही असम, उड़ीसा, कुल्लू, पंजाब तथा दक्षिण भारत के कुछ भाग में विद्रोह की **आग** फैल चुकी थी।

- **असम** में 1857 के विद्रोह के समय वहाँ के अन्तिम राजा **(पुरन्दर सिंह)** के दीवान **मनिराम दत्त** (दीवान मनीराम बरुआ) ने उनके पोते कंदर्पश्वर सिंह को राजा घोषित कर दिया जिसे अंग्रेजों ने विद्रोह माना और **मनीराम** तथा कंदर्पश्वर सिंह को **गिरफ्तार** कर लिया गया।

- मनीराम दत्त पर कलकत्ता में मुकदमा **चलाकर** फांसी दे दी गयी।उड़ीसा में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह **सम्भलपुर** के राजकुमार **सुरेन्द्रशाही** और **उज्ज्वल शाही** ने किया।

- 1862 ई0 में सुरेन्द्रशाही ने **आत्मसमर्पण** कर दिया और इन्हें देश से निर्वासित कर दिया। इसी भाँति गंजाम के सावरों ने राधेकृष्ण दण्ड सेना के नेतृत्व में **परालकीमेडी** में विद्रोह की **पताका फहराई**।

- कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) की पहाड़ी में भी राजा प्रताप सिंह और भाई वीर सिंह द्वारा विद्रोह फैलाया गया। अन्त में इन्हें मृत्यु दण्ड दे दिया गया।



- राजस्थान में नसीराबाद, नीमच, अजमेर, आखू, एरिनपुरा, जोधपुर, कोटा, आउवा आदि स्थानों पर विदोह हुए। **कोटा विदोह का प्रमुख केन्द था।**

- यहाँ पर **जयदयाल** व उसके भाई **हरदयाल** ने नेतृत्व किया। मेजर बर्टन की कोटा में हत्या कर दी गयी।अंग्रेजों ने बाद में विदोह को कुचल दिया तथा जयदयाल को **तोप के मुंह में बांधकर उड़ा दिया गया,** उल्लेखनीय है कि आउवा के **ठाकुर कुशल सिंह** ने 1857 ई. की क्रान्ति में अंग्रेजों व जोधपुर की संयुक्त सेना को पराजित किया था।

- पंजाब का अधिकांश हिस्सा विद्रोह से मुक्त रहा। किंतु कुछ हिस्से जैसे गुड़गांव, मेवात, में **सदरूद्दीन** नामक किसान ने विद्रोह किया।

- **अहीरवाल** के **राव तुलाराम** व उनके भतीजे राव गोपालदेव ने संघर्ष में भाग लिया। इसी भांति पलवल, फरीदाबाद, बहादुरगढ़, फर्रुखनगर, जलंधर, फिल्लौर, रोहतक, हिसार, सिरसा, पानीपत, अंबाला आदि स्थानों पर विद्रोह हुआ।

- 16 नवंबर 1857 में नारनौल के निकट हुए विदोह में कमांडर कर्नलपानीपत में बूअली कलंदर के इमाम के नेतृत्व में विद्रोह हुआ।

- 1856-57 और 57-58 की पंजाब की प्रशासकीय रिपोर्ट में 386 व्यक्तियों को फांसी हुई थी। अंडमान जेल में क्रांतिकारियों को कैद करके जो **पहला जत्था** भेजा गया था उसमें भी 206 व्यक्ति पंजाब के थे।

- उत्तर भारत के अतिरिक्त दक्षिण भारत का कुछ क्षेत्र भी इस आग से बच नहीं पाया।**डॉ0 वी0डी0 दिवेकर ने 1993** में अपने शोध ग्रंथ **'साउथ इंडिया इन 1857 : वार ऑफ इंडिपेंडेंस'** में यह सिद्ध किया है कि यह विद्रोह वर्तमान के महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु व केरल राज्य में भी **पहुंच** गया था।यहाँ तक कि पुर्तगाली नियंत्रण में आने वाले **गोवा** व **पांडिचेरी** भी इससे प्रभावित हुए थे।

- महाराष्ट्र में विद्रोह का प्रारंभ **रंगो बापूजी** गुप्ते ने किया जो 1840 में सतारा के राजा प्रताप सिंह के **वकील** थे और सतारा को पुनः प्राप्त करने के लिए **लन्दन** गये, परन्तु वहाँ से उन्हें निराशा ही मिली।



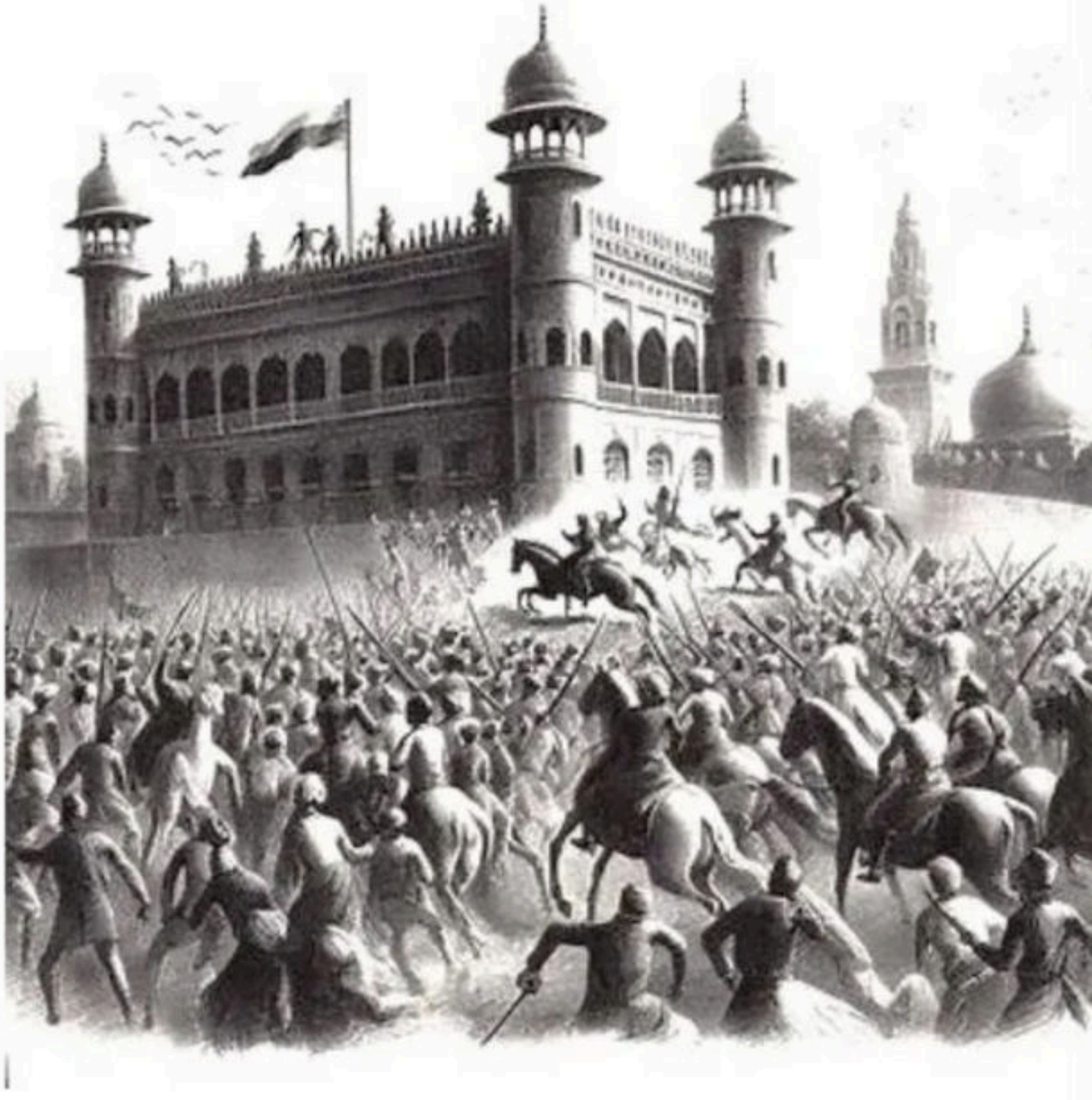
1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम असफल हुआ क्योंकि-

A. भारतीय सिपाहियों में उद्देश्य की एकता की कमी थी

B. प्रायः भारतीय राजाओं ने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया।

C. ब्रिटिश सिपाही कहीं अच्छे सज्जित तथा संगठित थे

D. उपर्युक्त सभी



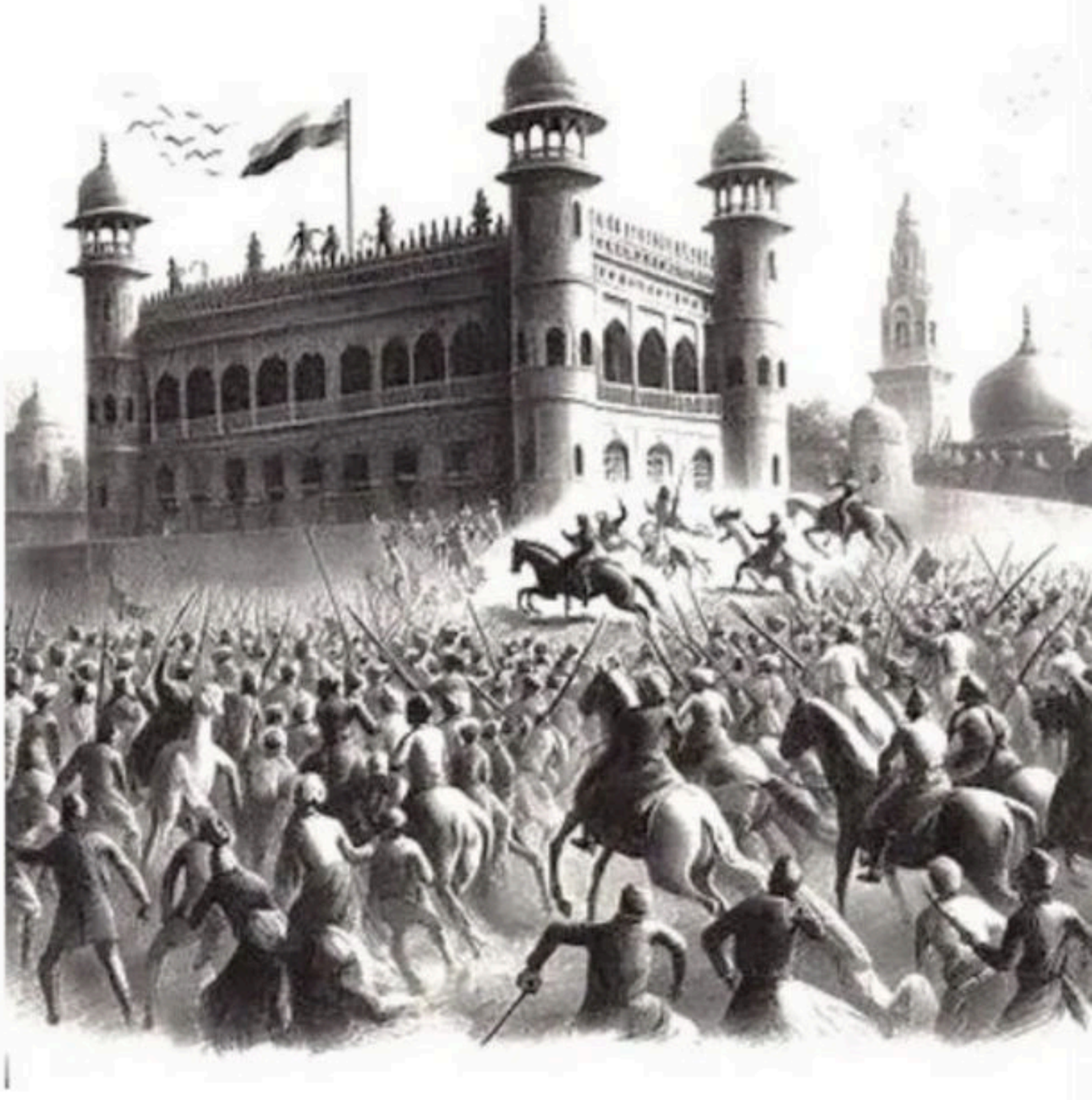
1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम असफल हुआ क्योंकि-

A. भारतीय सिपाहियों में उद्देश्य की एकता की कमी थी

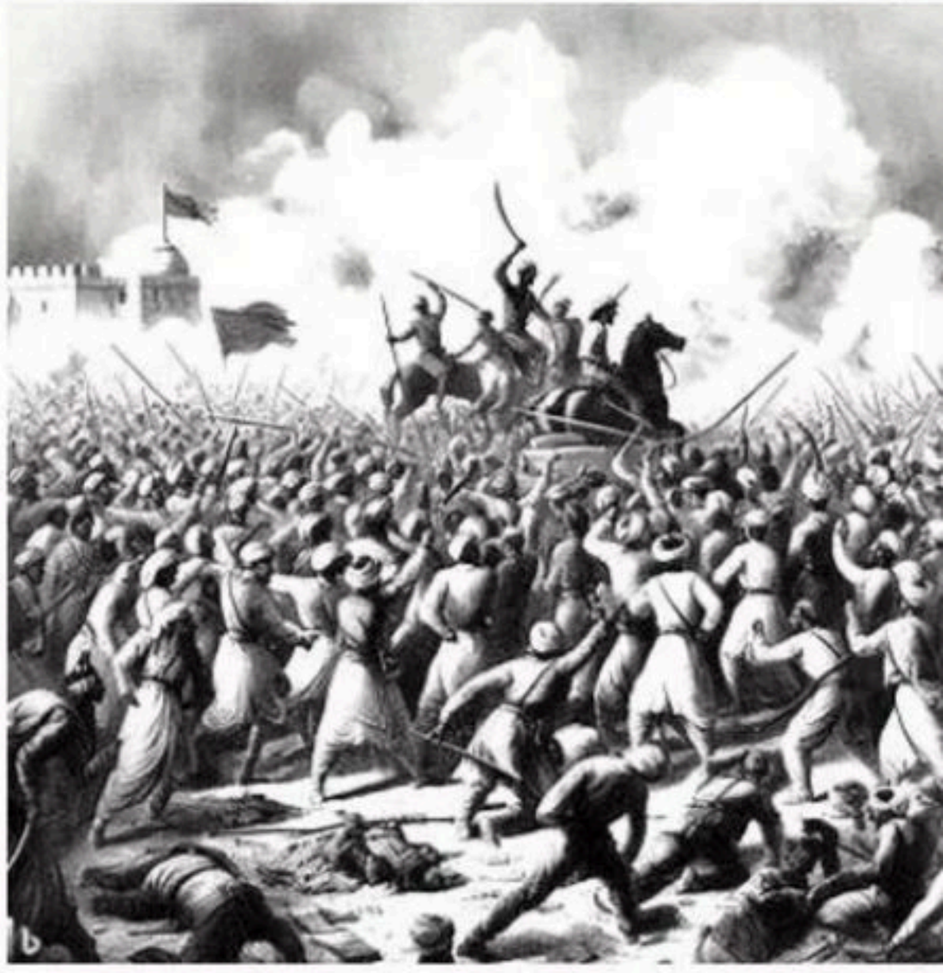
B. प्रायः भारतीय राजाओं ने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया।

C. ब्रिटिश सिपाही कहीं अच्छे सज्जित तथा संगठित थे

D. उपर्युक्त सभी



- अतः वापस आकर उन्होंने आम व्यक्तियों की सेना बनाई जिसने **10 जून 1857 ई.** में सतारा में तथा 13 जुलाई को **पंढरपुर** में विद्रोह कर दिया।
- कम्पनी ने विद्रोह को दबा दिया तथा रंगो बापूजी को समुद्र पार निष्कासित कर दिया।**सहयोगी मानसिंह** को 20 जून 1857 को खुलेआम फांसी की सजा दे दी गयी जिसने मरते समय कहा था कि "**अब अंग्रेजों का प्रभुत्व कम हो चुका है।**
- हिंदू और मुसलमानों की संतानों उठो, भारतीय इतिहास के इस मोड़ पर **केवल दर्शनार्थी मत बनो।**" पूना जो पूर्व में पेशवाओं की राजधानी थी, में विद्रोह की आग सुलग रही थी।
- नाना साहेब का वहाँ के निवासियों से पत्र व्यवहार होता था।22 मई 1857 को नगर की **जामा मस्जिद** में अंग्रेजों के विरोध में दिल्ली की विजय के लिए दुआएं की गयी, नाना साहेब का घोषणा पत्र मराठी भाषा में व **वाचनालयों** में बाँटा गया। कोल्हापुर, रत्नागिरि व बंबई में भी विद्रोह की तैयारी की गई।
- परंतु योजना के प्रमुख रचनाकार **सैयद हुसैन** व मंगल को **सरेआम तोप से उड़ा दिया गया** और विद्रोह को दबा दिया गया।



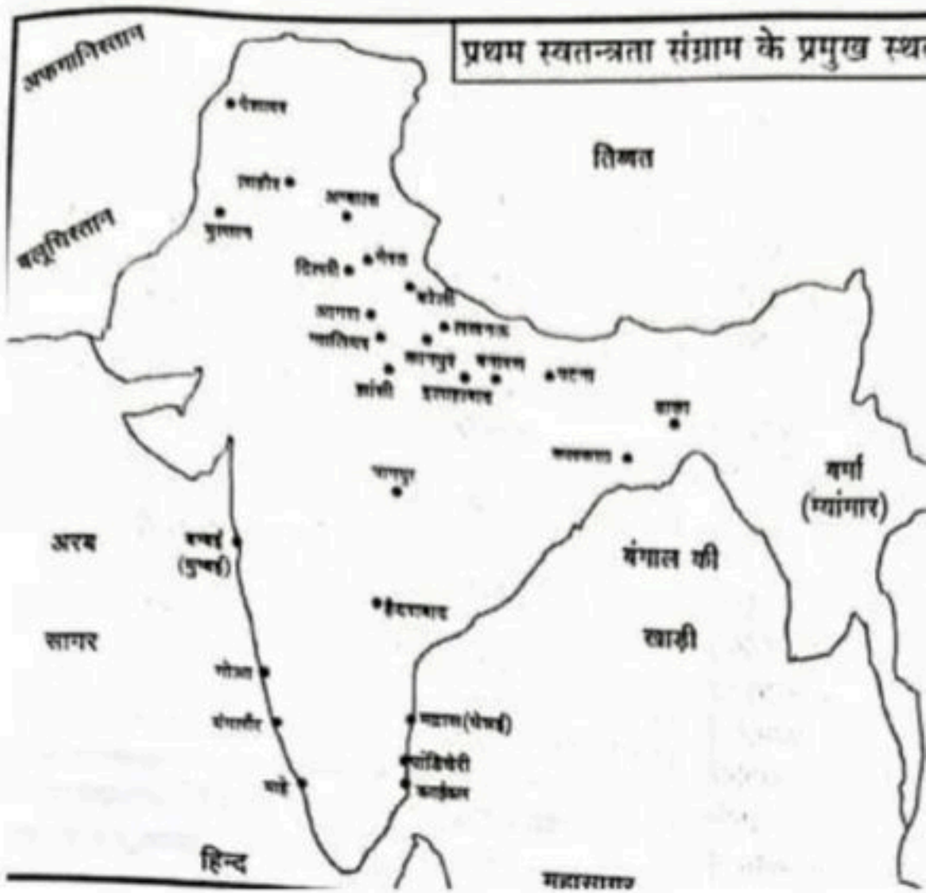
- हैदराबाद में **सोनाजी पंत व रंगराव पांगे** ने विद्रोह की चिंगारी को हवा दी तथा नाना साहेब का घोषणा पत्र समूचे दक्षिण भारत में भेजा गया जिसमें पटेलों, **कुलकर्णियों**, **सिपाहियों**, अफसरों तथा आम जनता से संघर्ष के लिए **आह्वान** किया गया।

- 1858 में रंगराव पांगे को गिरफ्तार कर **अंडमान निर्वासित** कर दिया गया।बंगलौर में किसानों ने विद्रोह किया।

- 1858 में गोलकुंडा में **चिंताभूपति** और उसके भतीजे **संन्यासी भूपति** ने विद्रोह किया।प्रकार यह विद्रोह हैदराबाद से होता हुआ राजमहेन्द्री, कुसूल, गुंटूर, कडप्पा, विशाखापट्टनम, मछलीपट्टनम, नैलोर, मैसूर, कारवाड़, धारवाड़, बीजापुर एवं शोरापुर तक फैल गया।

- शोरापुर के राजा ने नाना साहेब को विद्रोह के लिए **संदेश** भेजे थे। कारवाड़ में डिंगी पहाड़ियों व डिंगरोली जंगल में विद्रोहियों व अंग्रेजों से संघर्ष हुआ। जिसमें राघोबा **फड़नवीस**, **शांताराम** फड़नवीस और सिद्दी बोनेव को गिरफ्तार करके फांसी की सजा दी गयी और **विद्रोह** को दबा दिया गया।

- मद्रास (तमिलनाडु) में जून 1857 में प्रथम मद्रास सैनिक **पल्टन** ने कूच करने से मना कर दिया था।



- यहाँ के दो हिंदू मंदिर **मनिपकम** व **पल्लवरम** विद्रोहियों की गुप्त **कार्यवाहियों** के प्रमुख केंद्र थे तथा **अरनागिरी व कृष्णा** दो प्रमुख नेता थे जो **ज्योतिषी** के भेष में रहते थे।
- जुलाई 1857 में मुगल सम्राट के रिश्तेदार **सुल्तान** बखा भी इस संघर्ष में **सम्मिलित** हो गये।केरल भी इस विद्रोह की **चिंगारी** से अछूता नहीं रहा।
- **कोचीन, किणलोन एवं कालीकट में विद्रोह हुए।**
- सितंबर 1857 में विजय **कुदारत**, बानाजी **कुदारत**, कुंजी मामा को उत्तेजक भाषण देने के लिए तेलीचैरी में 8 वर्ष के लिए दण्डित किया गया।
- इसी समय **कुनी मोई** को भी पकड़ लिया गया। फिर भी यह संघर्ष 1859 तक चलता रहा। बाद में अंग्रेजों ने इस पर काबू पा लिया। गोवा में **दीपूजी राणा** ने विद्रोह किया था जिसे बाद में **गिरफ्तार** कर लिया गया।ठीक इसी प्रकार, 1857 का विद्रोह **पूर्वोत्तर** के क्षेत्रों से भी **अछूता** नहीं था।



- प्रो. डेविड आर. सीमलीह के एक आलेख 'पूर्वोत्तर भी पीछे नहीं था, इस आन्दोलन में द्वारा इस बात को उजागर किया गया है।
- इस आलेख में कहा गया है कि वहाँ पूर्ण रूप से क्षोभ और असंतोष था तथा त्रिपुरा, असम एवं मणिपुर में विद्रोह की वारदातें हुई तथा लोगों को दण्डित किया गया।
- इस प्रकार 1857 का विद्रोह लगभग पूरे देश में फैल गया था, परंतु पंजाब के अधिकतर भूपति, बंगाल, मद्रास, राजपूताना, कश्मीर के महाराजा, हैदराबाद का निजाम, पटियाला नाभा, जींद के सिक्ख शासक, इंदौर के होल्कर, ग्वालियर के सिंधिया, बड़ौदा के गायकवाड़, भोपाल के नवाब, टीकमगढ़ व टेहरी के राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया और इस तूफान को रोकने में बांध की भाँति काम किया, नहीं तो इतिहास कुछ और ही होता।



ALLAHABAD: MONDAY, 1st NOVEMBER 1858.

THE RIGHT HONOURABLE THE GOVERNOR GENERAL has received Her Command to cause to be made known the following gracious DECLARATION of HER MAJESTY to the PRINCES, the CHIEFS and the PEOPLE of INDIA.

Proclamation by the Queen in Council,

TO THE PRINCES, CHIEFS, AND PEOPLE OF INDIA.

Victoria,

BY THE GRACE OF GOD, OF THE UNITED KINGDOM OF GREAT BRITAIN AND IRELAND, AND OF THE COLONIES AND DEPENDENCIES THEREOF IN EUROPE, ASIA, AFRICA, AMERICA, AND AUSTRALASIA,

Queen, Defender of the Faith.

WHEREAS, for divers weighty reasons, We have resolved, by and with the advice and consent of the Lords Spiritual and Temporal, and Commons, in Parliament assembled, to take upon Ourselves the Government of the Territories in INDIA heretofore administered in trust for Us by the HONOURABLE EAST INDIA COMPANY:

NOW, therefore, We do by these Presents notify and declare that, by the advice and consent aforesaid, We have taken upon Ourselves the said Government; and We hereby call upon all Our Subjects within the said Territories to be faithful, and to bear true Allegiance to Us, Our Heirs and Successors, and to submit themselves to the authority of those whom We may hereafter, from time to time, see fit to appoint to administer the Government of Our said Territories, in Our name and on Our behalf.

And We, reposing especial trust and confidence in the loyalty, ability and judgment of Our right trusty and well-beloved CHARLES JOHN VISCOUNT CANNING, do hereby constitute and appoint him, the said VISCOUNT CANNING, to be Our first Viceroy and Governor General in and over Our said Territories, and to administer the Government thereof in Our name, and generally to act in Our name and on Our behalf, subject to such Orders and Regulations as he shall, from time to time, receive from Us through one of Our principal Secretaries of State.

And We do hereby confirm in their several Offices, Civil and Military, all Persons now employed in the Service of the HONOURABLE EAST INDIA COMPANY, subject to the future pleasure of Ourselves, and to such Laws and Regulations as may hereafter be enacted.

We hereby announce to the Native Princes of India that all Treaties and Engagements made with them by or under the authority of the HONOURABLE EAST INDIA COMPANY are by Us accepted, and will be scrupulously maintained; and We look for the like observance on their part.

We desire no extension of Our present territorial Possessions; and while We will permit no aggression upon Our Dominions or Our Rights to be attempted with impunity, We shall sanction no encroachment on those of others. We shall respect the Rights, Dignity, and Honour of Native Princes as Our own; and We desire that they, as well as Our own Subjects, should enjoy that Prosperity and that social Advancement which can only be secured by internal Peace and good Government.

We hold Ourselves bound to the Natives of Our Indian Territories by the same Obligations of Duty which bind Us to all Our other Subjects; and those Obligations, by the blessing of ALMIGHTY GOD, We shall faithfully and conscientiously fulfil.

Firmly relying Ourselves on the truth of Christianity, and acknowledging with gratitude the solace of Religion, We disclaim alike the Right and the Desire to impose Our Convictions on any of Our Subjects. We declare it to be Our Royal Will and Pleasure that none be in any wise favoured, none molested or disquieted, by reason of their Religious Faith or Observances; but that all shall alike enjoy the equal and impartial protection of the Law: and We do strictly charge and enjoin all those who may be in authority under Us, that they abstain from all interference with the Religious Belief or Worship of any of Our Subjects, on pain of Our highest Displeasure.

And it is Our further Will that, so far as may be, Our Subjects, of whatsoever Race or Creed, be freely and impartially admitted to Offices in Our Service, the Duties of which they may be qualified, by their education, ability, and integrity, duly to discharge.

We know, and respect, the feelings of attachment with which the Natives of INDIA regard the Lands inherited by them from their Ancestors; and We desire to protect them in all Rights connected therewith, subject to the equitable demands of the State: and We will that generally, in framing and administering the Law, due regard be paid to the ancient Rights, Usages, and Customs of India.

We deeply lament the evils and misery which have been brought upon India by the acts of ambitious Men, who have deceived their Countrymen by false reports, and led them into open Rebellion. Our Power has been shown by the Suppression of that Rebellion in the field; We desire to show our Mercy, by pardoning the Offences of those who have been thus misled, but who desire to return to the path of Duty.

Already in one Province, with a view to stop the further effusion of blood, and to hasten the Pacification of Our Indian Dominions, Our Viceroy and Governor General has held out the expectation of Pardon, on certain terms, to the great majority of those who, in the late unhappy Disturbances, have been guilty of Offences against our Government, and has declared the Punishment which will be inflicted on those whose Crimes place them beyond the reach of Forgiveness. We approve and confirm the said act of Our Viceroy and Governor General, and do further announce and proclaim as follows:—

Our Clemency will be extended to all Offenders, save and except those who have been, or shall be, convicted of having directly taken part in the Murder of British Subjects. With regard to such, the demands of Justice forbid the exercise of Mercy.

To those who have willingly given asylum to Murderers, knowing them to be such, or who may have acted as Leaders or Instigators in Revolt, their Lives alone can be guaranteed; but in apportioning the Penalty due to such Persons, full consideration will be given to the circumstances under which they have been induced to throw off their Allegiance; and large indulgence will be shown to those whose Crimes may appear to have originated in too credulous acceptance of the false reports circulated by designing Men.

To all others in Arms against the Government, We hereby promise unconditional Pardon, Amnesty, and Oblivion of all Offence against Ourselves, Our Crown and Dignity, on their return to their homes and peaceful pursuits.

It is Our Royal Pleasure that these Terms of Grace and Amnesty should be extended to all those who comply with their Conditions before the First Day of January next.

When, by the Blessing of PROVIDENCE, internal Tranquillity shall be restored, it is Our earnest Desire to stimulate the peaceful Industry of INDIA, to promote Works of Public Utility and Improvement, and to administer its Government for the benefit of all Our Subjects resident therein. In their Prosperity will be Our Strength; in their Contentment, Our Security; and in their Gratitude, Our best Reward. And may the God of all Power grant to Us, and to those in authority under Us, Strength to carry out these Our Wishes for the good of Our People.

The proclamation to the "Princes, Chiefs, and People of India," issued by Queen Victoria on 1 November 1858. "We hold ourselves bound to the natives of our Indian territories by the same obligation of duty which bind us to all our other subjects." (p. 2)

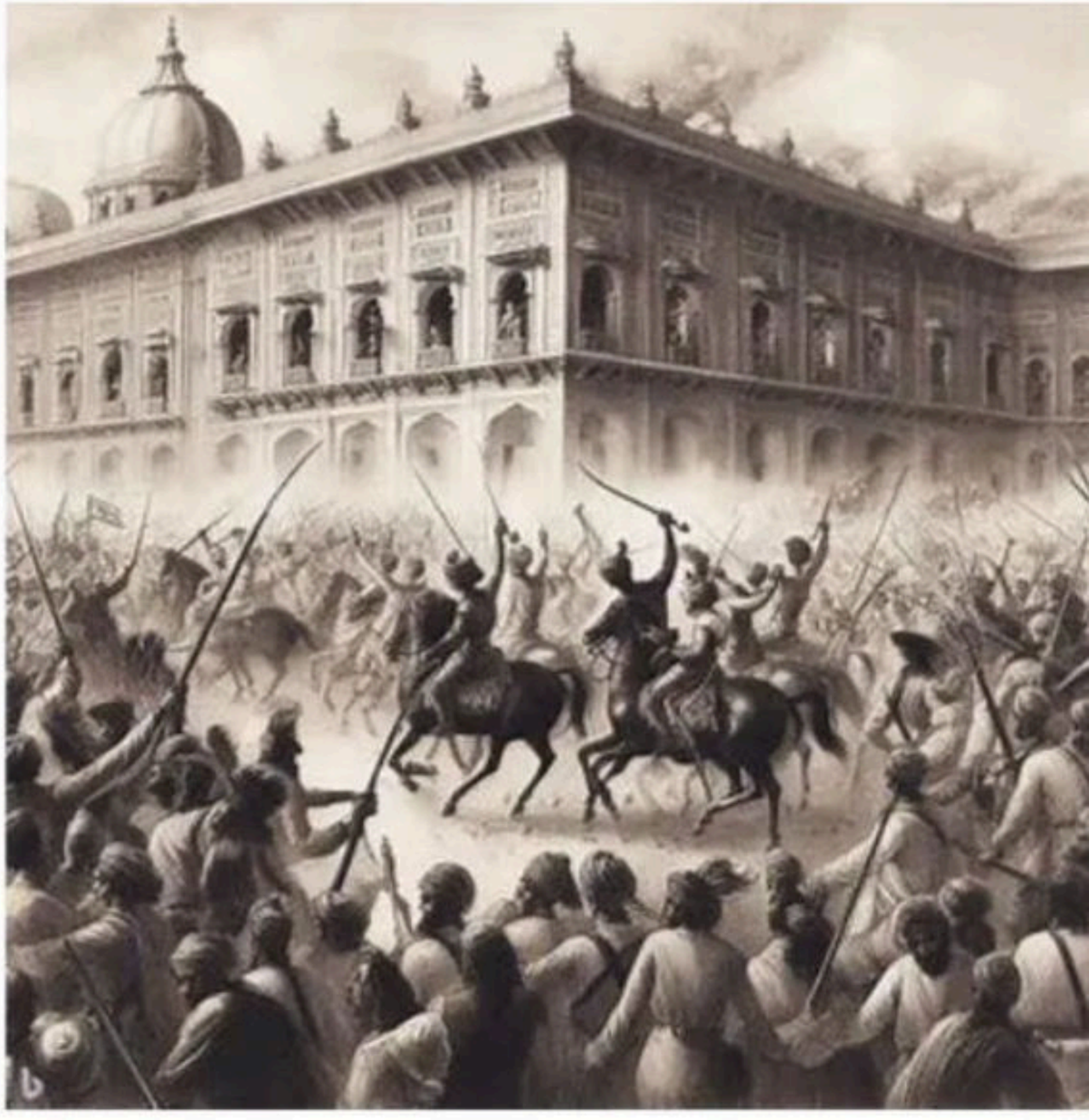
भारत में शिक्षित मध्यवर्ग ने-

A. 1857 के विद्रोह का विरोध किया था

B. 1857 के विद्रोह का समर्थन किया था

C. 1857 के विद्रोह से तटसत्था बनाए रखी थी।

D. देशी शासकों के विरुद्ध युद्ध किया था।



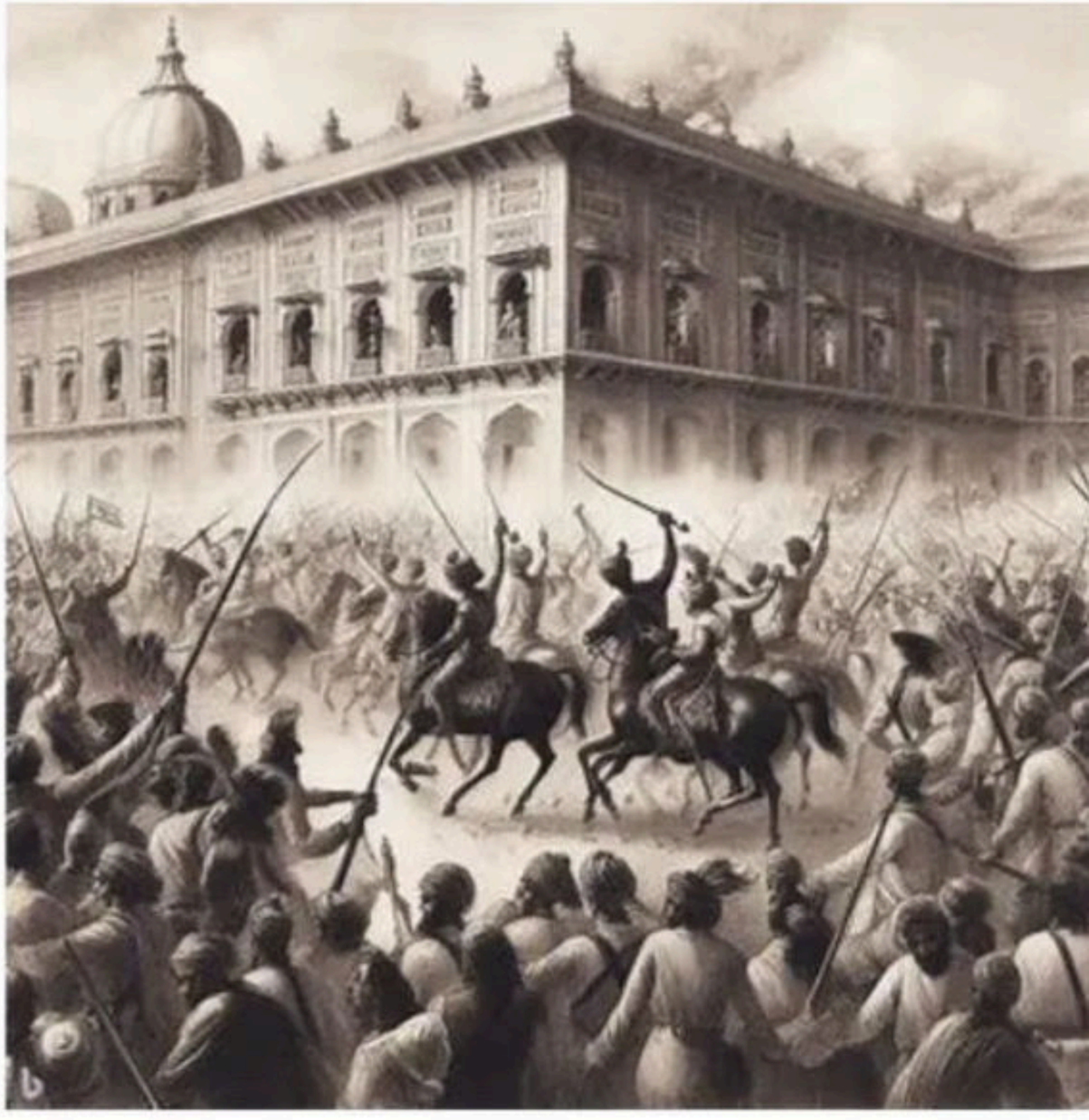
भारत में शिक्षित मध्यवर्ग ने-

A. 1857 के विद्रोह का विरोध किया था

B. 1857 के विद्रोह का समर्थन किया था

C. 1857 के विद्रोह से तटसत्था बनाए रखी थी।

D. देशी शासकों के विरुद्ध युद्ध किया था।



1857 के विद्रोह के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में क्या सत्य है ?

1. विद्रोह का सबसे तेज प्रसार अवध में था
2. मद्रास विद्रोह से अछूता बना रहा
3. फैजाबाद में विद्रोह को जेहाद से जोड़ा गया
4. मुजफ्फर नगर को जनता ने अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त करा लिया था

(a)1,2

(b)1,3

(c)1,2,3

(d)1,2,3,4

1857 के विद्रोह के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में क्या सत्य है ?

1. विद्रोह का सबसे तेज प्रसार अवध में था
2. मद्रास विद्रोह से अछूता बना रहा
3. फैजाबाद में विद्रोह को जेहाद से जोड़ा गया
4. मुजफ्फर नगर को जनता ने अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त करा लिया था

(a)1,2

(b)1,3

(c)1,2,3

(d)1,2,3,4

किस क्रांतिकारी ने 1857 की क्रांति के समर्थन के लिए फ़्रांस के राजा को पत्र लिखा था ?

A. बहादुर शाह ज़फर
B. अताउल्ला खा
C. नाना साहब
D. कुंवर सिंह

किस क्रांतिकारी ने 1857 की क्रांति के समर्थन के लिए फ़्रांस के राजा को पत्र लिखा था ?

A. बहादुर शाह ज़फर
B. अताउल्ला खा
C. नाना साहब
D. कुंवर सिंह

कथन (A) 1857 विद्रोह के प्रारंभ में नाना साहब ने कानपुर को जीत लिया

कारण (R) नाना साहब द्वारा जनरल ह्यू व्हीलर के सैनिकों तथा उनके परिवारों को मौत के घाट उतारने के प्रमाण हैं.

(a)A और R दोनों सही है और R कथन A की सही व्याख्या है

(b)A और R दोनों सही है लेकिन R कथन A की सही व्याख्या नहीं है

(c)A सही है लेकिन R गलत है

(d)R सही है लेकिन A गलत है

कथन (A) 1857 विद्रोह के प्रारंभ में नाना साहब ने कानपुर को जीत लिया

कारण (R) नाना साहब द्वारा जनरल ह्यू व्हीलर के सैनिकों तथा उनके परिवारों को मौत के घाट उतारने के प्रमाण हैं.

(a)A और R दोनों सही है और R कथन A की सही व्याख्या है

(b)A और R दोनों सही है लेकिन R कथन A की सही व्याख्या नहीं है

(c)A सही है लेकिन R गलत है

(d)R सही है लेकिन A गलत है

1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई के सन्दर्भ में कौन सा कथन असत्य है ?

(a)शुरू में षड्यंत्रों के चलते कालपी में रानी लक्ष्मीबाई ह्यूरोज से हार गयीं

(b)ग्वालियर के सिंधिया ने रानी की मदद की

(c)अंग्रेज कमांडर स्मिथ रानी से डरकर पलायन कर गया

(d)रानी और सिंधिया की सेना ने ग्वालियर में ह्यूरोज को हरा कर अपनी पराजय का बदला ले लिया

1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई के सन्दर्भ में कौन सा कथन असत्य है ?

(a)शुरू में षड्यंत्रों के चलते कालपी में रानी लक्ष्मीबाई ह्यूरोज से हार गयीं

(b)ग्वालियर के सिंधिया ने रानी की मदद की

(c)अंग्रेज कमांडर स्मिथ रानी से डरकर पलायन कर गया

(d)रानी और सिंधिया की सेना ने ग्वालियर में ह्यूरोज को हरा कर अपनी पराजय का बदला ले लिया

किस इतिहासकार ने कहा है ?

"1857 का विद्रोह विदेशी सत्ता को पुराने ढंग से हटाने की आखिरी लड़ाई थी, इसे विद्रोह भी कह सकते हैं और आजादी की लड़ाई भी, खास बात यह है कि इसमें हार मिली, इससे बुद्धिजीवी वर्ग ने सबक ली वे समझ गए कि यह पुराने किस्म का विदेशी शासक नहीं है, इसलिए उसके खिलाफ लड़ाई दूसरे ढंग से लड़ी जाए।

A.सुब्रमण्यम
B.बिपन चन्द्र
C.सतीश चन्द्र
D.एम् अतहर अली

किस इतिहासकार ने कहा है ?

"1857 का विद्रोह विदेशी सत्ता को पुराने ढंग से हटाने की आखिरी लड़ाई थी, इसे विद्रोह भी कह सकते हैं और आजादी की लड़ाई भी, खास बात यह है कि इसमें हार मिली, इससे बुद्धिजीवी वर्ग ने सबक ली वे समझ गए कि यह पुराने किस्म का विदेशी शासक नहीं है, इसलिए उसके खिलाफ लड़ाई दूसरे ढंग से लड़ी जाए।

A.सुब्रमण्यम
B.बिपन चन्द्र
C.सतीश चन्द्र
D.एम् अतहर अली

unacademy

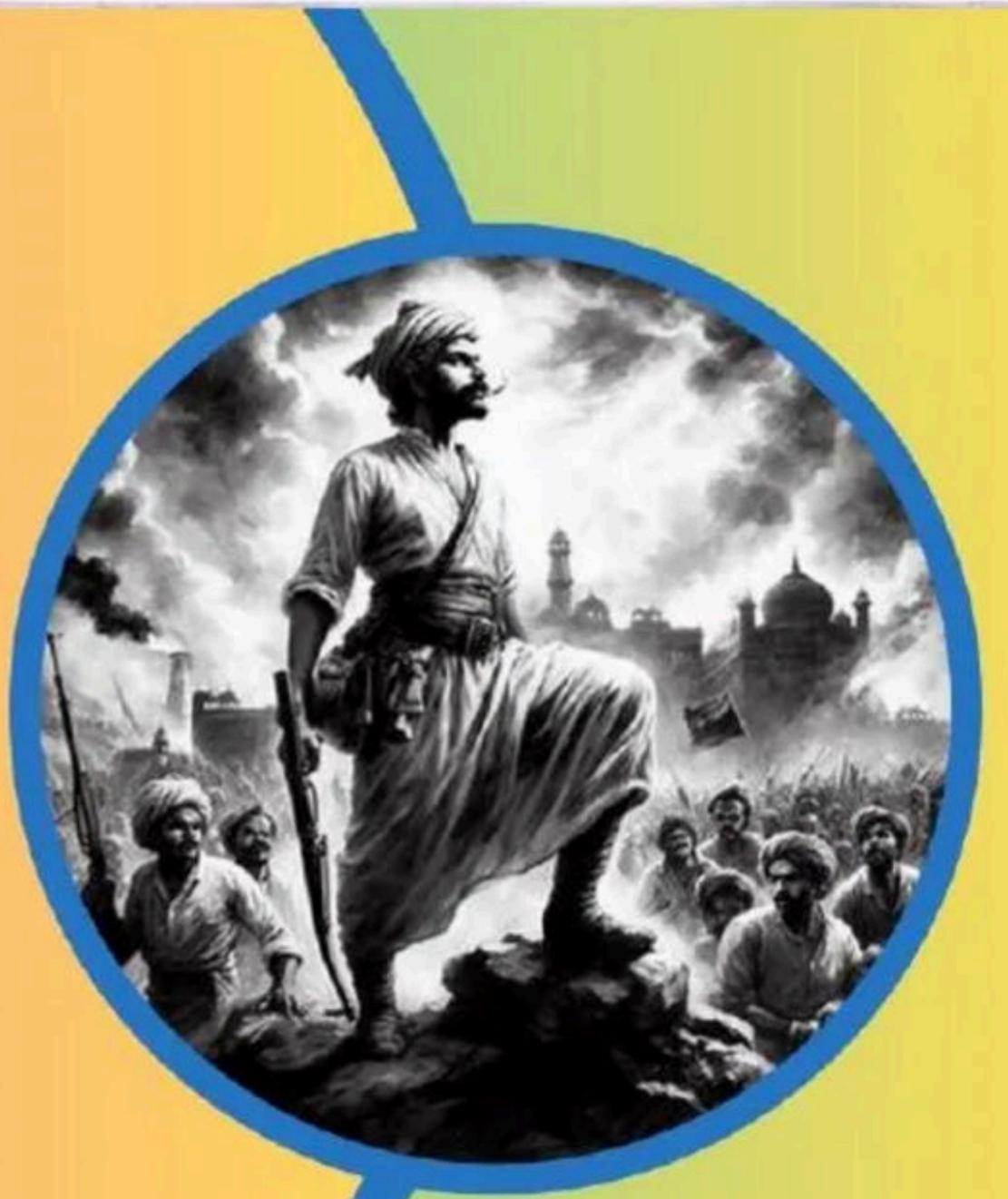
▲ 1 • Asked by Ashish

Raani ne ek saal baad kyon join kiya revolt?

HISTORY

1857 REVOLT
PART-II





DR AMIT KUMAR SINGH

MA.M.PHIL,PHD.JNU,NEW DELHI

सत्तावन के विद्रोह में विभिन्न वर्गों की भूमिका

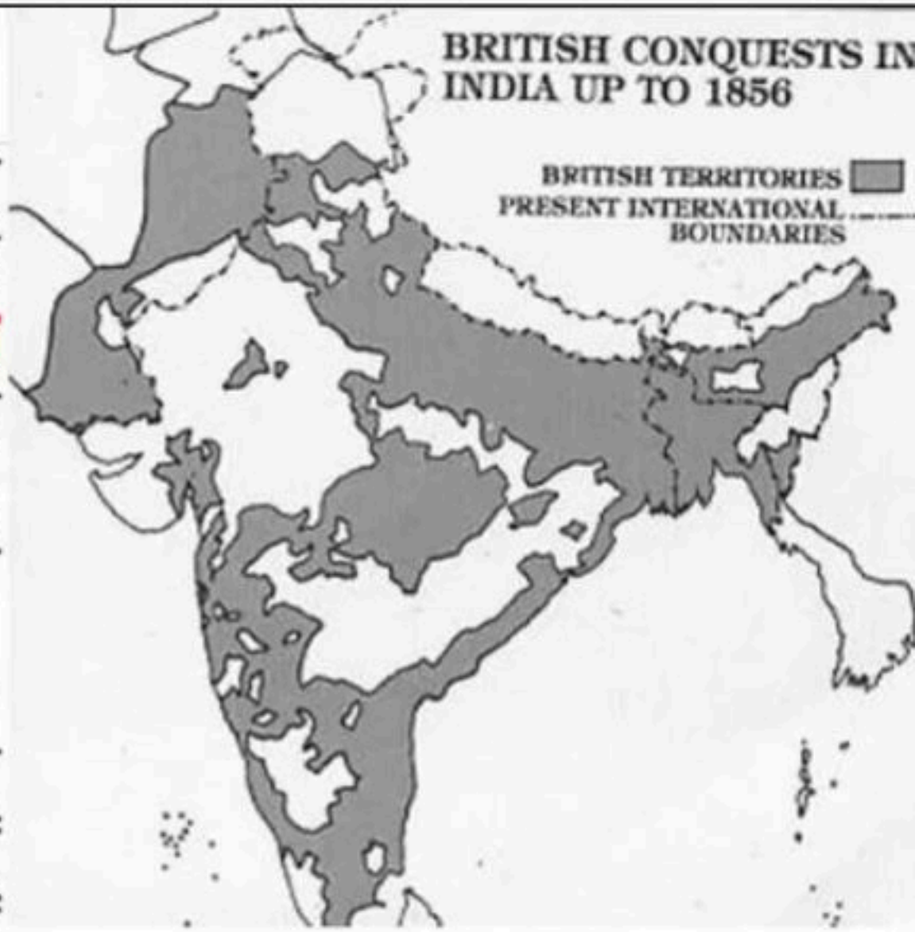
unacademy

- सन् 1857 के विप्लव में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भूमिका एक-समान नहीं रही है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि **कृषक वर्ग की सहानुभूति इस राष्ट्रीय संघर्ष के साथ थी** तथा अनेक क्षेत्रों में अपनी भागीदारी के द्वारा उन्होंने इसे एक व्यापक **सामाजिक आधार** प्रदान किया था, किन्तु यह भागीदारी इस सीमा तक नहीं थी कि **संघर्ष** को **कृषक** संघर्ष की **संज्ञा दी जा सके।**

© Dr Amit Kumar

- राजा, रजवाड़ों व जमींदारों से बने **सामंत वर्ग** की भूमिका का चरित्र दोहरा था। इस वर्ग का एक **हिस्सा**, जो अंग्रेजों की नीतियों से **बर्बाद** हो गया था या निकट भविष्य में बर्बाद होने वाला था, विप्लव का **सक्रिय भागीदार** ही नहीं रहा, अपितु इसे **नेतृत्व** भी प्रदान किया।

- दूसरी ओर यह भी तथ्य है कि अगर **हैदराबाद**, **ग्वालियर**, **नेपाल** व **पंजाब** के सामंती तत्वों ने साम्राज्यवाद का साथ नहीं दिया होता तो स्थिति ब्रिटिश राज्य के लिए संकटमय तथा जानलेवा हो जाती।



- नवोदित शिक्षित मध्यम वर्ग न केवल क्रान्ति में भागीदारी करने से अलग रहा, अपितु वह इसका **मुखर आलोचक** था।
- उसकी दृष्टि में विद्रोह पुरानी राजशाही व्यवस्थाओं और अराजकता की **बहाली का प्रयास** था और इस प्रयास की सफलता की कामना पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति से **अभिभूत यह वर्ग नहीं करता था।**
- **साहूकार**, **महाजन** तथा **व्यापारी** वर्ग ने कभी भी दिल से क्रान्ति का साथ **नहीं दिया**, उन्होंने धन और सामग्री के रूप में जोभी सहायता प्रदान की, वह परिस्थितियों से **विवश** होकर की। अतः यह वर्ग भी क्रान्ति के **समर्थक** या **सहयोगी** वर्ग के रूप में **नहीं** लिया जा सकता है।
- उच्च वर्ग के लोग इस क्रान्ति की **विजय** की अपेक्षा उसकी हार से अधिक **भयभीत** हो गए, जिसके परिणामस्वरूप सामंतवादी एवं धनी वर्ग ने जनता के हितों के प्रति **विश्वासघात** किया, जमींदार, व्यापारी, साहूकार, शिक्षित मध्यमवर्गीय लोग एवं भारतीय पदाधिकारियोंसभी ने अंग्रेजों के प्रति सहानुभूति अथवा **उदासीनतापूर्ण तटस्थता** पकड़ की



- इसी कारण कुछ विद्वान् इस **सामंतवादी तटस्थता** को क्रान्ति की **असफलता** का एक महत्त्वपूर्ण कारण बतलाते हैं।

- ब्रिटिश नीतियों का प्रभाव रियासतों के राजाओं, सैनिकों, जमींदारों, कृषकों (उच्च), व्यापारियों को छोड़ समाज के **सभी वर्गों पर पड़ा**। इसी कारण प्रभावित सभी सामाजिक वर्गों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्रोह में अपनी **भूमिका निभाई**।



विद्रोह के कारण (Causes of Revolt)

- 1857 के विद्रोह के स्वरूप की भांति उसके **कारणों** को लेकर भी विचारकों में पर्याप्त **मतभेद** है।

- बहुत से अंग्रेजी और भारतीय इतिहासकारों ने सैनिक **असंतोष** को 1857 के विद्रोह का कारण माना है, परन्तु **आधुनिक इतिहासकारों** ने अपने गहन **विश्लेषण** से यह सिद्ध कर दिया कि सैनिक विद्रोह ही इस विद्रोह का **एकमात्र महत्वपूर्ण कारण नहीं था** बल्कि इस विस्फोट के लिए **मेघखण्ड** तो ब्रिटिश राज्य की स्थापना (1757) के साथ ही **एकत्रित** होने लगे थे

© Dr Amit Kumar Singh

- और 29 मार्च 1857 को **मंगल पाण्डे द्वारा अंग्रेज एजुडेंट** की हत्या के साथ ही फट पड़े तथा उस बहाव को और अधिक भयंकर **प्रलयकारी** बनाने का कार्य ब्रिटिश **आर्थिक** शोषण ने किया जो राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक व धार्मिक कारणों की आड़ लेकर अपने **100** वर्ष के शासन में ब्रिटिश शासकों ने किया था।

- इस प्रकार 1857 के विद्रोह को जन्म देने वाले कारणों में **सैनिक** विद्रोह के साथ **राजनीतिक**, **आर्थिक**, **सामाजिक** एवं **धार्मिक** सभी कारण महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं जिनका विस्तृत **विश्लेषण** निम्नवत् है-



© Dr. Amit Kumar S

राजनीतिक एवं प्रशासनिक कारण(Political and Administrative Causes)

- 1857 के विद्रोह के लिए कई **राजनीतिक** कारण प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं जिसमें **सर्वप्रमुख** नीति **लार्ड वेलेजली** की **सहायक संधि** और लार्ड **डलहौजी** की **'व्यपगत नीति'** (doctrine of lapse) रही।

- अंग्रेजों की साम्राज्यवादी पिपासा को शांत करने के लिए **सर्वप्रथम वेलेजली** ने भारतीय रियासतों पर नियंत्रण करने और धीरेधीरे उनकी **समाप्ति** की नीति बनाई। जिसे **सर्वप्रथम** (1798) में **हैदराबाद** के **निजाम** ने स्वीकार किया।

- उसके पश्चात् **मैसूर (1799), तंजौर (अक्टूबर 1799), अवध (नवम्बर 1801), पेशवा (दिसम्बर 1802), भोंसले (1803), सिंधिया (1804)** ने यह संधि स्वीकार की। इसके अतिरिक्त **जोधपुर, जयपुर, मच्छेद्री, बूंदी** तथा **भरतपुर** भी इस संधि के अन्तर्गत आ गये।

- इस तरह भारतीय रियासतों के **शासन** कार्य ब्रिटिश **नियंत्रण** में आ गये। परन्तु अंग्रेजों को इतने से **संतुष्टि नहीं मिली** और वे भारतीय राज्यों को पूर्ण रूप से अंग्रेजी शासन का **हिस्सा** बनाना चाहते थे।

- इस सोच को वास्तविक रूप **डलहौजी** के समय (1848-56) **विलय** की नीति के माध्यम से प्रदान किया गया। डलहौजी ने **नैतिक** व **राजनैतिक** आचार की सभी सीमाओं को ध्वस्त करते हुए बड़े अनुचित तरीके से देशी राज्यों का **विलय** किया तथा गोद लेने की प्रथा का निषेध करते हुए उसने **सतारा** (1848), **जैतपुर** व **संभलपुर** (1849), **बघाट** (1850), **उदेपुर** (1852), **झांसी** (1853) तथा **नागपुर** (1854) का विलय अंग्रेजी साम्राज्य में कर लिया। **तंजौर** व **कर्नाटक** के नवाबों की उपाधियाँ छीन ली गयी।



- 1831 ई0 के बाद **मैसूर के राजा को भी पेंशन दे** दी गयी तथा **पेशवा बाजीराव द्वितीय** के दत्तक पुत्र नाना साहेब की पेंशन को भी समाप्त कर दिया गया।

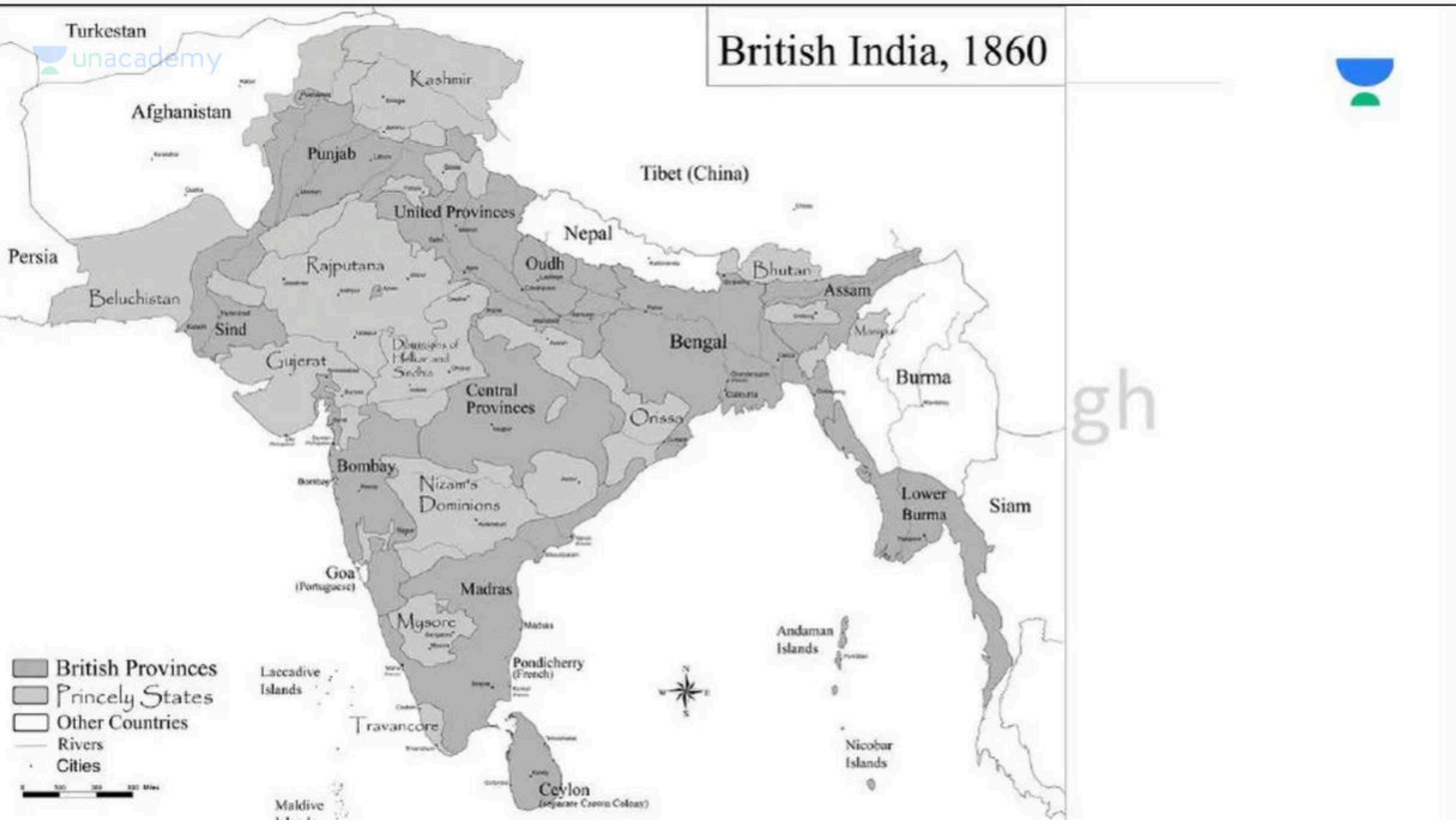
- इसी भाँति **अवध** का राज्य, जो अंग्रेजों का **वफादार** रहा उसके नवाब वाजिद अली शाह को कुशासन के आधार पर फरवरी 1856 ई. में अपदस्थ करके ब्रिटिश **साम्राज्य** में मिला लिया गया। अवध को एक चीफ **कमिश्नरी** बनाया गया जिसका कमिश्नर हेनरी **लारेन्स** को नियुक्त किया गया।

- अंग्रेजों के इस कृत्य से अवध **असंतोष** का अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया।उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त अंग्रेजों ने मुगल बादशाह बहादुरशाह द्वितीय के साथ जो **अपमानजनक** व्यवहार किया उससे मुस्लिम भावनाएं भी गम्भीर रूप से आहत हुई।

- ध्यातव्य है कि 1803 से ही मुगल सम्राट **ब्रिटिश संरक्षण** में आ गया था। परन्तु लार्ड एमहर्ट 1823 ई0 में बादशाह अकबर-II के दरबार में बराबरी स्तर पर मिला था।

- इसके पश्चात् गर्वनर जनरल **आकलैण्ड** (1836-42) ने बादशाह को अपने दावे व अधिकार **छोड़ने** को कहा था।




British India, 1860
Turkestan
Afghanistan
Kashmir
Punjab
Tibet (China)
United Provinces
Nepal
Persia
Rajputana
Oudh
Bhutan
Assam
Beluchistan
Sind
Bengal
Gujerat
Burma
Central Provinces
Orissa
Bombay
Nizam's Dominions
Lower Burma
Siam
Goa (Portugese)
Madras
Mysore
Andaman Islands
Laccadive Islands
Pondicherry (French)
Travancore
Nicobar Islands
Ceylon
Maldive
British Provinces
Princely States
Other Countries
Rivers
Cities

- परन्तु गर्वनर जनरल **लार्ड एलनबरो** ने तो **बहादुरशाह** को भेंट देनी बंद कर दी और **सिक्कों पर से उसका नाम हटा दिया।**



- डलहौजी ने इससे भी बढ़कर बहादुरशाह को **दिल्ली लाल किला खाली** करने व **कुतुबमीनार** (महरौली) में जाकर रहने के लिए कहा।

- लार्ड कैनिंग ने तो यह घोषणा की कि बहादुरशाह के बाद मुगल शासक को सम्राट की उपाधि से **वंचित** कर दिया जायेगा और उसे **मुगल महल छोड़ना होगा।** अंग्रजों के इन घृणित कार्यों ने भारतीय **शासकों** को उनके **विरूद्ध** कर दिया।

- 1854 ई. में लार्ड डलहौजी द्वारा भूपतियों एवं **जमींदारों** के जागीरों की जांच करने के लिए **1832 के एक्ट के** तहत बम्बई में एक **'ईनाम कमीशन'** गठित किया।

- इस कमीशन ने **35 हजार जागीरों की जांच की और दक्कन में लगभग 20,000 जागीरों को जब्त कर लिया जिससे**

- जमींदारी जब्त होने से उच्च वर्ग में असंतोष तो था ही साथ ही प्रशासन में भारतीयों के साथ भेदभाव किया गया। कोई भी भारतीय **सूबेदार से ऊंचे पद पर** नहीं पहुंच पाता था।
- जिससे भारतीयों में यह धारणा बन गई कि अंग्रेज उन्हें **'लकड़हारे'** अथवा **'कहार'** जैसे महत्वहीन पदों तक सीमित रखना चाहते हैं।
- कार्नवालिस ने भारतीयों को उच्च पदों से वंचित करके उनके प्रति **अविश्वास** की **मनोवृत्ति** को बढ़ावा दिया।
- **1858** ई. में सर **सैयद अहमद खाँ** जिन्होंने विद्रोह के कारणों पर अपनी **पुस्तक 'असबाब-ए-बगावतए-हिन्द'** लिखी थी, उसमें यह घोषणा की कि विद्रोह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण भारतीयों का प्रशासनिक तंत्र में उच्च पदों पर न होना था।
- अंग्रेजों की इस भेद-भाव पूर्ण नीति ने **भारतीयों** के मन में प्रचलित व्यवस्था के प्रति घणा उत्पन्न कर दी। **जिसने** 1857 के विद्रोह को अधिक विस्तृत व प्रभावी बना दिया।



© Dr. Amit Kumar

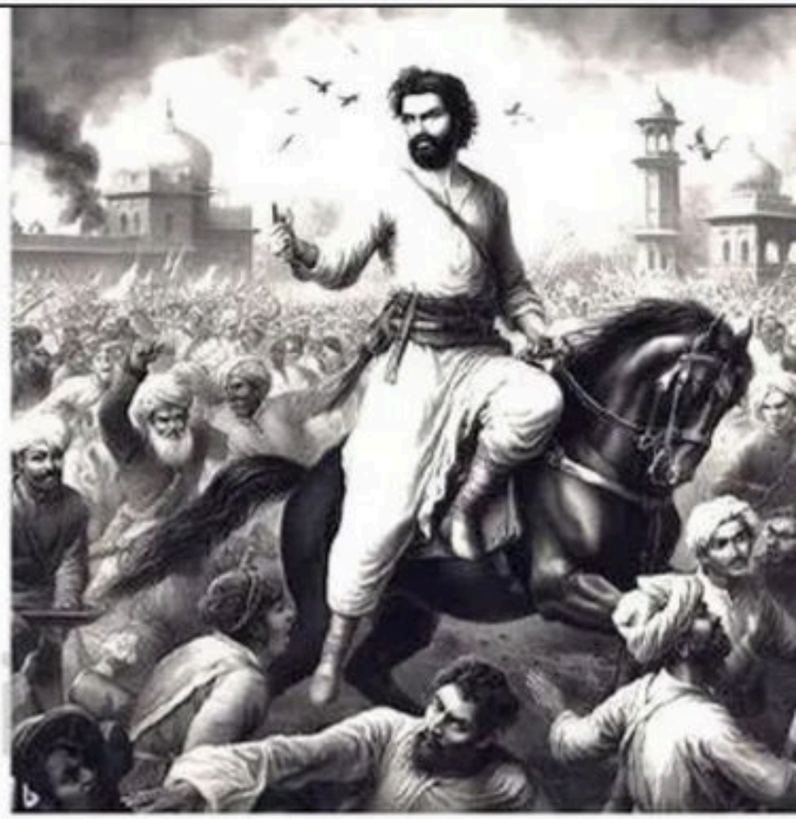
आर्थिक कारण (Economic Causes)

- 1857 ई. के विद्रोह के लिए अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीतियाँ भी प्रमुखता से जिम्मेदार रहीं।
- भू-राजस्व व्यवस्था में नवीन सुधारों ने किसानों की स्थिति दयनीय बना दी थी।
- भारत के पारम्परिक उद्योग-धन्धे नष्ट हो गये थे और दस्तकारों एवं हस्तशिल्पकारों की बड़ी संख्या मजदूर बन गयी थी।
- सूती वस्त्र उद्योग के नष्ट होने से ढाका जो भारत का मेनचेस्टर कहलाता था, जंगल बन गया था, मुर्शिदाबाद उजड़ गया और सूरत बदसूरत हो गया था।
- भारतीय बाजार पर अब अंग्रेजों का नियंत्रण हो गया था।
- तट-कर नीति और आंतरिक चुंगी व्यवस्था भी ब्रिटिश हित के लिए बनाई गई थी।
- **ब्रिटेन के तैयार माल से भारत की मंडिया पटी पड़ी थी।**

unacademy
© Dr. Amit Kumar Singh

- इस कारण भारत के लघु उद्योग व **घरेलू उद्योग समाप्त** हो गये थे।
- 19वीं सदी की शुरूआत मे भारतीय मलमल और सूती कपड़े पर इंग्लैण्ड में क्रमशः **27%** और **71%** शुल्क लिया जाता था तथा रेशमी कपड़े पर **90%** कर लिया जाता था जबकि भारत आने वाले इंग्लैण्ड के निर्मित वस्त्रों पर केवल **3.5%** कर तथा ऊनी कपड़ों पर **2%** कर लिया जाता था,
- जिसका प्रमुख उद्देश्य भारतीय वस्त्रों की विश्व मंडी में पहुंच को रोकना व भारत में भी भारतीयों के बाजार को बंद करना था।
- जिससे बनुकरों की जीविका का साधन ही नष्ट हो गया और उनके मन में अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध विद्रोह पनपने लगा।
- उद्योगों के नष्ट होने व कृषि के वाणिज्यिीकरण के कारण कंपनी के शासन काल में **1770** ई. से **1837** ई. के मध्य कई भयंकर **अकाल** पड़े।
- 1837 के अकाल की भयावहता इस बात से ही लगाई जा सकती है कि इसमें आठ लाख लोग मारे गये।
- पीड़ितों की सहायता के लिए शासन द्वारा कोई भी **प्रयत्न नहीं** किया

- जिससे जनता में असंतोष जागृत हुआ और कई जगह विद्रोह भी हुए जिसका क्रूरता से दमन किया गया।।



- इसी समय हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने प्रमुख रूप से **दादा भाई नौरोजी** ने धन निष्कासन पर सर्वसाधारण का ध्यान **आकृष्ट** किया और बताया कि किस तरह भारत का धन भारत के लिए नहीं बल्कि इंग्लैण्ड के लिए खर्च हो रहा था।

- अंग्रेज भारत का शोषण कर रातों रात **नवाब** बने जा रहे थे। इस विषय पर अंग्रेज **मेजर विनगेट** ने लिखा कि "भारतीय साम्राज्य की **सैनिक रक्षा के लिए ब्रिटेन के खजाने से एक भी शिलिंग खर्च नहीं होता था।**

- इस तरह से लूट, रिश्वत, उपहार, समय-समय पर होने वाले युद्धों में लगी अपार धनराशि, ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन और भत्ते, सार्वजनिक ऋण, इन सभी ने भारत की अर्थव्यवस्था को **पंगु** बना दिया था।"

- इस प्रकार निरन्तर हो रहे आर्थिक शोषण ने 'भारत को निर्धन व दरिद्र बना दिया था। **बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर थी।**

- कम्पनी की आर्थिक नीति ने भारत के जमींदारों, तालुकेदारों, किसानों मध्यम वर्ग के लोगों, मजदूरों, व्यापारियों एवं उद्योगपतियों सभी को रसातल में पहुंचा दिया।
- समस्त भारतीय **जनता त्राहि-त्राहि** करने लगी थी।
- 18वीं व 19वीं शताब्दी में निरंतर कम्पनी के विभिन्न भागों में विद्रोह व विरोध की आग सुलग रही थी, जो 1857 में अवसर पाकर **भड़क** उठी।

सामाजिक और धार्मिक कारण(Socio-Religious Causes)

- भारतीयों में, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक **शोषण** से भी अधिक व्यापक असंतोष, अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीयों के प्रति **तिरस्कारपूर्ण** दृष्टिकोण तथा ईसाई मिशनरियों के सरकारी **समर्थन** से उत्पन्न हुआ।
- विजेता होने के कारण विजित लोगों के प्रति अंग्रेजों की **नीतियाँ** रंग भेद की भावना से प्रेरित थी।
- वे भारतीयों को **हेय** दृष्टि से देखते थे और हिन्दुओं को बर्बर और **मुसलमानों** को कट्टरपंथी निर्दयी और बेईमान समझते थे उन्होंने **भारतीयों** को काले (**nigger**) की संज्ञा दी थी।

- अंग्रेज भारतीय समाज को बर्बर व असभ्य समाज मानते थे।
- इसलिए उन्होंने सुधार के लिए कुछ नीतियाँ बनाईं, जो प्रमुख रूप से विलियम **बेंटिक व डलहौजी** के काल में लागू हुईं।
- जैसे **सती प्रथा (1829), नरबलि का दमन (कैम्पबेल ने हार्डिंग के समय (1844) में किया), कन्या वध (जानशोर के समय 1795 में), दास प्रथा (एलनबरो 1843), बाल विवाह अधिनियम, विधवा पुनर्विवाह (1856), अन्तर्जातीय विवाह का अंग्रेजों ने समर्थन किया।**
- जबकि कट्टरपंथियों व पण्डितों तथा मौलवियों ने इन सुधारों का विरोध करते हुए इसे अपने आत्म-सम्मान पर हमला माना और भारतीय जनमानस में इसके खिलाफ **विरोध** को हवा दी।
- इसे भारतीय धर्म से जोड़कर देखा गया।
- भारतीय समाज में धर्म का अत्यंत **महत्वपूर्ण** स्थान है।
- धर्म जीवन की धुरी था इसलिए जब ईसाई मिशनरियों ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करना प्रारंभ किया तो भारतीय **जनमानस** चीत्कार उठा।

- **शारीरिक** तथा **राजनीतिक** अन्याय सहन करना फिर भी संभव है परंतु **धार्मिक उत्पीड़न सहन करना बहुत कठिन होता है।**

- 1813 में ईसाई मिशनरियों को भारत आने की **अनुमति** दी गई, जिससे बड़ी संख्या में **पादरी** भारत आए और ईसाई मिशनरी के माध्यम से ईसाई धर्म की शिक्षा का **प्रचार-प्रसार** किया। इन मिशनरियों को सरकार का **संरक्षण** प्राप्त था।



© Dr Amit Kumar

- कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी स्वयं भी भारत में **ईसाई** धर्म के प्रसार के पक्ष में थे जिसका स्पष्ट उदाहरण कम्पनी अध्यक्ष **मैन्जिलस** का **हाउस ऑफ कामन्स** में दिया गया भाषण है जिसमें उसने स्पष्ट कहा था कि "परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंग्लैण्ड को इसलिए सौंपा है ताकि हिन्दुस्तान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक **ईसाई धर्म की पताका फहराने** लगे।"

- ईसाई मिशनरियों में धर्म परिवर्तन के लिए स्कूलों में **बाइबिल** की शिक्षा **अनिवार्य** बना दी साथ ही पुलिस बल व

- 1837 के अकाल में मिशनरियों ने अधिक संख्या में **अनाथों को ईसाई** बनाया। **1845** में एक **अधिनियम** द्वारा कैदियों में विभेद मिटाने के लिए **भोजन के बर्तन ले जाने पर रोक लगा दी।**
- **गोपीनाथ** नामक बंगाली जो ईसाई बन चुका था, उसके अनुसार जेल में कैदियों को पादरी ईसाई धर्म की **शिक्षा देते थे।**
- **मेजर एडवर्ड** ने भी स्पष्ट रूप से कहा था कि "भारत पर हमारे अधिकार का अन्तिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है।"
- वीर **सावरकर** ने लिखा है कि सेना में उच्च अधिकारी **राम** व **मुहम्मद** को गालियाँ देते थे तथा सैनिकों को ईसाई बनने के लिए प्रेरित करते थे। ईसाई धर्म प्रचारकों को अनेक **सुविधाएँ** दी जाती थी।
- **अमेरिकन मिशनरी सोसायटी** ने आगरा में ईसाई धार्मिक साहित्य के प्रकाशन हेतु एक बड़ा **मुद्रणालय** (Printing Press) लगाया।सरकार ने मंदिरों एवं **मस्जिदों** की **जायदादों**



- और **1850** में **धार्मिक अयोग्यता अधिनियम** (Religious Disabilities) या **लेक्स लोकी कानून** पारित किया गया।
- इसका उद्देश्य **हिन्दू रीति-रिवाजों** में **परिवर्तन** लाना था।
- अभी तक धर्म परिवर्तन करने पर व्यक्ति अपने **पैतृक** संपत्ति से वंचित हो जाता था किन्तु अब ईसाई धर्म अपनाने पर वह पैतृक सम्पत्ति **से वंचित नहीं - होगा।**
- इस अधिनियम से कम्पनी का **दोहरा चरित्र** उजागर हुआ, एक तरफ तो ईसाई धर्म के प्रसार के लिए धर्म परिवर्तन से लाभ तो दूसरी ओर डलहौजी की गोद लेने की प्रथा का निषेध, जो हिन्दू धर्म के विरोध में थी।
- अतः हिन्दू समाज ने इसे अपने प्रचलित धर्म कानून में हस्तक्षेप माना और जनता कम्पनी के शासन के विरोध में **विद्रोह** करने को आमादा हो गई।

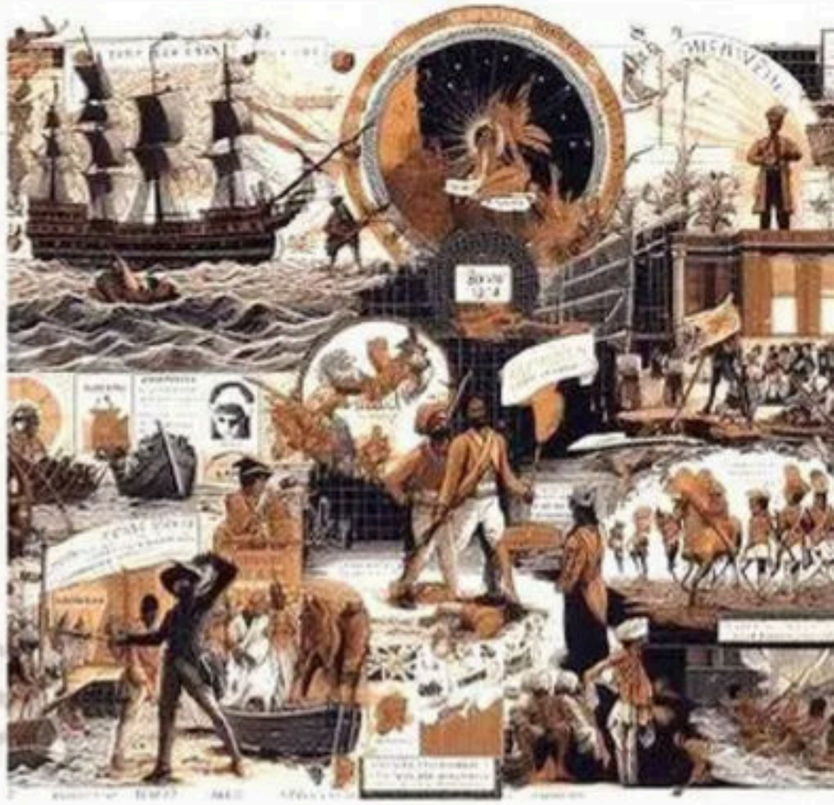


सैनिक कारण (Military Causes)

- 1857 के विद्रोह में राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सामाजिक कारणों के बाद भी यदि सैनिक असंतोष नहीं हुआ होता तो इस विद्रोह का स्वरूप इतना व्यापक व गौरवूपर्ण नहीं होता। इसलिए सैनिक असंतोष को महत्वपूर्ण कारक माना जाता है।
- ब्रिटिश सेना में विशेषकर बंगाल में लगभग 60 प्रतिशत सैनिक अवध तथा उत्तरी पश्चिमी (उत्तर प्रदेश) प्रांतों से आते थे। उनमें से अधिकतर ब्राह्मण और राजपूत होते थे और वे सेना के अनुशासन को स्वीकारने को तैयार नहीं थे। इसलिए भारतीय सैनिकों को **चार्ल्स नेपियर ने "उच्च जातीय भाड़े के सैनिक"** कहा, जिन पर उसका कोई **विश्वास नहीं** था।
- यही कारण था कि अंग्रेजी सैन्य नीति के अनुसार भारतीयों को सेना में **कोई उच्च पद नहीं दिया जाता था।**



- इसे और भी भेदभावपूर्ण कार्नवालिस की "**आंग्लीकरण की नीति**" ने बना दिया, जिसके कारण सेना में भारतीय सैनिकों की **पद वृद्धि नहीं होगी।**
- उनके वेतन व भत्ते भी बहुत कम थे, उन्हें **7 रूपये महीने वेतन मिलता** था।
- इसके साथ ही खाने की व्यवस्था भी **घटिया** थी और समय-समय पर अंग्रेज अधिकारियों का दुर्व्यवहार भी सहन करना पड़ता था, जो भारतीय सैनिकों के लिए असह्य हो गया था।
- इस समय भारत में अंग्रेजी सेना के दो भाग होते थे, एक भाग में अफसर भी अंग्रेज और सैनिक भी अंग्रेज थे, परन्तु दूसरे भाग में अफसर अंग्रेज तथा सैनिक **भारतीय** होते थे।
- अनुपात में भारतीय सैनिक, यूरोपीय सैनिकों से कहीं अधिक थे।
- इनके बीच **5: 1 का अनुपात था** फिर भी भारतीय सैनिकों का महत्व यूरोपीय सैनिकों की अपेक्षा अत्यंत कम था।



© Dr. Amit Kumar S

- इस प्रकार एक ओर असमान वेतन व भेदभाव की नीति तो दूसरी ओर अवध का **विलय जिसने बंगाल के सैनिकों में अत्यधिक रोष** उत्पन्न कर दिया क्योंकि बंगाल के सैनिक अवध की समस्त असैनिक जनता की **भावनाओं** को प्रकट करते थे।



- उन्होंने यह अनभव किया कि यह शक्ति जो कम्पनी ने उनकी सेवा और बलिदान द्वारा प्राप्त की है, आज उन्हीं के राजा को समाप्त करने में प्रयोग की जा रही है।

- इसके **अतिरिक्त 1856** में **कैनिंग** द्वारा लाया गया '**सामान्य सेना-भर्ती अधिनियम**' (General Service Enlistment Act) जिसके अन्तर्गत बंगाल के भावी सैनिकों के लिए यह **आवश्यक** कर दिया गया था कि जहाँ कहीं भी सरकार की **आवश्यकता** होगी उन्हें वहाँ जाना पड़ेगा।

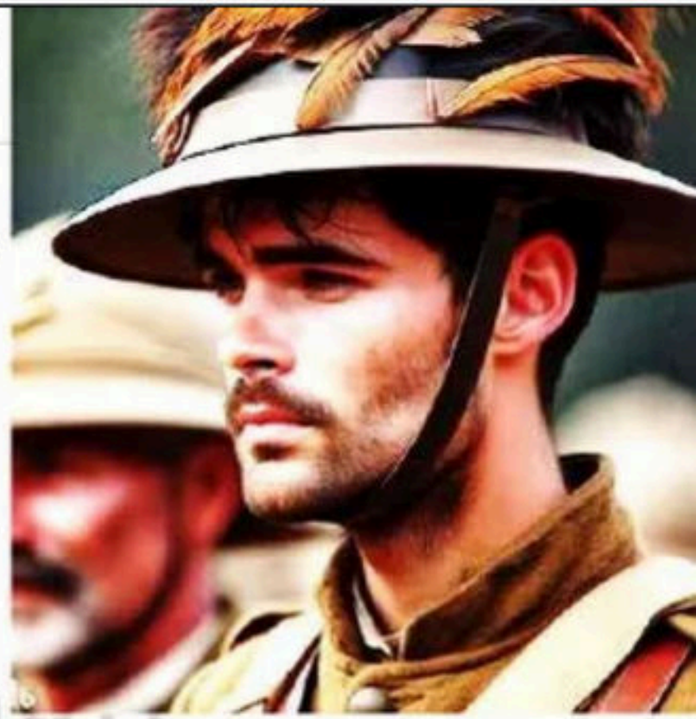
- इस नियम द्वारा सैनिकों को **समुद्र पार भी भेजा जाएगा**, जो उस समय हिन्दू धर्म के अनुकूल नहीं था। अतः अब सैनिक युद्ध में जाने से मना **नहीं कर सकते थे।** इन सब कारणों से सैनिकों के मन में **विद्रोह** की भावना भर गई।

- ध्यातव्य है कि 1857 ई0 में तो सैनिक विद्रोह हुआ ही परंतु इस विस्फोट से पूर्व भी सेना में कई विद्रोह हो चुके थे, जिनमें सबसे पहला उदाहरण 1764 ई0 के बक्सर युद्ध में मीर कासिम के विरुद्ध लड़ते हुए मुनरो की सेना की एक बटालियन नवाब की सेना में मिल गई थी, जिन पर मुकदमा चलाकर **24 सिपाहियों को गोली से उड़ा दिया गया था।**



- इसके पश्चात् प्रथम धार्मिक विरोध सेना में **1806 ई0 में वेल्लौर में माथे पर तिलक लगाने, दाढ़ी रखने व पगड़ी बांधने को लेकर हुआ था।**
- इसी समय सेना में **हैट लगाये जाने का नियम** बना, जिस पर **चमड़े** का **तुर्रा व पंख** लगा होता था। यह तुर्रा गाय और सुअर के चमड़े से बनाया जाता था। इस बात को फैलाने वाले राज्य किले में **नजरबंद** टीपू के पुत्र थे। जिसके कारण सैनिकों ने **विद्रोह** कर दिया।
- 1824 ई0 में बैरकपुर (बंगाल) में सिपाहियों ने समुद्र के मार्ग से **बर्मा जाने को मना कर दिया था।**

- फलस्वरूप 47वीं **रेजीमेंट भंग कर दी गई** और विद्रोही सिपाहियों को **फांसी** दे दी गयी।
- 1844 ई0 में बंगाल के फिरोजपुर की 64वीं रेजीमेंट ने उन्हें **अतिरिक्त** भत्ता न मिलने पर सिंध जाने से मनाही कर दी थी।
- लार्ड डलहौजी के काल में **1849** में 22वीं रेजीमेंट देशी पैदल सेना, **1850** में 66वीं देशी पैदल और **1852** में 38वीं देशी पैदल सेना ने **बगावत** कर दी।
- उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त **1854** में **डाक घर अधिनियम** पारित होने पर सैनिकों को दी जाने वाली **निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त** कर दी गयी, जिससे सैनिक **असंतुष्ट** हो गये थे।
- इसके साथ ही आंग्ल **अफगान युद्ध** (1839-1842) में अंग्रेजों की हार तथा पंजाब में संघर्ष के दौरान अंग्रेजी सेना को हुई भारी क्षति ने भारतीय सैनिकों में यह **विश्वास** भर दिया कि **अंग्रेज अजेय नहीं हैं**, उन्हें इस समय पराजित किया जा सकता है **जीमेण्ट** को भंग कर दिया गया तथा इनके नेताओं को **सजा** दी गयी।



© Dr Amit Kumar Singh

unacademy

▲ 1 • Asked by Anupriya

Sikshit aur jamindar kyu alag ho gye kranti se

unacademy

▲ 1 • Asked by Kajal

Gurudev agar koi indian christian ban jata tha to usko indian ki tarah treat kiya jata tha ya kuch riyayat di jati thi ...v

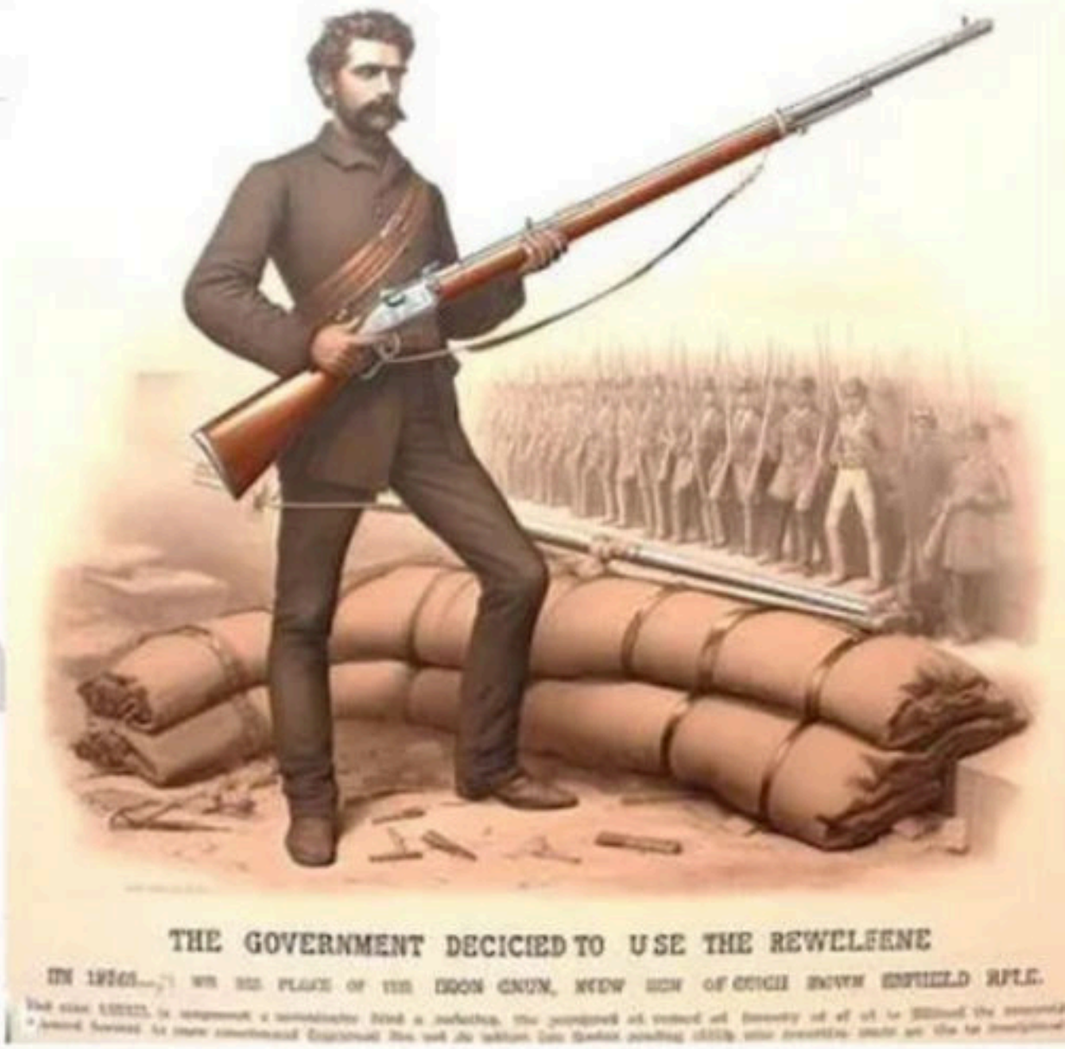
Mtlb unki sthiti kaisi rahti thi Cristian banne ke baad

- अतः वे एक बड़े विद्रोह की प्रतीक्षा में थे, जिसका अवसर उन्हें तात्कालिक कारण **चर्बी लगे कारतूस** ने दे दिया।

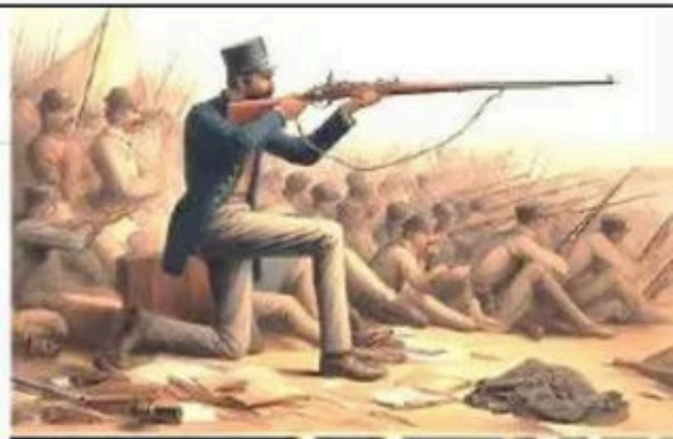
तात्कालिक कारण (Immediate Causes)

- उपरोक्त उत्तेजित वातारण में दिसम्बर 1856 ई0 में सरकार ने **लोहे वाली बंदूक ब्राउन बैस (Brown Bess)** के स्थान पर नवीन राइफल **एनफील्ड (New Enfield Rifle)** का प्रयोग करने का निश्चय किया।

- इस राइफल का कारतूस बूलिच आरसेनल कारखाने में निर्मित होता था। कारतूस को प्रयोग के पहले उसके ऊपरी भाग को मुँह से काटना होता था। इसका आरंभिक प्रयोग डम-डम, अम्बाला व स्यालकोट में किया जाना था। जनवरी 1857 में बंगाल सेना में यह अफवाह फैल गई कि चर्बी वाले



- कम्पनी के राजनीतिक व गुप्त **सचिव के यी तथा वी0ए0 स्मिथ** ने स्वीकार किया कि वूलिच शस्त्रागार में **गाय व बैलों की चर्बी** प्रयुक्त की जाती थी।



- सैनिकों को यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज उनका **धर्म भ्रष्ट करना** चाहते हैं। उन्होंने कहना आरंभ कर दिया कि कम्पनी **औरंगजेब** की भूमिका में है और **सैनिकों** को **शिवाजी** बनना ही होगा।



विद्रोह की असफलता का कारण (Causes of the failure of the Revolt)

© Dr. Amit Kumar Singh

- 1857 का विद्रोह यद्यपि सम्पूर्ण भारत में तेजी से फैला किन्तु समूची **जनसंख्या** को **आंदोलित** नहीं कर सका और अपने तात्कालिक उद्देश्य, अंग्रेजों को देश से बाहर खदेड़ने में सफल नहीं हो सका, तथापि इसके **दीर्घकालिक** व **दूरगामी** परिणाम **महत्वपूर्ण** रहे।

- विद्रोह के सफल न होने का सबसे बड़ा कारण संगठन का **अभाव** था, जहाँ अंग्रेजी सेना संगठित व आधुनिक हथियारों से **सुसज्जित** थी

- वहीं भारतीय योद्धाओं में उद्देश्य, स्थान व क्षेत्र की विभिन्नता के कारण कोई मजबूत संगठन नहीं तैयार हो सका इसलिए यह विद्रोह अखिल भारतीय आन्दोलन का रूप धारण नहीं कर सका।

- दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारण अधिकांश देशी नरेशों एवं सामंतों का **राजभक्त बने रहना** था। 550 से भी अधिक रियासतों व राजाओं में से केवल कुछ गिने-चुने राजाओं ने ही विद्रोह का **नेतृत्व** किया।

- अधिकांश राजा जैसे **पटियाला**, **जींद**, **ग्वालियर**, **हैदराबाद**, **पंजाब** व बंगाल के रियासतों एवं राजाओं से विद्रोह को **समर्थन नहीं** प्राप्त हुआ।

- **कैनिंग** ने स्वयं कहा था "यदि **सिंधिया** भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए तो मुझे कल ही **बिस्तर गोल** करना होगा।"

- इसके साथ यूरोपीय इतिहासकारों ने **ग्वालियर** के मंत्री **सर दिनकर** राव और **हैदराबाद के मंत्री सालार जंग** की राजभक्ति की बहुत **सराहना** की है।



© Dr. Amit Kumar Si

- इसके साथ ही **भोपाल की बेगम** तथा **नेपाल के मंत्री सर जंगबहादुर** ने विद्रोह के **विस्तार** को **रोकने** में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- **लार्ड एलफिंस्टन** ने बम्बई प्रेसीडेन्सी में विद्रोह की आग भड़कने से पूर्व ही दबा दिया तो **लारेन्स** ने राजस्थान के अधिकांश भाग को **शांत** बनाये रखा।



Important Facts

- तत्कालीन भारत सचिव **अर्ल स्टेनले** ने ब्रिटिश **पार्लियामेन्ट** को 1857 की घटनाओं पर रिपोर्ट देते हुए **सर्वप्रथम** इसे **'सिपाही विद्रोह'** का नाम दिया।
- स्टेनले के इस विचार की नकल अन्य लेखकों एवं **इतिहासकारों** ने की। प्रसिद्ध उर्दू शायर मिर्जा **गालिब** का जन्म 1796 में आगरा में हुआ था। उनकी मृत्यु फरवरी, 1869 को दिल्ली में हुई थी।
- 1857 के विद्रोह को गालिब ने स्वयं अपनी आँखों से देखा।बिहार का मुंगेर क्षेत्र (BPSC) और राजस्थान का चित्तौड़ (IAS : 05) 1857 के विद्रोह से अप्रभावित थे।
- 1857 के विद्रोह के समय बैरकपुर (मुर्शिदाबाद-बंगाल) में ब्रिटिश कमाण्डिंग ऑफिसर सर जॉन बेनेट हैरेस थे।
- 1857 के विद्रोह के समय तत्कालीन गर्वनर जनरल लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था।अवध की राजधानी लखनऊ में 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेज रेजीडेंसी की सुरक्षा करते हुए सर हेनरी लारेंस, मेजर जनरल हैवलॉक तथा जनरल नील की मृत्यु हुई।
- जनरल जॉन निकलसन की मृत्यु दिल्ली में हुई थी।
- 1857 के भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के सरकारी इतिहासकार सुरेन्द्र नाथ सेन (एस.एन. सेन) थे जिसकी पुस्तक 'एट्टीन फिफ्टी सेवन') 1957 में प्रकाशित हुई थी।

© Dr Amit Kumar Singh

- अजीमुल्ला ने बिठूर में नाना साहब के साथ मिलकर विद्रोह की योजना को अन्तिम रूप देते हुए 31 मई, 1857 को क्रांति का दिन निश्चित किया। (UPPCS : 04)
- 1857 के विद्रोह में बहादुरशाह ने अन्ततः हुमायूँ के मकबरे में शरण लिया।
- लेफ्टिनेंट हडसन ने उसको वहाँ से गिरफ्तार किया।
- यहीं पर लेफ्टिनेंट हडसन ने बहादुरशाह द्वितीय के दो पुत्रों-मिर्जा मुगल, मिर्जा ख्वाजा सुल्तान तथा एक पौत्र मिर्जा अबुबक्र की गोली मार कर हत्या कर दी।
- **कैप्टन गार्डेन एक ऐसा अंग्रेज था जिसने 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध किया था।**
- यह मंगल पाण्डेय का मित्र भी था 6 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे के कोर्ट मार्शल की अध्यक्षता 34वीं रेजीमेंट के सूबेदार मेजर **जवाहरलाल तिवारी** ने की इसमें अंग्रेजों की ओर से कैप्टन जी0 सी0 हैच एवं अभियोक्ता एस0 जी0 ह्वीलर तथा जेम्स वालिंग्स सहित चौदह भारतीय **सूबेदार** मेजर शामिल थे।

- **तीसरा** प्रमुख कारण **था-निश्चित उद्देश्य का अभाव।**
- विद्रोहियों ने **अलग-अलग उद्देश्य** को लेकर विद्रोह किया था, जो निजी स्वार्थ से प्रेरित थे।
- उनमें आंतरिक स्तर पर कोई **राष्ट्रीय भावना** कार्य **नहीं कर रही थी**।
- न ही भविष्य को लेकर उनके पास कोई योजना थी।
- विनायक दामोदर **सावरकर** ने लिखा कि "यदि लोगों के सम्मुख सुस्पष्ट रूप से एक नया आदर्श रखा गया होता तो स्थिति कुछ और होती।"
- **चौथा प्रमुख कारण देशव्यापी कुशल नेतृत्व का अभाव था।**
- बहादुरशाह **वृद्ध** और **दुर्बल** व्यक्ति था जो एक कुशल नेतृत्व प्रदान करने में असमर्थ रहा।
- नाना साहेब, तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह, बख्त खान, अजीमुल्ला, हजरत महल आदि क्रांतिकारी नेता यद्यपि अपने इरादों के पक्के थे और योग्य भी थे किंतु उनका नेतृत्व अखिल भारतीय स्तर पर नहीं था और न ही उनमें कोई तालमेल था।

unacademy
© Dr. Amit Kumar Singh

- वे एक दूसरे के प्रति उदासीन थे।
- स्वामी विवेकानन्द ने भी इसी उदासीनता व तालमेल की कमी को 1857 के विद्रोह की असफलता का प्रमुख कारण माना है।
- इसके अतिरिक्त विद्रोहियों के साधन सीमित थे जबकि अंग्रेजों के पास सुसज्जित सेना के साथ-साथ परिस्थितियाँ भी उनके अनुकूल थीं।
- क्रीमिया के युद्ध में अंग्रेज रूस को पराजित कर चुके थे।
- चीन भी प्रसिद्ध अफीम युद्ध 1856 में हार चुका था, समुद्री मार्ग पर अंग्रेजों का अधिकार था जिससे लगभग 1,12,000 सैनिक यूरोप से भारत भेजे गये, तथा डलहौजी की रेल, डाक, तार व्यवस्था ने भी विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता की।
- **विद्रोह की सूचना नर्मदा के पार नहीं पहुंचने दिया गया और जी0टी0 रोड पर कड़ा नियंत्रण रखा गया।**
- इस प्रकार अंग्रेजों के पास साधनों की विविधता और उनकी प्रचुर **उपलब्धता** विद्यमान थी और इसी वजह से शीघ्र ही उन्होंने विद्रोह को **दबा दिया।**

- इस प्रकार विद्रोह की असफलता का वास्तविक कारण भारतीयों की वीरता अथवा साहस की भावना का अभाव न होकर शिक्षित वर्ग की उदासीनता व राष्ट्रीय भावना की कमी होना था
- जिससे आंदोलन का **कुशलता** से नेतृत्व नहीं किया जा सका और यह आंदोलन अपने तात्कालिक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सका।
- परंतु इसने अंग्रेजी शासन को झकझोर कर रख दिया। फलस्वरूप अंग्रेजी शासन में बाद में कई **परिवर्तन** किये गये।

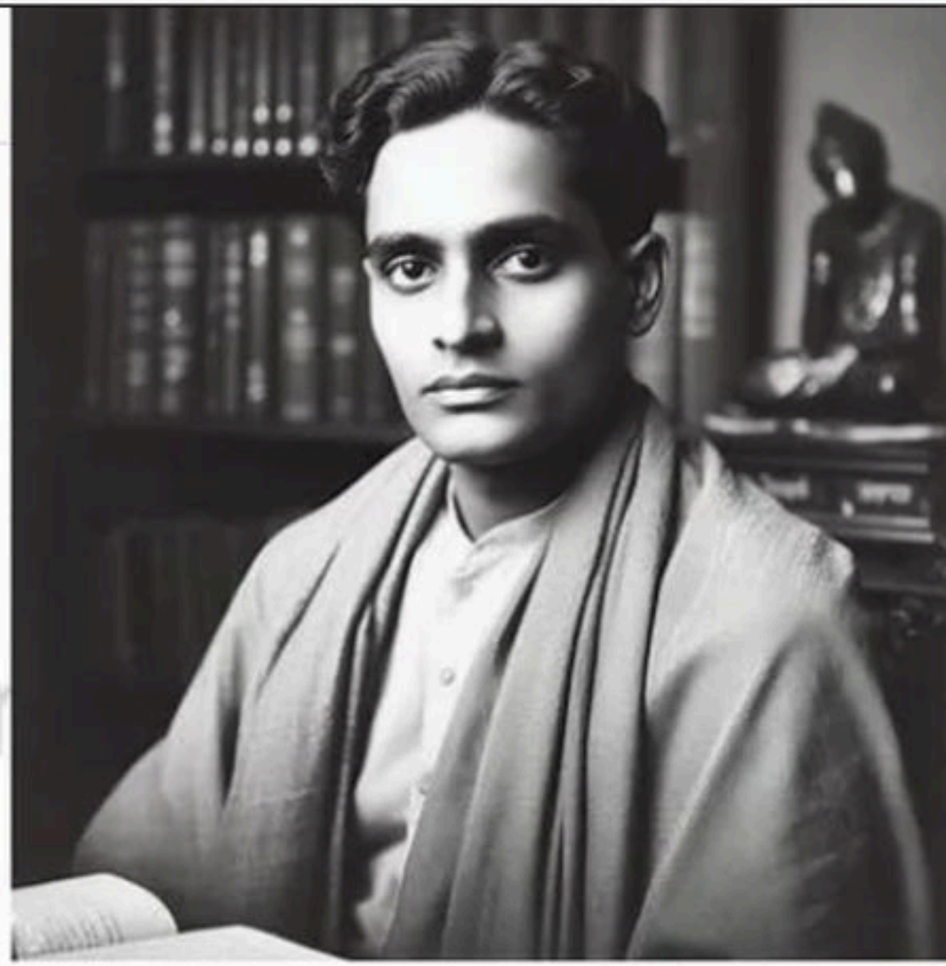
© Dr Amit Kumar Singh

विद्रोह के परिणाम (Results of Revolt)

- 1857 ई0 का विद्रोह विफल हो गया, तथापि इसके **तात्कालिक** और दूरगामी परिणाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण हुए।
- इससे भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारियों का शासन समाप्त हो गया एवं ब्रिटिश संसद और ताज का शासन आरंभ हुआ।
- विद्रोह एक युग की समाप्ति एवं नए युग के **आगमन का द्योतक था।**

- इसने भारतीय राजनीति, प्रशासन, सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था एवं राष्ट्रीय **भावना को गहरे रूप से प्रभावित किया।**

- **विक्टोरिया** का घोषणा पत्र जिसे कैनिंग ने 1 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद के मिंटो पार्क में घोषित किया और जिसे **'भारत सरकार अधिनियम : 1858'** की संज्ञा से अभिहित किया गया, के द्वारा भारतीय प्रशासन का नियंत्रण कम्पनी से छीनकर ब्रिटिश क्राउन को सौंप दिया गया।

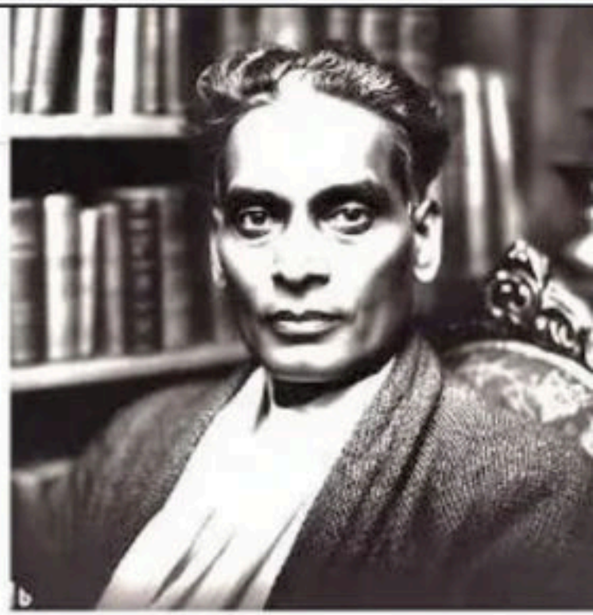


© Dr. Amit Kumar

- देशी रियासतों एवं सामान्य जनता के प्रति एक निश्चित एवं दिखावे के लिए ही सही, उदार नीति की घोषणा की गई।

- गर्वनर जनरल को अब **वायसराय** कहा जाने लगा अर्थात् वह ब्रिटिश ताज के वैयक्तिक प्रतिनिधि के रूप में भारत पर शासन करने लगा। उसके कार्य पहले जैसे ही रहे, परंतु उसके पद को और अधिक गौरवमय बना दिया गया। उसे अब **वायसराय** की उपाधि प्रदान की गई।

- भारतीय रियासतों के साथ संबंध निश्चित करते समय वह इसी उपाधि का व्यवहार करता था।



- वायसराय को **अनेक सुविधाएँ प्रदान की गई**। देशी राज्यों की अखंडता एवं उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की गई। कंपनी के साथ देशी राज्यों द्वारा किए गए संधियों एवं **समझौतों** को मान्यता प्रदान की गई। **उन्हें गोद लेने का अधिकार भी वापस दे किया गया।**
- सभी राज्यों को अंग्रजी अधिसत्ता (**ब्रिटिश पैरामाउंटसी**) के अंतर्गत ले लिया गया। सभी देशी नरेश ब्रिटिश ताज के अधीन शासक बन गए।
- 1876 ई0 में महारानी **विक्टोरिया** द्वारा **'कैसर ए-हिंद'** की उपाधि एवं 1857 ई0 के विद्रोही **सामंतों**, **ताल्लकेटा** की भी सुविधाएँ वापस कर दी गई।
- फलस्वरूप, देशी नरेश और सामंत वर्ग अंग्रेज **सरकार** के **हिमायती** बन गए।
- इस प्रकार अंग्रेजों ने भारत में **'फूट डालकर राज करने** (Divide and Rule) की नीति अपनाई जो बहुत अधिक सफल रही।

© Dr. Amit Kumar Singh

- भारत के सामाजिक व धार्मिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई गयी।

- सेना के पुनर्गठिन हेतु **पील आयोग का गठन किया गया** और उसके सुझाव से सैनिकों का **अनुपात सुधारकर 2 : 1 (भारतीय 2 : 1 यूरोपीय) किया गया, जो विद्रोह के पूर्व 5 : 1 था।**

- इंग्लैण्ड में **1858** के **अधिनियम** द्वारा एक भारतीय राज्य सचिव (Secretary-States of India) की नियुक्ति की गयी तथा इसकी सहायता के लिए **15 सदस्यों की मंत्रणा परिषद** (Advisory Council) बनाई गयी जिसमें **8 ब्रिटिश सरकार** द्वारा मनोनीत होते थे और शेष 7 (सात) कम्पनी के **भूतपूर्व संचालकों** (कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स) द्वारा चुने जाते थे।

- 1861 ई. भारतीय **लोक सेवा अधिनियम बनाया गया, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष लंदन में एक प्रतियोगिता परीक्षा** आयोजित करने की व्यवस्था की गई ताकि संभावित लोक सेवा में भर्ती की जा सके।



- इस प्रकार 1857 के विद्रोह ने एक सामंती युग का अंत करके **एक नवीन युग के बीज बो दिए** जिसका नेतत्व अब आने वाली प्रगतिशील व शिक्षित भारतीय पीढ़ी करने वाली थी, जिसके अन्दर राष्ट्रीय भावना विकसित हो रही थी जो आने वाले समय में **अंग्रेजी साम्राज्य के लिए चुनौती बन कर खड़ी होने वाली थी।**

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 के विद्रोह का बिहार में 15 जलाई, 1857 से 20 जनवरी 1858 तक केंद्र था

A. रामपुर

B. हमीरपुर

C. धीरपुर

D. जगदीशपुर

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 के विद्रोह का बिहार में 15 जलाई, 1857 से 20 जनवरी 1858 तक केंद्र था

A. रामपुर

B. हमीरपुर

C. धीरपुर

D. जगदीशपुर

© Dr. Amit Kumar Singh

पटना के 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के नेता थे-

A. हैदर अली खान

B. राजपूत कुंवर सिंह

C. जुझार सिंह

D. कुशल सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

पटना के 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के नेता थे-

A. हैदर अली खान

B. राजपूत कुंवर सिंह

C. जुझार सिंह

D. कुशल सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

जगदीशपुर के राजा थे

A. नानासाहब

B. तात्या टोपे

C. लक्ष्मी बाई

D. कुंवर सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

जगदीशपुर के राजा थे

A. नानासाहब

B. तात्या टोपे

C. लक्ष्मी बाई

D. कुंवर सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

unacademy

निम्नलिखित में से किसने 1857 में अंग्रेजों से संघर्ष किया?

A. चंद्रशेखर आजाद

B. रामप्रसाद विस्मिल

C. शहादत खान

D. माखनलाल चतुर्वेदी

© Dr. Amit Kumar Singh

unacademy

निम्नलिखित में से किसने 1857 में अंग्रेजों से संघर्ष किया?

A. चंद्रशेखर आजाद

B. रामप्रसाद विस्मिल

C. शहादत खान

D. माखनलाल चतुर्वेदी

© Dr. Amit Kumar Singh

आजादी की पहली लडाई 1857 में किसने भाग नहीं लिया

A. तात्या टोपे

B. रानी लक्ष्मीबाई

C. बहादुरशाह जफर

D. भगत सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

आजादी की पहली लडाई 1857 में किसने भाग नहीं लिया

A. तात्या टोपे

B. रानी लक्ष्मीबाई

C. बहादुरशाह जफर

D. भगत सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

अधोलिखित में से 1857 के किस नेता के सिर पर 50,000 का इनाम था?

A. नाना साहेब

B. तात्या टोपे

C. फैजाबाद का मौलवी

D. कुंवर सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

अधोलिखित में से 1857 के किस नेता के सिर पर 50,000 का इनाम था?

A. नाना साहेब

B. तात्या टोपे

© Dr. Amit Kumar Singh

C. फैजाबाद का मौलवी

D. कुंवर सिंह

निम्नलिखित में कौन-सा आयोग 1857 के विद्रोह के दमन के बाद भारतीय फौज के नव संगठन से संबंधित है?

A. पब्लिक सर्विस आयोग

B. पील आयोग

C. हंटर आयोग

D. साइमन कमीशन

© Dr. Amit Kumar Singh

निम्नलिखित में कौन-सा आयोग 1857 के विद्रोह के दमन के बाद भारतीय फौज के नव संगठन से संबंधित है?

A. पब्लिक सर्विस आयोग

B. पील आयोग

C. हंटर आयोग

D. साइमन कमीशन

© Dr. Amit Kumar Singh

निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का सबसे कट्टर दुश्मन था?

A. मौलवी अहमदुल्लाह शाह

B. मौलवी इंदादुल्लाह

C. मौलाना फज्लेहक खैराबादी

D. नवाब लियाकत अली

© Dr. Amit Kumar Singh

निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का सबसे कट्टर दुश्मन था?

A. मौलवी अहमदुल्लाह शाह

B. मौलवी इंदादुल्लाह

C. मौलाना फज्लेहक खैराबादी

D. नवाब लियाकत अली

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 के विद्रोह को किस उर्दू कवि ने देखा था?

A. मीर तकी मीर

B. जोक

C. गालिब

D. इकबाल

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 के विद्रोह को किस उर्दू कवि ने देखा था?

A. मीर तकी मीर

B. जोक

C. गालिब

D. इकबाल

© Dr. Amit Kumar Singh

'सैनिक विद्रोह का आधुनिक स्वतंत्रता के लिए प्रथम प्रयास कहना वस्तुतः अराजकतावाद है। राजनीतिक दृष्टि से यह वस्तुतः पुराने रूढ़िवादी भारत का अंतिम प्रयास था।' 1857 के विद्रोह के बारे में उपर्युक्त कथन किसका है?

© Dr. Amit Kumar Singh

A. डॉ० ताराचन्द्र

B. पर्सिविल स्पीयर

C. जी. वी. मेलसेन

D. विपिन चन्द्र

'सैनिक विद्रोह का आधुनिक स्वतंत्रता के लिए प्रथम प्रयास कहना वस्तुतः अराजकतावाद है। राजनीतिक दृष्टि से यह वस्तुतः पुराने रूढ़िवादी भारत का अंतिम प्रयास था।' 1857 के विद्रोह के बारे में उपर्युक्त कथन किसका है?

© Dr. Amit Kumar Singh

A. डॉ० ताराचन्द्र

B. पर्सिविल स्पीयर

C. जी. वी. मेलसेन

D. विपिन चन्द्र

सुप्रसिद्ध उर्दूशायर मिर्जा गालिब का मूल निवास था-

A. आगरा

B. दिल्ली

C. लाहौर

D. लखनऊ

© Dr. Amit Kumar Singh

सुप्रसिद्ध उर्दूशायर मिर्जा गालिब का मूल निवास था-

A. आगरा

B. दिल्ली

C. लाहौर

D. लखनऊ

© Dr. Amit Kumar Singh

अंग्रेजी भारतीय सेना में चर्बी वाले कारतूसों से चलने वाली एनफील्ड राइफल कब शामिल की गई?

A. नंवबर, 1856

B. दिसंबर, 1856

C. जनवरी, 1857

D. फरवरी, 1857

© Dr. Amit Kumar Singh

अंग्रेजी भारतीय सेना में चर्बी वाले कारतूसों से चलने वाली एनफील्ड राइफल कब शामिल की गई?

A. नंवबर, 1856

B. दिसंबर, 1856

C. जनवरी, 1857

D. फरवरी, 1857

© Dr. Amit Kumar Singh

कुंवर सिंह, 1857 के विद्रोह के एक प्रमुख नायक थे। वह निम्नलिखित में से किससे संबद्ध थे?

A. बिहार

B. मध्य प्रदेश

C. राजस्थान

D. उत्तर प्रदेश

© Dr. Amit Kumar Singh

कुंवर सिंह, 1857 के विद्रोह के एक प्रमुख नायक थे। वह निम्नलिखित में से किससे संबद्ध थे?

A. बिहार

B. मध्य प्रदेश

C. राजस्थान

D. उत्तर प्रदेश

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 में किसने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था?

A. लॉर्ड कैनिंग

B. लॉर्ड कार्नवालिस

C. लॉर्ड वेलेजली

D. लॉर्ड विलियम बेंटिक

© Dr. Amit Kumar Singh

1857 में किसने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था?

A. लॉर्ड कैनिंग

B. लॉर्ड कार्नवालिस

C. लॉर्ड वेलेजली

D. लॉर्ड विलियम बेंटिक

© Dr. Amit Kumar Singh

वर्ष 1857 के विद्रोह के संदर्भ में निम्नलिखित में से किसे उसके मित्र ने धोखा दिया, तथा जिसे अंग्रेजों द्वारा बंदी बनाकर मार दिया गया?

A. नाना साहब

B. कुंवर सिंह

C. खान बहादुर खान

D. तात्या टोपे

© Dr. Amit Kumar Singh

वर्ष 1857 के विद्रोह के संदर्भ में निम्नलिखित में से किसे उसके मित्र ने धोखा दिया, तथा जिसे अंग्रेजों द्वारा बंदी बनाकर मार दिया गया?

A. नाना साहब

B. कुंवर सिंह

C. खान बहादुर खान

D. तात्या टोपे

© Dr. Amit Kumar Singh

unacademy

I ENJOYED TEACHING EACH AND EVERY MOMENT OF THE CLASS

Thank you!



unacademy

धन्यवादम्

